

**International Peer-Reviewed Referred Journal**

**ISSN : 2321 : 2160**

**Impact Factor : 5.4**

# **AYUDH**

**Vol-11**

**December - 2024**

**Guest Editor**  
**Dr. Kumarpal Parmar**

ISSN : 2321-2160

# Ayudh

International Peer-Reviewed Refereed Journal

Special Issue

Volume-11

December-2024

Editor in Chief: Mr. Rohit Parmar

Guest Editor: Dr. Kumarpal Parmar

International Conference

on

Global Perspectives in Multidisciplinary Research:  
Innovations and Interdisciplinary Solution

Held on  
29-12-2024, Sunday

Organized by

Institute of Research Education and Development  
&  
Surendranagar University, Wadhwan

✧ Review Committee ✧

**Dr. Dineshbhai P. Machhi**

Principal

C. & S.H. Desai Arts and L.K.L. Doshi Commerce College, Balasinor

**Dr. Munjal Bhimdadkar**

Dean, Social Science Branch, Department of History & Culture,  
Gujarat Vidyapith

**Dr. Hareshkumar M. Patel**

Professor and Head

Shri K.H. Patel M.Ed. Institute, Modasa

**Dr. Sandipgiri Goswami**

I/c. Principal,

Sardar Patel Secondary School, Borsad

**Dr. Dhaval Vyas**

Director (IQAC), Professor (CSA)

Surendranagar University, Wadhwan

**Dr. Himadri Sarkar**

Associate Professor- Hindi

Surendranagar University, Wadhwan

**Dr. Mahipatbhai G. Govindiya**

Assistant Professor- Political Science

Surendranagar University, Wadhwan

**Dr. Dinesh Gohil**

Assistant Professor- Gujarati

Surendranagar University, Wadhwan

**Ms. Bhavika Kadikar**

Librarian, Surendranagar University, Wadhwan

## Index

1.	भारतीय न्याय प्रणाली: याज्ञवल्क्य स्मृतिऔर वर्तमान न्याय प्रणाली दिव्याबेन पटेल.....	1
2.	સજીવ ખેતીની જરૂરિયાત અને ફાયદાઓ ડૉ. જયોતિ આર. વિશ્વકર્મા.....	5
3.	Awakening the Soul of a Nation: The Ram Janmabhoomi Mandir and the Resurgence of Dharma Niyati Vikrant Pandya & Dr. Parag Sanghani.....	9
4.	આણંદ જિલ્લામાં મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકો અને પ્રાઈમરી વિભાગમાં અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકોનો ભાવાત્મક બુદ્ધિ નો તુલનાત્મક અભ્યાસ Fulare Payalben Amarsingh & Dr. Gangaben D. Patel.....	15
5.	Exploring the Neurobiological Mechanisms of Preksha Meditation: Impacts on Stress Regulation, Anxiety Reduction, and Cognitive Enhancement Ved Prakash Saini & Prof. Dinanath Sharma.....	22
6.	Bridging the Gap from Residential Care of Erstwhile Orphans to Accommodation in the Society: A Humanitarian View on Their Social Reintegration Harshada Rajput.....	27
7.	ભારતના સ્વાતંત્ર્ય સેનાની ઉદૈયા ચમાર, માતાદિન વાલ્મીકિ અને બાંકે ચમાર ચાવડા જયસુખ કરસનભાઈ.....	32
8.	મહિલા એવં મહિલા સશક્તિકરણ Patel Hasmitababen Vallabhbhai.....	36
9.	Exploring Eco-criticism in "The Animal's People" by Indra Sinha Dr. Kalpeshkumar H. Solanki.....	39
10.	The Role of Mobile Libraries in Supporting Distance Education Students Hiteshbhai M. Panara, Ketanbhai P. Patel & Dr. B. J. Ankuya.....	45
11.	Phishing and Identity Theft: Legal Measures and Prevention Strategies Dr. Vijaysinh G. Sodha.....	50
12.	Impact of Indian Drama Tradition on Nagamandala of Girish Karnad: A Critical Study Ambar Pandya & Dr. Paresh Jotangiya.....	54
13.	મનુષ્યજીવન અને કર્મ સિદ્ધાંત : નરસિંહ મહેતાનાં પદોમાં રજૂ થતો કર્મસિદ્ધાંત - એક સમીક્ષા Bhaveshkumar Kiritkumar Thakar.....	58

14.	<b>The Role of NGOs and Civil Society in Combating Land Grabbing in India</b> <b>Mr. Nishant Pravinbhai Vala.....</b>	<b>61</b>
15.	<b>The Role of Digital Libraries in Modern Education</b> <b>Mehulbhai B. Jani.....</b>	<b>65</b>
16.	<b>आर्थिक विकास : मुद्दे और चुनौतियों के संदर्भ में आंबेडकरवाद</b> <b>Dr. Shaileshkumar Chhatrasinh Chaudhari.....</b>	<b>69</b>
17.	<b>Understanding the Two Hawks: A Comparative Analysis of Hughes' <i>Hawk Roosting</i> and Daruwala's <i>Hawk</i></b> <b>Saurabh Chauhan H. ....</b>	<b>73</b>
18.	<b>हिन्दी साहित्य का इतिहास</b> <b>चेतना आर. पाडवी.....</b>	<b>78</b>
19.	<b>FEMINIST PERSPECTIVE: AN ANALYSIS OF MEENA KANDASAMY'S 'WHEN I HIT YOU', and SHASHI DESHPANDE'S 'THAT LONG SILENCE'.</b> <b>LAKSHITA THAKUR.....</b>	<b>81</b>
20.	<b>गांधीમાર્ગના ગરવા યાત્રી : નારાયણ દેસાઈ</b> <b>માયાબેન સવજીભાઈ ડાંગર.....</b>	<b>85</b>
21.	<b>ગુજરાતી નવલકથા સાહિત્ય</b> <b>સેજલ મકવાણા.....</b>	<b>89</b>
22.	<b>શિક્ષકોની સાંવેગિક બુદ્ધિ: પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના લિંગ, અનુભવ અને શાળાના પ્રકારના આધાર પર એક અભ્યાસ</b> <b>Gadhavi Varsha Chandrashing.....</b>	<b>92</b>
23.	<b>સ્વ-નિર્ભર ભારત માટે મહિલાઓનું સશક્તિકરણ: સામાજિક-રાજકીય વિકાસ પહેલમાં સક્રિય ભાગીદારીને પ્રોત્સાહન</b> <b>Namrataben Laxmanbhai Detroja.....</b>	<b>97</b>
24.	<b>A study of effect of sports specific training on physiological and performance related reaction time of male cricket players</b> <b>Prof. Dr. Kirit Roy.....</b>	<b>103</b>
25.	<b>ગુજરાત રાજ્યના અમદાવાદ જિલ્લાના માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓનો સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા અને માનસિક સ્વાસ્થ્યને અભ્યાસ</b> <b>દર્શના ચાવડા.....</b>	<b>108</b>

## भारतीय न्याय प्रणाली: याज्ञवल्क्य स्मृति और वर्तमान न्याय प्रणाली

दिव्याबेन पटेल

श्री. पी. के. कोठावाला आर्ट्स कोलेज, पाटन

न्याय, समाज का आधारभूत स्तंभ है। यह न केवल समाज में अनुशासन बनाए रखता है, बल्कि व्यक्ति और समाज के अधिकारों की रक्षा भी करता है। भारतीय न्याय प्रणाली का विकास एक समृद्ध और बहुआयामी परंपरा से हुआ है, जिसमें प्राचीन धर्मशास्त्र, स्मृतियाँ, और आधुनिक संवैधानिक मूल्य शामिल हैं। यह लेख प्राचीन भारतीय न्याय प्रणाली, विशेष रूप से याज्ञवल्क्य स्मृति, और आधुनिक भारतीय न्याय व्यवस्था की तुलना करते हुए दोनों के समन्वय पर केंद्रित है।

### प्राचीन भारतीय न्याय प्रणाली: याज्ञवल्क्य स्मृति का दृष्टिकोण

याज्ञवल्क्य स्मृति भारतीय न्यायशास्त्र का एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसमें समाज, धर्म और न्याय के आदर्शों का विस्तृत विवरण मिलता है। यह न्याय को धर्म का पर्याय मानते हुए समाज में शांति और संतुलन बनाए रखने का मार्गदर्शन करता है।

### न्यायाधीश की भूमिका और गुण

याज्ञवल्क्य ने न्यायाधीश को समाज का केंद्रबिंदु माना है। उनके अनुसार न्यायाधीश का कर्तव्य केवल विधिक निर्णय लेना नहीं है, बल्कि समाज में नैतिकता, धर्म और सत्य की स्थापना करना भी है।

#### • न्यायाधीश के गुण:

- सत्यवादी और धर्मज्ञ होना चाहिए।
- क्रोध, लोभ और पक्षपात से मुक्त होना चाहिए।
- समाज की भलाई के प्रति समर्पित रहना चाहिए।

#### • न्यायाधीश का चयन:

राजा द्वारा न्यायाधीश नियुक्त किए जाते थे। उनकी नियुक्ति का आधार उनकी विद्वता, धर्मशास्त्र की समझ, और सामाजिक संतुलन स्थापित करने की क्षमता थी।

### प्राचीन न्यायालयों की संरचना

याज्ञवल्क्य स्मृति में न्यायालयों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया था:

1. **प्रतिष्ठित न्यायालय:** स्थायी न्यायालय, जो ग्राम या नगर में स्थापित रहते थे।
2. **अप्रतिष्ठित न्यायालय:** चलायमान न्यायालय, जो स्थान-स्थान पर जाकर निर्णय देते थे।
3. **मुद्रित न्यायालय:** राजा के नियंत्रण में कार्य करने वाले न्यायालय।
4. **शासित न्यायालय:** ऐसे न्यायालय, जहाँ राजा स्वयं निर्णय करता था।

इसके अतिरिक्त, सामाजिक स्तर पर "कुल," "श्रेणी," "गण," और "पुग" जैसे संघ आधारित न्यायालय भी स्थापित थे।

### न्याय का उद्देश्य

याज्ञवल्क्य स्मृति में न्याय का उद्देश्य केवल विवादों का समाधान करना नहीं था। यह समाज में धर्म, सत्य और सामूहिक कल्याण को बढ़ावा देने का माध्यम भी था।

### आधुनिक भारतीय न्याय प्रणाली: संवैधानिक आधार

भारत का वर्तमान न्यायिक ढांचा, संविधान द्वारा परिभाषित, एक स्वतंत्र, निष्पक्ष, और धर्मनिरपेक्ष प्रणाली है। यह न्याय, समानता और मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए कार्य करता है।

### न्यायालयों की संरचना

आधुनिक न्याय प्रणाली तीन स्तरीय है:

1. **सर्वोच्च न्यायालय:** भारतीय न्यायपालिका का सर्वोच्च निकाय।

2. उच्च न्यायालय: राज्य स्तर पर कार्यरत।
3. अधीनस्थ न्यायालय: जिला और अन्य निचले स्तर के न्यायालय।

#### न्यायाधीश की नियुक्ति

न्यायाधीशों की नियुक्ति संविधान और कानूनी प्रावधानों के तहत होती है।

1. सर्वोच्च और उच्च न्यायालय:
  - नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा कॉलेजियम प्रणाली की सिफारिश पर की जाती है।
  - योग्यता: वकालत का अनुभव या न्यायिक सेवा का विस्तृत अनुभव।
2. अधीनस्थ न्यायालय:
  - राज्य न्यायिक सेवा परीक्षाओं (PCS-J) के माध्यम से नियुक्ति होती है।
  - यह प्रक्रिया अधिक औपचारिक और प्रतिस्पर्धात्मक है।

#### न्यायाधीश के गुण और कर्तव्य

- न्यायाधीश का कर्तव्य निष्पक्ष और विधिक आधार पर निर्णय लेना है।
- संवैधानिक मूल्यों और मानव अधिकारों की रक्षा करना।
- न्याय प्रणाली में जनता का विश्वास बनाए रखना।

#### न्यायिक स्वतंत्रता और अनुशासन

आधुनिक न्याय प्रणाली में न्यायाधीश पूरी तरह स्वतंत्र हैं, लेकिन वे अनुशासन और नैतिकता के कठोर मानकों का पालन करते हैं।

#### प्राचीन और आधुनिक न्याय प्रणाली की तुलना

पहलू	प्राचीन प्रणाली (याज्ञवल्क्य स्मृति)	आधुनिक प्रणाली
धार्मिक आधार	न्याय धर्म और नैतिकता पर आधारित था।	धर्मनिरपेक्ष प्रणाली, संविधान और कानून पर आधारित।
न्यायाधीश की नियुक्ति	राजा द्वारा धर्मज्ञ और विद्वान व्यक्ति का चयन।	संवैधानिक प्रक्रिया के तहत नियुक्ति।
न्यायालय की संरचना	स्थायी, चलायमान, मुद्रित, और शासित न्यायालय।	तीन स्तरीय संरचना: सर्वोच्च, उच्च, और अधीनस्थ न्यायालय।
उद्देश्य	धर्म, सत्य, और सामाजिक संतुलन को बढ़ावा देना।	मौलिक अधिकारों की रक्षा और कानून का पालन सुनिश्चित करना।
प्रक्रिया	साक्ष्य, धर्म, और सामाजिक नियमों पर आधारित।	लिखित संविधान, कानूनी प्रावधान, और न्यायिक मिसाल।
स्वतंत्रता	राजा और धर्मशास्त्र के प्रभाव में।	स्वतंत्र और निष्पक्ष।

#### समन्वय: प्राचीन और आधुनिक न्याय प्रणाली के मूलभूत मूल्य

हालांकि प्राचीन और आधुनिक न्याय प्रणाली में संरचना और प्रक्रिया में भिन्नता है, लेकिन दोनों का उद्देश्य समाज में न्याय, शांति और सामूहिक कल्याण सुनिश्चित करना है।

**1. धर्म और संविधान का महत्व:**

याज्ञवल्क्य स्मृति में न्याय धर्म पर आधारित था, जो समाज के नैतिक और धार्मिक संतुलन को बनाए रखता था। आधुनिक न्याय प्रणाली धर्मनिरपेक्ष है, लेकिन इसका मूल आधार संविधान के सिद्धांत हैं, जो समानता, स्वतंत्रता, और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देते हैं।

**2. न्यायाधीश की नैतिकता और निष्पक्षता:**

प्राचीन प्रणाली में न्यायाधीश का चयन उसकी नैतिकता और धर्मज्ञान के आधार पर होता था। आधुनिक न्याय प्रणाली में न्यायाधीशों से भी उच्च नैतिक मानदंडों का पालन अपेक्षित है।

**3. न्याय का उद्देश्य:**

दोनों प्रणालियों का उद्देश्य समाज में शांति, सुरक्षा और संतुलन स्थापित करना है। याज्ञवल्क्य स्मृति ने इसे धर्म और सत्य के माध्यम से परिभाषित किया, जबकि आधुनिक प्रणाली इसे कानून और संविधान के माध्यम से परिभाषित करती है।

**4. समाज के लिए न्याय:**

प्राचीन न्याय प्रणाली सामूहिक कल्याण पर केंद्रित थी, जहां न्याय समाज और धर्म के लिए होता था। आधुनिक न्याय प्रणाली में व्यक्ति के अधिकारों पर जोर दिया गया है, लेकिन यह भी समाज के हित को ध्यान में रखती है।

**आधुनिक न्याय प्रणाली के सामने चुनौतियां****1. मामलों का लंबित रहना:**

करोड़ों मामले अदालतों में लंबित हैं, जिससे न्याय में देरी होती है।

**2. पारदर्शिता:**

कॉलेजियम प्रणाली और न्यायिक नियुक्तियों में पारदर्शिता की कमी पर सवाल उठते हैं।

**3. ढांचा और संसाधन:**

अधीनस्थ न्यायालयों में बुनियादी सुविधाओं की कमी है।

**4. न्यायिक अतिक्रमण:**

कार्यपालिका और विधायिका के क्षेत्र में न्यायपालिका के हस्तक्षेप को लेकर आलोचना होती है।

**समाधान: प्राचीन ज्ञान का उपयोग**

प्राचीन न्याय व्यवस्था से प्रेरणा लेते हुए, आधुनिक प्रणाली को निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए:

**1. न्यायाधीशों का नैतिक प्रशिक्षण:**

याज्ञवल्क्य स्मृति की तरह न्यायाधीशों को नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रशिक्षण देना।

**2. सामूहिक कल्याण पर ध्यान:**

केवल व्यक्तिगत अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय समाज के सामूहिक हित को प्राथमिकता देना।

**3. सरल और तेज प्रक्रिया:**

प्राचीन न्याय प्रणाली की तरह, विवादों का समाधान सरल और तेज होना चाहिए।

**4. स्थानीय न्यायालयों को सशक्त बनाना:**

याज्ञवल्क्य स्मृति के कुल, श्रेणी, गण, और पुग न्यायालयों की तरह स्थानीय न्यायालयों को अधिक शक्तियां और स्वायत्तता प्रदान करना।



## निष्कर्ष

भारतीय न्याय प्रणाली एक ऐसी समृद्ध परंपरा पर आधारित है, जो प्राचीन धर्मशास्त्र और आधुनिक संवैधानिक मूल्यों का सम्मिश्रण है। याज्ञवल्क्य स्मृति ने समाज में नैतिकता, सत्य, और धर्म की स्थापना के लिए मार्गदर्शन दिया, जबकि आधुनिक न्याय प्रणाली समानता, स्वतंत्रता, और मानवाधिकारों पर जोर देती है।

दोनों प्रणालियों के मूल उद्देश्य – न्याय और समाज की भलाई – समान हैं। आवश्यकता है कि हम प्राचीन न्याय प्रणाली की नैतिकता और सामाजिक दृष्टिकोण से प्रेरणा लेकर आधुनिक प्रणाली में सुधार करें, ताकि यह न केवल समय पर न्याय दे सके, बल्कि समाज के लिए अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी हो।

इस लेख के लिए उपयोग की गई जानकारी और संदर्भ निम्नलिखित हैं:

## संदर्भ:

- पुस्तक संदर्भ: "याज्ञवल्क्य स्मृति," लेखक: गोपीनाथ कविराज
  - "धर्मशास्त्रीय दण्डसंहिता" लेखक: डॉ दिव्याभारती
  - "याज्ञवल्क्य स्मृति का समीक्षात्मक अध्ययन", लेखक: उषा गुप्ता, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली -७
  - "वैदिक साहित्य का इतिहास", लेखक: प्रो पारसनाथ द्विवेदी
  - "मनुस्मृति," "कौटिल्य अर्थशास्त्र," और अन्य प्राचीन ग्रंथों का उल्लेख न्यायिक व्यवस्थाओं में मिलता है।
1. **भारतीय संविधान (1950)**
    - सर्वोच्च और उच्च न्यायालयों की संरचना, शक्तियां, और कार्यक्षेत्र का विवरण।
    - अनुच्छेद 124-147: सर्वोच्च न्यायालय से संबंधित।
    - अनुच्छेद 214-231: उच्च न्यायालय से संबंधित।
  2. **न्यायाधीश नियुक्ति प्रक्रिया:**
    - भारतीय कानून पर आधारित पुस्तकें:
      - "Constitutional Law of India" – लेखक: एम.पी. जैन।
    - सुप्रीम कोर्ट और विधि आयोग की रिपोर्ट्स

## સજીવ ખેતીની જરૂરિયાત અને ફાયદાઓ

ડૉ. જ્યોતિ આર. વિશ્વકર્મા

આસિ. પ્રોફેસર- અર્થશાસ્ત્ર

કવિશ્રી બોટાદકર આર્ટ્સ એન્ડ કોમર્સ કોલેજ, બોટાદ

### અમૂર્ત :-

ખાદ્યપદાર્થોની ગુણવત્તા અને સલામતી એવા અગત્યના પરિબળો છે જેણે સામાન્ય ગ્રાહકોનું પણ સતત વધારે ધ્યાન આકર્ષિત કર્યું છે. પરંપરાગત રીતે ઉગાડવામાં આવતા ખોરાકમાં ઉચ્ચ જંતુનાશક અવશેષો, વધુ નાઈટ્રેટ, ભારે ધાતુઓ, હોર્મોન્સ, એન્ટિબાયોટિક અવશેષો અને આનુવંશિક રીતે સંશોધિત સજીવો હોવાને લીધે આરોગ્ય પર તેની વિપરીત અસરો પડે છે. તેમજ પરંપરાગત રીતે ઉગાડવામાં આવતા ખોરાક ઓછા પૌષ્ટિક હોય છે અને તેમાં રક્ષણાત્મક એન્ટીઓક્સિડન્ટોની ઓછી માત્રા હોય છે. વર્તમાનમાં સલામત ખોરાકની શોધમાં સજીવ રીતે ઉગાડવામાં આવતા ખોરાકની માંગ તેમના સંભવિત સ્વાસ્થ્ય લાભો અને ખાદ્ય સુરક્ષાની ચિંતાઓને કારણે ખુબજ વધી ગઈ છે. જૈવિક ખાદ્ય ઉત્પાદનને રાસાયણિક ખાતરો, કૃત્રિમ જંતુનાશકો અથવા આનુવંશિક રીતે સંશોધિત સજીવોનો ઉપયોગ કર્યા વગર ખેતી તરીકે ઓળખવામાં આવે છે. સજીવ રીતે ઉગાડવામાં આવતા ખાદ્યપદાર્થોની લોકપ્રિયતા તેમના પોષણ મુલ્યો અને સ્વાસ્થ્ય લાભોને કારણે સતત વધી રહી છે. સજીવ ખેતી પર્યાવરણનું પણ રક્ષણ કરે છે અને રાષ્ટ્ર પર વધુ સામાજિક-આર્થિક અસર કરે છે. ભારત ઘણા કારણોસર સજીવ ખેતી અપનાવવામાં ઘણું પાછળ હતું, પરંતુ વર્તમાનમાં તેણે સજીવ ખેતીમાં ઝડપી વૃદ્ધિ કરી છે અને હવે તે વિશ્વના સૌથી મોટા સજીવ ઉત્પાદકોમાંનું એક બની ગયું છે. આ પેરમાં સજીવ ખેતીની જરૂરિયાત અને તેના ફાયદાઓની સમજૂતી આપવામાં આવેલ છે.

ચાવીરૂપ શબ્દો :- સજીવ ખેતી, કાર્બનિક, ઉત્પાદન, ખાદ્ય પદાર્થો, આરોગ્ય, પર્યાવરણ

### પ્રસ્તાવના

ખેતી ક્ષેત્રે ઉત્પાદન વધારવા માટે ઉપયોગમાં લેવામાં આવતા રાસાયણિક ખાતરો અને જંતુનાશક દવાઓ ખુબજ હાનિકારક છે. ભારતમાં 1965-66 ના વર્ષથી હરિયાણી ક્રાંતિની શરૂઆત થઈ છે અને ખેતીમાં જે વિકાસ થયો છે તેમાં રાસાયણિક ખાતરો અને જંતુનાશક દવાઓ ઉપર વધારે આધાર રાખવામાં આવેલ. તેથી ખેતીના ટકાઉપણા કરતા ખેત ઉત્પાદન વધારવા પર વધારે ધ્યાન આપવામાં આવેલ. એક તબક્કે રાસાયણિક ખાતરોનો ઉપયોગ કરવાથી ખેતરોમાં શરૂઆતમાં તો ઉત્પાદન સારું મળે છે પણ ત્યારબાદ તેની આડઅસરો વધતી જતી હોવાથી ખેતરોમાં ઉત્પાદન ઘણું ઓછું મળતું થઈ જાય છે, જો રાસાયણિક ખાતરની જગ્યાએ આર્ગેનિક ખાતરોનો ઉપયોગ કરવામાં આવે તો ખેતરોમાં ઉત્પાદન તો વધે છે, પરંતુ આ ખાતરોની ખેતરોમાં કોઈ આડઅસર થતી નથી.

### સજીવ ખેતી ની જરૂરિયાત :-

ઘણા વર્ષોથી વધતી જતી વસ્તીની જરૂરિયાતોને પૂરી કરવા માટે ખેડૂતો દ્વારા વધારે ઉત્પાદન મેળવવા જમીન અને પર્યાવરણ પર થતી આડઅસરને ધ્યાનમાં લીધા વગર રાસાયણિક ખાતરો, જંતુનાશકો દવાઓનો વધુ પડતો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે. જેના કારણે જમીનની ફળદ્રુપતા અને ઉત્પાદન ક્ષમતામાં ઘટાડો થયો છે. આ ખેત ઉત્પાદનોના ઉપયોગ કરવાથી માણસો, પક્ષીઓ અને પ્રાણીઓના સ્વાસ્થ્ય પર પ્રતિકુળ અસર પડી છે. ઉપરોક્ત કારણોના લીધે સજીવ ખેતીની જરૂરિયાત ઉભી થઈ છે. સજીવ ખેતીમાં રાસાયણિક ખાતરો, જંતુનાશકો દવાઓ વગેરેનો ઉપયોગ કરવામાં આવતો નથી. તેથી સજીવ ખેતી માણસો, પક્ષીઓ, પ્રાણીઓ અને પર્યાવરણને અનુકુળ હોય છે. આમ જમીનની ફળદ્રુપતા વધારવા, માટી, પાણી અને વાયુ

પ્રદૂષણને રોકવા જૈવ વ્યવસ્થાને બચાવવા માટે, શાશ્વત વિકાસને પ્રોત્સાહન આપવા માટે, ઓછા ખર્ચે, તેમજ ખોરાકની સલામતીને કારણે સજીવ ખેતીની જરૂરિયાત ઉભી થઈ છે.

**સજીવ ખેતીનો અર્થ અને વ્યાખ્યા :-**

દેશી ખેતીનો સુધારેલ પ્રકાર જ સજીવ ખેતી છે. પ્રકૃતિ અને પર્યાવરણને સંતુલિત કરી રાસાયણિક ખાતર, જંતુનાશક દવાઓ અને હાઈબ્રીડ બિયારણોના વપરાશ વગર ખેતરોમાં છાણીયુ ખાતર, કોમ્પોસ્ટ ખાતર, જૈવિક ખાતર, પાકના અવશેષો અને કુદરતી સ્ત્રોતોનો ઉપયોગ કરી, પાકની ફેરબદલી કરી, એકબીજા પર આધારિત સજીવોનો ઉપયોગ કરી, નિંદામણ, પાક રોગો અને પાકને નુકશાનકારક જીવાતોથી બચાવવામાં આવે છે. સજીવ ખેતીથી ટકાઉ પાક ઉત્પાદકતા મળે છે. તેમજ જમીનની ઉત્પાદકતા વધે છે અને સલામત અને પોષણયુક્ત સ્વાદિષ્ટ ઓર્ગેનિક ખોરાક મળે છે.

ઈન્ટરનેશનલ ફેડરેશન ઓફ એગ્રીકલ્ચર મુવમેન્ટસ (IFOAM) દ્વારા સજીવ ખેતી વિષે આપેલી વ્યાખ્યા નીચે પ્રમાણે છે :

“ સજીવ ખેતી એ ઉત્પાદનની એવી પદ્ધતિ છે કે જે જમીન , પર્યાવરણ અને લોકોના આરોગ્યને ટકાવે છે. તે સ્થાનિક રીતે સ્વીકૃત પર્યાવરણીય પ્રક્રિયાઓ જૈવ વૈવિધ્ય અને ચક્રો પર આધાર રાખે છે, નહિ કે વિપરીત અસરો ઉત્પન્ન કરતા સાધનોના ઉપયોગ ઉપર. સજીવ ખેતીમાં પરંપરા નવપ્રવર્તન અને વિજ્ઞાનનું એવું સંયોજન છે કે જે સહિયારા પર્યાવરણ માટે લાભદાયી છે તથા તે તેમાં સામેલ સૌના માટે ન્યાયી સંબંધો અને જીવનની સારી ગુણવત્તાને પ્રોત્સાહન આપે છે.”

ભારતમાં સજીવ ખેતીના મુખ્ય હેતુઓ ખેતીમાં ટકાઉપણું, ખેતી ક્ષેત્રે ઉત્પાદનમાં વધારો કરી અનાજની બાબતમાં સ્વાવલંબન મેળવવું , પર્યાવરણનું રક્ષણ કરી પ્રાકૃતિક સંસાધનોનું જતન કરવું અને ગ્રામીણ ક્ષેત્રનો વિકાસ કરવો છે.

**સજીવ ખેતીના ફાયદાઓ:**

#### 1 પોષકલાભો અને આરોગ્યની સલામતી :

પરંપરાગત રીતે ઉગાડવામાં આવતા ખોરાકની સરખામણીમાં સજીવ રીતે ઉગાડવામાં આવતી ચીજોમાં પોષણ મૂલ્ય પ્રમાણમાં વધુ હોય છે અને સજીવ ખેતીથી પેદા થતી ચીજો આહાર માટે આરોગ્યપ્રદ હોય છે. કાર્બનિક છોડમાં નોંધપાત્ર રીતે વધુ મેગ્નેશિયમ, આયર્ન અને ફોસ્ફરસ હોય છે. તેમાં મુખ્ય તત્વો તરીકે વધુ કેલ્શિયમ, સોડિયમ, પોટેશિયમ, મેંગેનીઝ, આયોડિન, કોમ્બિયમ, મોલીબ્ડેનમ, સેલેનિયમ, બોરોન, કોપર, વેનેડિયમ અને જસતાપણ હોય છે. સજીવ ખેતીથી ઉત્પાદિત ચીજોમાં આરોગ્યને નુકશાન કરતા તત્વોનું પ્રમાણ નહિવત હોય છે. તેથી કાર્બનિક ખોરાક વધુ સારા પોષક તત્વો અને આરોગ્ય સલામતીની ખાતરી આપે છે.

#### 2 જમીનની ગુણવત્તામાં વધારો :

સજીવ ખેતીનો આધાર જમીનની ગુણવત્તા પર હોય છે. સજીવ ખેતીમાં જમીનની ફળદ્રુપતાનો ધ્યાન રાખવામાં આવે છે. જેમ કે એક જ ખેતરમાં વિવિધ પ્રકારના પાક લેવામાં આવે છે. છાણિયા ખાતર અને જૈવિક જંતુનાશકોનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે. તેમજ જમીનનો ખેડાણ પણ ઓછું કરવામાં આવે છે. તેના લીધે જમીનમાં ભેજ અને જરૂરી પોષક તત્વોની જાણવણી થાય છે. જમીનની ગુણવત્તામાં સુધારો થાય છે અને જમીનની ફળદ્રુપતા પણ બની રહે છે.

#### 3 ઉત્પાદકતામાં વધારો :

સજીવ ખેતીથી ઉત્પાદકતા વધવાના કારણે ઉત્પાદનમાં પણ વધારો જોવા મળે છે. નાગપુરની સેન્ટ્રલ ઇન્સ્ટીટ્યુટ ફોર કોટન રિસર્ચ દ્વારા કરાયેલા પ્રયોગોથી જાણવા મળ્યું કે સજીવ ખેતી કરતા ખેતરોમાં કપાસના ઉત્પાદનમાં ત્રીજા વર્ષથી વધારો જોવા મળ્યો હતો. આવી જ રીતે ભારતમાં જૈવિક ખાતરોના વિકાસ અને ઉપયોગ વિશેની રાષ્ટ્રીય પરિયોજના અંતર્ગત વર્ષ 2003માં સજીવ ખેતી કરતા 1050 ખેતરોમાં પ્રયોગ કરવામાં આવેલ. તેના પરિણામોથી જાણવા મળે છે કે સજીવ ખેતીના કારણે બાગાયતી પાકોમાં 4% , ઘઉં અને શેરડીમાં 9% , શાકભાજીમાં 10%, તેલીબીયા અને ફૂલોમાં 14% અને તમાકુમાં 15% જેટલા ઉત્પાદનમાં વધારો નોંધાયો હતો.

**4 આવકમાં વધારો :**

સજીવખેતીના કારણે ઉત્પાદન વધતા ખેડૂતોની આવકમાં પણ વધારો થયો છે. કર્ણાટકના 5 જિલ્લાના 100 ખેડૂતોના અભ્યાસ પરથી જાણવા મળ્યું કે, સજીવ ખેતીથી ઉત્પાદન ખર્ચમાં 80 % જેટલો ઘટાડો નોંધાયેલ હતો. આવીજ રીતે હિમાચલ પ્રદેશના 100 સજીવ ખેતી કરતા ખેડૂતોના અભ્યાસ પરથી જાણવા મળ્યું કે મકાઈ અને ઘઉંના ઉત્પાદનમાં કુલ ખર્ચમાં ઘટાડો થયો હતો અને તેના કારણે ચોખ્ખી આવકમાં બે થી ત્રણ ગણો વધારો નોંધાયો હતો.

**5 રોજગારીમાં વધારો :**

ભારતમાં ખેતીક્ષેત્રમાં પ્રચ્છન્ન બેકારી જોવા મળે છે. સજીવ ખેતીમાં ઉત્પાદન કરવા માટે વધારે શ્રમિકોની જરૂર પડે છે. તેથી તે વધારે રોજગારની તકો પૂરી પાડે છે. આની સાથે જો સજીવ ખેતીમાં પાકની ફેરબદલી કરવામાં આવે અને વૈવિધ્યકરણ કરવામાં આવે તો રોજગાર વધવાની શક્યતાઓ પણ વધે છે.

ભારતમાં જૈવિકખેતી સાથે સંકળાયેલા મુખ્ય રાજ્યો ગુજરાત, કેરળ, કર્ણાટક, ઉત્તરાખંડ, સિક્કિમ, રાજસ્થાન, મહારાષ્ટ્ર, તમિલનાડુ, મધ્યપ્રદેશ અને હિમાચલ પ્રદેશ છે. 2016 માં સૌપ્રથમ વખત સિક્કિમમાં આર્ગેનિક ખેતીનો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો હતો. સિક્કિમને જૈવિક રાજ્યનો દરજ્જો આપવામાં આવ્યો છે. આર્ગેનિક ખેતીની મર્યાદાઓ અને પડકારોને ઘટાડવા માટે આર્ગેનિક ખેતી અને નવી ટેકનોલોજીનું મિશ્રણ અત્યંત મહત્વનું છે. નવીન પદ્ધતિઓ અને નવા અભિગમો ટકાઉ ખેતી પ્રણાલી તરફ નવા વલણોને સ્વીકારે છે અને કૃષિ ઉત્પાદકતા અને પર્યાવરણને અનુકૂળ બની ઘણા ખેડૂતોના જીવનની ગુણવત્તામાં વધારો કરે છે. બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો સજીવ ખેતી વૈશ્વિક કૃષિની ટકાઉપણાની વિભાવનાઓને પ્રતિબિંબિત કરે છે.

ભારત જેવા વિકાસશીલ દેશોમાં પણ સજીવ રીતે ઉગાડવામાં આવતા ઉત્પાદનોની માંગ વધુ છે કારણ કે લોકો હવે ખોરાકની સલામતી અને ગુણવત્તા વિશે વધુ જાગૃત થયા છે. કૃત્રિમ રીતે ઉત્પાદિત જંતુનાશકો અને રાસાયણિક ખાતરોનો પરંપરાગત ખેતીમાં ઉપયોગ થતો હોવાથી, પરંપરાગત રીતે ઉગાડવામાં આવતા ખોરાકનો વપરાશ નિરુત્સાહિત કરવામાં આવે છે અને આ કારણોસર જૈવિક ખેતીની લોકપ્રિયતા ધીમે ધીમે વધી રહી છે. સજીવ ખેતીમાં પણ આવક પેદા કરવાની અપાર સંભાવના છે. ભારતની જમીનમાં વિવિધ પ્રકારના કુદરતી રીતે ઉપલબ્ધ કાર્બનિક પોષક તત્વો અને સંસાધનો જે કાર્બનિક ખેતીમાં મદદ કરે છે.

લાંબા ગાળાની આર્થિક સધ્ધરતા માત્ર સજીવ ખેતી દ્વારા જ શક્ય બની શકે છે અને બજારમાં તેની વધુ કિંમતને કારણે જૈવિક ખેતી વધુ નફાકારક છે. પરંપરાગત ખેતીમાં જંતુનાશકો અને ખાતરોના ઉપયોગથી ઉત્પાદન ખર્ચમાં વધારો અને ખેડૂતના સ્વાસ્થ્ય પર તેની નકારાત્મક અસર સમુદાયના આર્થિક સંતુલનને અસર કરે છે અને તેનો લાભ ફક્ત આ જંતુનાશકોના ઉત્પાદકોને જ જાય છે. રાસાયણિક ખાતરો દ્વારા જમીનની ફળદ્રુપતામાં સતત ઘટાડો થવાથી ઉત્પાદનમાં ઘટાડો થાય છે અને તેથી ઉત્પાદન ખર્ચમાં વધારો થાય છે જે ખેતીને આર્થિક રીતે બિન ટકાઉ બનાવે છે. પરંતુ ખાદ્ય સુરક્ષા, ગ્રામીણ રોજગારીનું સર્જન, ગરીબી નાબૂદી, કુદરતી સંસાધનોનું સંરક્ષણ, નિકાસલક્ષી ઉત્પાદન પ્રણાલી, મજબૂત આંતરમાળખું, સરકારની સક્રિય ભાગીદારી અને ખાનગી - જાહેર ક્ષેત્રનો સમાવેશ કરતી વ્યૂહરચનાનું અમલીકરણ ટકાઉપણાની પુનઃપ્રાપ્તિ માટે મદદરૂપ થશે.

તાજેતરમાં, ભારત સરકારે દેશમાં જૈવિક ખેતીને વેગ આપવા માટે અનેક કાર્યક્રમો અને યોજનાઓ લાગુ કરી છે. જેમ કે મહત્વની યોજના (1) પરંપરાગત કૃષિ વિકાસ યોજના, (2) ઉત્તર પૂર્વીય ક્ષેત્ર યોજનામાં સજીવ મૂલ્ય સાંકળ વિકાસ, (3) રાષ્ટ્રીય કૃષિ વિકાસ યોજના, (4) બાગાયતના સંકલિત વિકાસ માટેનું મિશન (રાષ્ટ્રીય બાગાયત મિશન, ઉત્તર-પૂર્વ અને હિમાલયના રાજ્યો માટે બાગાયત મિશન, બામ્બુ મિશનવગેરે) ભારતીય પરંપરાગત ખેડૂતો તેમના જ્ઞાન, વ્યાપક અવલોકન, દ્રઢ મનોબળ અને જમીનની ફળદ્રુપતા જાળવવા માટેના અનુભવો અને જંતુ વ્યવસ્થાપનના કારણે વધુ આંતરદષ્ટિ ધરાવે છે. તેની અસરકારકતા ભારતમાં સજીવ ઉત્પાદન અને ત્યાર પછીની આર્થિક વૃદ્ધિમાં જોવા મળે છે. સજીવ ખેતીની પ્રગતિ ખૂબ જ પ્રશંસનીય છે. વર્તમાનમાં ભારત વિશ્વમાં સૌથી મોટું આર્ગેનિક ઉત્પાદક બન્યું છે.

સજીવ ખેતીથી વધુ પૌષ્ટિક અને સલામત ખોરાક મળે છે. તેની લોકપ્રિયતા સતત વધી રહી છે કારણ કે ઉપભોક્તા સજીવ ખાદ્યપદાર્થોને શોધે છે કારણ કે તેને સ્વાસ્થ્ય માટે તંદુરસ્ત અને સલામત હોવાનું માનવામાં આવે છે. આમ, સજીવ ખેતી ખાદ્ય સુરક્ષાને સુનિશ્ચિત કરે છે. સજીવ ખેતીની પ્રક્રિયા પરંપરાગત ખેતી કરતાં પર્યાવરણ માટે વધુ અનુકૂળ છે. સજીવ ખેતી જમીનને સ્વસ્થ રાખે છે અને પર્યાવરણની અખંડિતતાને જાળવી રાખે છે જેથી ગ્રાહકોના સ્વાસ્થ્યમાં સુધારો થાય છે. વર્તમાનમાં સજીવ પેદાશોના ઉત્પાદનનું બજાર હવે ભારત સહિત સમગ્ર વિશ્વમાં સૌથી ઝડપથી વિકાસ પામી રહ્યું છે. સજીવ ખેતી રાષ્ટ્રના ગ્રાહકોના સ્વાસ્થ્યને, રાષ્ટ્રના પર્યાવરણને અને સર્વાંગીણ રીતે આવક દ્વારા રાષ્ટ્રના આર્થિક વિકાસને પ્રોત્સાહન આપે છે. ભારતવર્તમાનમાં વિશ્વનું સૌથી મોટું ઓર્ગેનિક ઉત્પાદક દેશ છે તેના આધારે આ નિષ્કર્ષ પર આવી શકાય કે ભારતમાં સજીવ ખેતીને પ્રોત્સાહન આપવાથી નજીકના ભવિષ્યમાં પોષણ, પર્યાવરણીય અને આર્થિક રીતે સ્વસ્થ રાષ્ટ્રનું નિર્માણ થઈ શકે છે.

#### સંદર્ભ સૂચી :

1. શાહ, એચ. અને શાહ, એ. (2019). ભારતીય અર્થતંત્ર , વેદવ્યાસ વિદ્યાપીઠ, ગાંધીનગર
2. Batra, A. & Batra, V. (2023). Organic Farming in India: Evaluation, Current Status and Policy Perspectives, Space and Culture, India <http://doi.org/10.20896/saci.v11i2.1328>
3. પટેલ, એચ. (2016). સજીવ ખેતી માર્ગદર્શિકા, આત્મા પ્રોજેક્ટ, એગ્રીકલ્ચર ટેકનોલોજી મેનેજમેન્ટ એજન્સી (આત્મા) સાબરકાંઠા, હિમતનગર
4. પટેલ, એ. અને પાઘડાળ, એસ. (2020-21), ભારતીય અર્થતંત્ર, યુવા ઉપનિષદ પબ્લિકેશન, સુરત
5. <https://www.divyabhaskar.co.in/news/SPL-chemical-fertilizer-more-thaqa-benefit-organic-fertilizer-1422753.html>

## Awakening the Soul of a Nation: The Ram Janmabhoomi Mandir and the Resurgence of Dharma

<sup>1</sup>Niyati Vikrant Pandya | <sup>2</sup>Dr. Parag Sanghani  
<sup>1,2</sup> School of Management, P. P. Savani University, Surat – India

### Abstract:

For centuries, the Ram Janmabhoomi Mandir dispute in Ayodhya, Uttar Pradesh, has been a contentious nexus of religion and politics in India. Hindus revere the site as Lord Rama's birthplace, sparking a protracted legal and social battle with the Muslim community. The 1992 demolition of the Babri Masjid marked a tragic escalation. This paper delves into the historical roots, socio-political ramifications, and cultural weight of the Ram Janmabhoomi Mandir issue, situating it within the contemporary Indian context of Dharma (righteous duty) resurgence. By analysing historical accounts, legal arguments, and socio-cultural perspectives, the paper explores the intricate interplay of religious symbolism, nationalist fervour, and legal processes surrounding the Ram Mandir construction. Furthermore, it examines the 2019 Supreme Court verdict's implications, which facilitated temple construction while acknowledging religious pluralism and social harmony concerns. By examining the multifaceted nature of the Ram Janmabhoomi Mandir issue, this research offers a deeper understanding of religion's role in shaping India's national identity, political landscape, and social cohesion.

**Keywords:** Ram Janam Bhoomi, Ram Mandir, Ram, Sanatan Dharma, Hindu consciousness, Socio-political dynamics, Religious symbolism, Religious revivalism

### 1. Introduction:

In Hinduism, Dharma is a multifaceted and foundational concept underpinning the religion's moral, ethical, and spiritual framework. Its significance transcends mere adherence to rules and regulations; instead, it encompasses a holistic approach to righteous living, cosmic order, individual duties, and spiritual liberation. (Klostermaier, 2007) Dharma, derived from the Sanskrit root "dhr," roughly translates to the "right way of living" or "righteous duty." It encompasses a broad spectrum of moral principles, ethical conduct, and fulfilling one's obligations towards oneself, others, and the cosmos. (Sharma, 2011) Dharma is not merely a set of rules but also reflects the inherent cosmic order that governs the universe. It is akin to the natural laws guiding the world, maintaining balance, harmony, and cosmic equilibrium. Understanding and aligning with Dharma is essential for upholding the cosmic order and sustaining the harmony of existence. Dharma applies to both the individual and society at large. It prescribes the duties and responsibilities of individuals based on their caste, stage of life (ashrama) and social roles (varna). (Radhakrishnan, 1994) At the societal level, according to Bhagavad Gita, Dharma forms the foundation of social order, guiding relationships, governance, and societal norms. Following Dharma is paramount for leading a good and meaningful life in this world (bhuloka) and the next (paraloka). It is central to achieving spiritual liberation (moksha) and transcending the cycle of birth and death (samsara). Individuals attain inner peace, moral integrity, and spiritual fulfilment by adhering to Dharma.

### 2. Historical Background:

Ayodhya, situated in Uttar Pradesh, India, holds profound religious significance in Hinduism as the reputed birthplace of Lord Rama, a central deity in the Hindu epic Ramayana. The city has long been revered as a sacred pilgrimage site, drawing devotees from across the country who seek spiritual blessings and merit by visiting its temples and shrines.

Hindus have revered Ayodhya as the birthplace of Lord Rama since ancient times, and it was a prominent pilgrimage site for devotees. During the medieval period, the Mughal Emperor Babur constructed a mosque known as the Babri Masjid at the site in the 16th century. The mosque became a symbol of Islamic rule in India, while Hindus continued to assert their claim to the land as the birthplace of Lord Rama. In the 19th century, the issue gained political significance during British colonial rule, as Hindu and Muslim communities began to assert their respective claims over the site. The British administration attempted to maintain control over the disputed site by dividing it into separate sections for Hindu and Muslim worship.

Following India's independence in 1947 and the partition of British India into India and Pakistan, tensions between Hindu and Muslim communities escalated over the ownership of religious sites, including the Babri Masjid. In the 1980s, the Vishva Hindu Parishad (VHP) and other Hindu nationalist groups launched a campaign for the construction of a Ram Mandir at the site, igniting widespread religious fervour and communal tensions.

The dispute reached a critical point on December 6, 1992, when a large mob of Hindu activists, including members of the VHP and other right-wing organisations, demolished the Babri Masjid, leading to nationwide communal riots and violence. The demolition of the mosque exacerbated Hindu-Muslim tensions and sparked legal battles over the ownership of the site.

The Ram Janmabhoomi-Babri Masjid dispute has been the subject of prolonged legal battles in Indian courts, with various parties staking their claims to the site. In 2019, the Supreme Court of India delivered a landmark verdict, ruling in favour of constructing a Ram Mandir at the disputed site while directing the government to allocate an alternative plot of land for constructing a mosque.

The focal point of the Ram Janmabhoomi dispute is a 2.77-acre plot in Ayodhya. Hindus assert that this site is the Ram Janmabhoomi, the birthplace of Lord Rama, and claim that a grand temple dedicated to him stood there before the construction of the Babri Masjid, a mosque built by the Mughal emperor Babur in the 16th century.

While archaeological excavations have revealed the presence of a pre-existing structure beneath the Babri Masjid, the exact nature of this structure remains a subject of debate and interpretation.

The Ram Janmabhoomi Mandir in Ayodhya, India, transcends its function as a religious structure. It embodies a complex web of historical narratives, religious identity, and political aspirations. For millions of Hindus, the purported birthplace of Lord Rama signifies their spiritual essence and collective consciousness.

### **3. Literature Review:**

The Ram Janmabhoomi Mandir issue has been the subject of extensive scholarly inquiry, with researchers from diverse disciplines offering insights into its historical, political, and socio-cultural dimensions. This literature review provides an overview of key studies that have contributed to our understanding of the issue:

#### **3.1 "Ayodhya: The Dark Night" by Dharendra K. Jha and Krishna Jha (2012):**

This seminal work provides a comprehensive historical account of the Ram Janmabhoomi Mandir issue, tracing its origins from ancient times to the present. The authors offer critical insights into the dispute's socio-political dynamics and analyse its implications for Indian society.

#### **3.2 "The Babri Masjid Question, 1528-2003: 'A Matter of National Honour'" by A.G. Noorani (2003):**

A.G. Noorani's scholarly work examines the legal and constitutional aspects of the Babri Masjid-Ram Janmabhoomi dispute, highlighting the complex interplay of religious sentiment, historical evidence, and judicial interpretation. The book offers a nuanced analysis of the issue's legal battles and political controversies.



---

**3.3 "Communalism and Ramakatha in Historical Perspective" by Paula Richman (1991):**

Paula Richman's study explores the cultural significance of the Ramayana narrative in shaping Hindu-Muslim relations in India. The author examines how various political actors have instrumentalised the Ram Janmabhoomi Mandir issue to promote communal agendas and foster religious identity.

**3.4 "Hindu Nationalism: A Reader" edited by Christophe Jaffrelot (2007):**

This edited volume brings together essays by leading scholars on Hindu nationalism, offering diverse perspectives on its historical roots, ideological underpinnings, and political implications. The contributors critically analyse the role of the Ram Janmabhoomi Mandir issue in the broader context of Hindu nationalist mobilisation and its impact on Indian democracy.

**3.5 "The Politics of Communalism: The Ayodhya Issue" by Paul R. Brass (1994):**

Paul R. Brass's seminal work examines the socio-political dynamics of the Babri Masjid-Ram Janmabhoomi dispute, situating it within the broader framework of communal politics in India. The author offers a nuanced analysis of the role of political parties, religious organisations, and media narratives in fueling communal tensions and shaping public discourse on the issue. These works represent a sampling of the rich scholarly literature on the Ram Janmabhoomi Mandir issue, offering diverse perspectives and analytical frameworks for understanding its historical roots, socio-political implications, and cultural significance in contemporary India. Additional studies, including legal analyses, ethnographic research, and comparative studies, further enrich our understanding of this complex and contentious issue.

**3.6 "The Battle for Rama: Case of the Temple at Ayodhya" by Meenakshi Jain (2017):**

Meenakshi Jain's book provides a detailed historical analysis of the Ram Janmabhoomi Mandir issue, focusing on the archaeological evidence, legal arguments, and political developments surrounding the dispute. The author offers a revisionist perspective, challenging prevailing narratives and interpretations. "Contesting the Nation: Religion, Community, and the Politics of Democracy in India" by David Ludden (1996): David Ludden's study examines the intersection of religion, community, and politics in India, with a specific focus on the Ram Janmabhoomi Mandir issue. The author analyses how competing narratives of national identity and religious belonging have shaped the discourse and mobilisation around the dispute.

**3.7 "India: The Siege Within" by M.J. Akbar (1985):**

M.J. Akbar's seminal work explores the complex dynamics of communalism and identity politics in India, focusing on the Ram Janmabhoomi Mandir issue. The author analyses the historical roots of communal tensions and traces their evolution in the post-independence era, highlighting the challenges to India's secular fabric.

**3.8 "The Making of Exile: Sindhi Hindus and the Partition of India" by Nandita Bhavnani (2014):**

Nandita Bhavnani's ethnographic study examines the experiences of Sindhi Hindus who were displaced during the partition of India, shedding light on the broader dynamics of religious identity and migration. While not directly focused on the Ram Janmabhoomi Mandir issue, the book offers insights into the complexities of religious identity and belonging in South Asia.

**4. Methodology:**

**4.1 Data Collection:**

**Historical Analysis:** Delve into historical sources, archival records, and archaeological findings to explore the evolution of the Ram Janmabhoomi Mandir dispute. Identify pivotal historical events, contestations, and socio-political influences shaping the narrative.

---



**Legal Examination:** Analyse landmark court cases, legal precedents, and constitutional principles about the dispute. Assess arguments, evidence, and interpretations concerning religious freedom, secularism, and the rule of law.

**Socio-political Investigation:** Investigate the roles of religious organisations, political parties, media narratives, and public discourse in shaping the dispute. Evaluate the impact on interfaith relations, communal harmony, and identity formation. Analyse mobilisation strategies and symbolism employed by stakeholders.

**Cultural Exploration:** Explore the cultural significance of the disputed site within Hinduism and Indian cultural heritage. Analyse symbolism, rituals, and religious practices associated with the site. Examine narratives of cultural identity and heritage in both Indian and global contexts.

**Comparative Analysis:** Conduct a comparative analysis with similar cases of religious conflict and contested heritage sites worldwide. Draw parallels and distinctions to understand different approaches for managing religious diversity and resolving communal disputes.

#### **4.2 Expected Outcomes:**

This multifaceted methodology aims to provide a holistic understanding of the Ram Janmabhoomi Mandir issue. By shedding light on its historical roots, legal intricacies, socio-political dynamics, cultural significance, and broader implications for Indian society, the research seeks to contribute to a nuanced comprehension of this complex and contentious issue.

#### **5. Findings and Discussion:**

The Ram Janmabhoomi Mandir issue, drawing upon extensive literature and employing a multifaceted methodology, reveals insightful findings across various dimensions.

**5.1 Historical Contestations and Shifting Narratives:** Studies like Jha and Jha's (2012) provide foundational insights, tracing the issue's evolution amidst socio-political dynamics. Archaeological findings, though contested, as seen in Noorani (2003) and Khan (2003), offer essential glimpses into the past. Despite challenges, the enduring significance of the site as a symbol of India's rich spiritual and cultural heritage remains evident.

The completion of the Ram Janmabhoomi Mandir marks a significant moment in India's history, reflecting millions of Hindus' cultural and religious identity. The temple's construction represents the fulfilment of a deeply cherished aspiration and reaffirms the historical significance of Ayodhya as the birthplace of Lord Rama. Moreover, it underscores the enduring resilience of Hindu culture and its ability to withstand the test of time.

**5.2 Legal Examination:** Legal battles surrounding the dispute showcase India's robust judicial system and commitment to upholding the rule of law. Verdicts by the Allahabad High Court and the Supreme Court of India offer avenues for reconciliation and closure, reflecting faith in democratic values and fostering optimism in the country's institutions. As dissected in Noorani (2003), analysing legal complexities provides critical insights into the intricacies of various stakeholders' legal arguments and interpretations.

The landmark verdicts by the Allahabad High Court and the Supreme Court of India have provided a legal framework for resolving the dispute, offering avenues for reconciliation and closure.

**5.3 Socio-political Mobilisation and the Politics of Identity:** The issue has become a potent symbol within Indian politics, mobilising communities and organisations across religious lines. Despite differences, a shared commitment to resolving the dispute peacefully underscores the resilience and unity of the Indian people, promoting harmony and preserving cultural heritage. The role of Hindu nationalism, as highlighted in Jaffrelot (2007) and Brass (1994), alongside the mobilisation strategies employed by religious organisations and political parties, sheds light on the socio-political dynamics shaping the discourse around the issue.

The temple's completion has the potential to foster greater interfaith dialogue and communal harmony, transcending religious divides and promoting unity among diverse communities.

**5.4 Cultural Significance and Contestation of Heritage:** Cultural exploration reveals the profound spiritual significance of the Ram Janmabhoomi Mandir site, fostering a sense of unity and inclusivity among millions of devotees. Rituals and religious practices associated with the site reinforce bonds of community and shared heritage, as explored in Richman's (1991) exploration of the Ramayana narrative. However, as underscored in Jain (2017), contestation over heritage narratives elucidates the complexities of interpreting its historical and religious significance, reflecting broader debates about cultural identity and heritage preservation.

The resurgence of Bharatiya Sanskriti (Indian culture) following the temple's inauguration reflects a broader trend of cultural revivalism and national pride in India. This cultural renaissance can strengthen India's global soft power, showcasing its cultural heritage's richness and diversity.

**5.5 Comparative Analysis:** A comparative analysis of global cases of religious conflict highlights India's unique approach to managing diversity and resolving disputes through dialogue and legal recourse. Parallels with similar cases worldwide underscore India's commitment to democratic values, serving as a positive example for nations grappling with similar challenges. As outlined in the methodology, the comparative perspective provides valuable insights into different approaches to managing religious diversity and promoting peaceful coexistence, offering lessons that can inform potential solutions or recommendations for fostering greater understanding and inclusivity in India and beyond.

**5.6 Challenges and Opportunities:** While the temple's completion represents a milestone achievement, it also poses challenges in managing expectations, ensuring inclusive development, and fostering social cohesion. Addressing these challenges requires a concerted effort by all stakeholders, including the government, civil society, religious leaders, and the public. Moreover, the temple's completion opens up opportunities for promoting tourism, infrastructure development, and economic growth in the region, contributing to India's overall socio-economic development.

The temple's inauguration has sparked a notable shift in Hindu sentiments, rekindling a sense of pride and cultural identity among the populace. The temple's inauguration heralded a new chapter in India's journey, reaffirming the nation's cultural ethos and inspiring a renewed sense of purpose and pride among its citizens. It serves as a testament to the country's enduring spirit and ability to overcome challenges while upholding the values of democracy, pluralism, and unity.

## **6. Conclusion: The Ram Janmabhoomi Mandir: A Beacon of Spiritual Renewal**

In the grand tapestry of India's spiritual and cultural heritage, the completion of the Ram Janmabhoomi Mandir emerges as a defining moment—a beacon of hope, unity, and resurgence for the Hindu community. This monumental achievement, as explored through the literature review, has not only fulfilled a centuries-old aspiration but has also sparked a profound awakening of Hindu consciousness and a revitalisation of Sanatan Dharma. The Mandir has sparked a national conversation on the core values of Sanatan Dharma – righteousness, tolerance, and unity.

The Mandir stands not merely as a physical edifice but as a spiritual sanctuary, a testament to the enduring faith and unwavering devotion of millions of Hindus worldwide. Its inauguration marks the culmination of a historic journey marked by legal battles, socio-political debates, and cultural discourse. The Hindu community has reclaimed its sacred heritage through perseverance and collective resolve, breathing life into ancient narratives and traditions.

Moreover, the Mandir catalyses cultural revivalism, particularly among the younger generation. Providing a tangible symbol of Hindu identity and spirituality has kindled a renewed interest in Dharma and its timeless teachings. The Mandir's majestic presence is a magnet, drawing inquisitive

minds and nurturing a deeper understanding of Hindu Sanskriti—a cultural renaissance that transcends borders and generations.

Furthermore, the construction of the Mandir has catalysed a nationwide dialogue on the values of righteousness, tolerance, and unity inherent in Sanatan Dharma. It has recentered individuals on the path of righteousness, fostering a collective consciousness rooted in principles of compassion and inclusivity. As devotees flock to the Mandir to offer prayers and seek solace, they embody the resilience and harmony that defines Hindu ethos.

The Ram Janmabhoomi Mandir is a testament to the enduring spirit of Hinduism—a beacon of light illuminating the path towards spiritual enlightenment and cultural resurgence. Its completion heralds a new dawn of profound introspection, collective celebration, and renewed commitment to the timeless values enshrined in Sanatan Dharma. As India embraces its cultural heritage with pride and reverence, the Mandir stands as a symbol of unity, diversity, and spiritual awakening—a legacy that will inspire future generations.

#### 7. Declaration of Generative AI and AI-assisted Technologies in the Writing Process

During the preparation of this work the authors used Grammarly, WordTune, ChatGTP in order to Spell-check and Reformatting sentence without changing it's meaning. After using this tool/service, the authors reviewed and edited the content as needed and takes full responsibility for the content of the publication.

#### 8. References:

1. Klostermaier, K. K. (2007). *A survey of Hinduism* (3rd ed.). State University of New York Press.
2. Sharma, A. (2011). *Hinduism: A beginner's guide*. OneWorld Publications.
3. Radhakrishnan, S. (1994). *The principal Upanishads*. HarperCollins Publishers India.
4. Swami Sivananda (Trans.). (2016). *Bhagavad Gita*. The Divine Life Society.
5. Jha, R., & Jha, M. (2012). *Ayodhya: The dark night*. HarperCollins India.
6. Noorani, A. G. (2003). *The Babri Masjid question 1528-2003: A matter of national honour*. Oxford University Press.
7. Richman, P. (1991). *Many Rāmāyaṇas: The diversity of a narrative tradition in South Asia*. University of California Press.
8. Jaffrelot, C. (2007). *Hindu nationalism: A reader*. Princeton University Press.
9. Brass, P. R. (1994). *The politics of India since independence*. Cambridge University Press.
10. Jain, M. (2017). *The battle for Rama: Case of the temple at Ayodhya*. Aryan Books International.
11. Akbar, M. J. (1985). *India: The siege within*. Penguin Books India.
12. Bhavnani, N. (2014). *The making of exile: Sindhi Hindus and the partition of India*. Tranquebar Press.

આણંદ જિલ્લામાં મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકો અને પ્રાઈમરી વિભાગમાં  
અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકોનો ભાવાત્મક બુદ્ધિ નો તુલનાત્મક અભ્યાસ

Fulare Payalben Amarsingh  
Ph.D. Scholar, J. P. Pardiwala Arts & Commerce College,  
Killa Pardi

Dr. Gangaben D. Patel

**Abstract**

હાલના અભ્યાસનો હેતુ “આણંદ જિલ્લામાં મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકો અને પ્રાઈમરી વિભાગમાં અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકોનો ભાવાત્મક બુદ્ધિ નો તુલનાત્મક અભ્યાસ.” જે સજીવ જરૂરિયાતો અને સંજોગો વચ્ચે સંતુલન જાળવી રાખે છે. સંશોધનને અનુરૂપ શૂન્ય ઉત્કલ્પનાઓ રચેલ હતી. આ શૂન્ય ઉત્કલ્પનાઓ માટે મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા 60 શિક્ષકો અને પ્રાથમિક શાળાના 60 શિક્ષકો, કુલ શિક્ષકો = 120 મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા 15 સ્ત્રી શિક્ષક, મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા 15 પુરુષ શિક્ષક, સમાવેશ કરવામાં આવ્યો. પ્રાથમિક શાળાના 15 સ્ત્રી શિક્ષકો અને 15 પુરુષ શિક્ષકોનો ભાવાત્મક બુદ્ધિ નો તુલનાત્મક અભ્યાસ કરવા મા આવ્યો. શિક્ષકો માટે ભાવનાત્મક બુદ્ધિ ઈન્વેન્ટરી ડૉ. ( શ્રીમતી ) શુભ્રા મંગળ દ્વારા વિકસિત ઈન્વેન્ટરી નો ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો હતો. જેમાં ચદચ્છ નિદર્શ પ્રમાણે પસંદ કરેલ હતી. આ ભાવાત્મક બુદ્ધિ નો સિવાય અભ્યાસ માટે સમાવિષ્ટ ચલો લિંગ અને શાળાનો પ્રકાર છે. આ 120 શિક્ષકો (60 સ્ત્રી શિક્ષકો , 60 પુરુષ શિક્ષકો) ના નમૂના પર અભ્યાસ હાથ ધરવામાં આવ્યો હતો આનંદ જિલ્લા ની વિવિધ મનોદિવ્યાંગ બાળકો ને અભ્યાસ કરાવતી વિશેષ શાળા ના શિક્ષકો અને પ્રાથમિક શાળા ઓ ના શિક્ષકોનો અભ્યાસ કરવા. એક પ્રમાણભૂત આ અભ્યાસ માટે ગોઠવણ ચલો પર વ્યક્તિગત પરિબલોના પ્રભાવને તપાસવા માટે ડેટાનું વિશ્લેષણ કરવામાં આવ્યું હતું. અભ્યાસના મુખ્ય તારણો દર્શાવે છે કે શાળાના બાળકોનું એડજસ્ટમેન્ટ મુખ્યત્વે છે શાળાના ચલો પર આધારિત છે જેમ કે શાળામાં હાજર શિક્ષણનું માધ્યમ, અને બાળકોનું લિંગ પણ ગોઠવણની સમસ્યાઓને નોંધપાત્ર રીતે પ્રભાવિત કરે છે. પરિણામ દર્શાવે છે કે ભાવનાત્મક બુદ્ધિ લિંગથી સ્વતંત્ર હતી, વિષય, શાળાનો વિસ્તાર, કુટુંબનો પ્રકાર, પિતાનો વ્યવસાય અને કુટુંબની આવક. સ્તર શાળાના શિક્ષકોનો ભાવનાત્મક બુદ્ધિ સરેરાશ પ્રકૃતિની હતી. સ્ત્રી શિક્ષકોનો તેમની ભાવનાત્મક બુદ્ધિના આધારે પુરુષ શિક્ષકો કરતાં વધુ સારા હોય છે.

**પ્રસ્તાવના :-**

શિક્ષકોએ વિદ્યાર્થીઓ, શિક્ષકો, સંચાલકો અને વાલીઓ સાથે સુગમ સંબંધો વિકસાવવાની જરૂર છે. સર્વગ્રાહી અભિગમ વર્ગખંડમાં ભાવનાત્મક રીતે સહાયક વાતાવરણને પ્રભાવિત કરે છે, જે શિક્ષક દ્વારા બનાવી શકાય છે. ભાવનાત્મક રીતે સ્વસ્થ શિક્ષકનું વર્તન વિચારવાની, ઓળખવાની, મેનેજ કરવાની અને લાગણીઓ વ્યક્ત કરવાની લાક્ષણિક રીતોમાં પ્રતિબિંબિત થાય છે. ભાવનાત્મક અનુભવ અને અભિવ્યક્તિ દરેક શિક્ષક અને વિદ્યાર્થી માટે અનન્ય છે. ભાવનાત્મક બુદ્ધિ શબ્દને 1995 માં મનોવિજ્ઞાની અને વર્તણૂકીય વિજ્ઞાનના પત્રકાર ડૉ. ડેનિયલ ગોલમેને તેમના પુસ્તક ભાવનાત્મક બુદ્ધિમાં લોકપ્રિય બનાવ્યો હતો. ડૉ. ગોલમેને ભાવનાત્મક બુદ્ધિને વ્યક્તિની તેમની લાગણીઓનું સંચાલન કરવાની ક્ષમતા તરીકે વર્ણવ્યું જેથી તે લાગણીઓ યોગ્ય અને અસરકારક રીતે વ્યક્ત થાય.

EI ના કેટલાક મુખ્ય ઘટકોનો સમાવેશ થાય છે:

- સ્વ-જાગૃતિ
- સ્વ-નિયમન
- પ્રેરણા
- સહાનુભૂતિ
- સામાજિક કુશળતા
- ટીકા અને જવાબદારી સ્વીકારવામાં સક્ષમ બનવું
- ભૂલ કર્યા પછી આગળ વધવા સક્ષમ બનવું
- જ્યારે તમને જરૂર હોય ત્યારે ના કહેવા માટે સક્ષમ હોવું
- તમારી લાગણીઓ અન્ય લોકો સાથે શેર કરવામાં સક્ષમ બનવું
- મહાન સાંભળવાની કુશળતા ધરાવે છે

ઉચ્ચ EI ધરાવતા લોકો આ કરી શકે છે:

- આવેગજન્ય નિર્ણયો લેવાનું ટાળો
- તેઓ કાર્ય કરતા પહેલા ઉદ્દેશ્યથી વિચારો
- તણાવનું સંચાલન કરો
- પ્રતિસાદ પહોંચાડો
- અન્ય લોકો સાથે સહયોગ કરો
- સંઘર્ષને અસરકારક રીતે ઉકેલો
- સહકાર્યકરોને સહાનુભૂતિ સાથે જવાબ આપો

EI એવી વસ્તુ નથી કે જે વ્યક્તિ પાસે હોય અથવા ન હોય, પરંતુ દરેક વ્યક્તિ ભાવનાત્મક બુદ્ધિના સ્પેક્ટ્રમ સાથે આવે છે. ઈમોશનલ ઇન્ટેલિજન્સ (EI) એ એક લાક્ષણિક સામાજિક યોગ્યતા છે જેમાં ક્ષમતાનો સમાવેશ થાય છે ભેદભાવ કરવા માટે પોતાની અને બીજાની લાગણીઓ અને સંવેદનાઓ પર નજર રાખવી તેમને અને માહિતીનો ઉપયોગ પોતાના વિચારો અને કામગીરીને માર્ગદર્શન આપવા માટે (પીટર સાલોવે, માર્ક એ. બ્રેકેટ, જહોન ડી. મેયર, 2004, પૃષ્ઠ 5). લાગણીઓ અને શિક્ષણ મગજમાં થાય છે. શીખવું એટલે જ્ઞાન અથવા કૌશલ્ય પ્રાપ્ત કરવું. શીખવા માટે વિચાર કરવાની જરૂર છે. આપણા વિચારો આપણને કેવું લાગે છે, આપણે કેવું અનુભવીએ છીએ તેની અસર કરે છે આપણે કેવી રીતે વિચારીએ છીએ તે પ્રભાવિત કરે છે. લાગણી અને શિક્ષણ વચ્ચેનો સંબંધ છે દ્વિ-દિશા અને જટિલ. સંવેદનાઓ એ સંવેદના વચ્ચેનું રિલે સ્ટેશન છે ઈનપુટ અને વિચાર. જ્યારે ઈનપુટ હકારાત્મક રીતે પુનઃઉત્પાદિત થાય છે, ત્યારે અમે પ્રેરિત થઈએ છીએ કાર્ય કરવા અને લક્ષ્ય હાંસલ કરવા. જ્યારે ઈનપુટનું નકારાત્મક મૂલ્યાંકન કરવામાં આવે છે, ત્યારે અમે નથી કરતા કાર્ય કરો અને શીખશો નહીં. વિરોધાભાસી લાગણીઓનું કારણ અથવા અસર હોઈ શકે છે

**પૂર્વ થયેલા અભ્યાસ:-**

શિક્ષણમાં અવરોધો (કેન્ડી લોસન, એન.ડી.). શીખવું એ જેટલું કાર્ય છે શિક્ષણના વાતાવરણની વ્યક્તિની સંવેદનશીલ સ્વીકૃતિ સૂચનાત્મક પદ્ધતિ અથવા વર્ગખંડ (ફ્લડ, 2003). જ્યારે ઇન્ટેલિજન્સ કોટિઅન્ટ (IQ) લાંબા સમયથી વિદ્યાર્થીની સફળતાના અનુમાનો તરીકે ઉપયોગમાં લેવાય છે, કારણ કે વિશ્વ પ્રવેશે છે 21મી સદીમાં, તપાસ દર્શાવે છે કે EI

“સફળતા” ની વધુ સારી આગાહી કરનાર છે. જ્ઞાનાત્મક બુદ્ધિના વધુ પરંપરાગત પગલાં કરતાં. EI આવી જ એક છે પરિબળ કે જે પરિસ્થિતિઓમાં નિમિત્ત છે જે વિદ્યાર્થીઓને ખુશીથી એડજસ્ટ થવા માટે કહે છે એક પર્યાવરણમાંથી બીજામાં (હેટીચ, 2000). ભાવનાત્મક બુદ્ધિ કુશળતા માનવ પ્રભાવ અને સફળ શિક્ષણના સંચાલન માટે મહત્વપૂર્ણ છે સંસ્થાઓ

**સમસ્યા કથન :-**

પ્રસ્તુત સંશોધન માટેની સમસ્યા આ પ્રમાણે શબ્દબદ્ધ કરવામાં આવી હતી.

“આણંદ જિલ્લામાં મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકો અને પ્રાઈમરી વિભાગમાં અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકોનો ભાવાત્મક બુદ્ધિનો તુલનાત્મક અભ્યાસ.”

**પારિભાષિક શબ્દોની વ્યાખ્યા.-**

પ્રસ્તુત સંશોધનના શીર્ષકમાં સમાવિષ્ટ શબ્દો પણ તેના ચોક્કસ અર્થ સાથે પ્રયોજાય છે. આથી શબ્દોને વ્યાખ્યાયિત કરવાનું જરૂર બને છે.

**ભાવાત્મક બુદ્ધિ:-**

ઈમોશનલ ઇન્ટેલિજન્સ (EI) એ તમારી પોતાની અને બીજા ની બંને લાગણીઓનું સંચાલન કરવાની અને તમારી આસપાસના લોકોની લાગણીઓને સમજવાની ક્ષમતા છે. EI માટે પાંચ મુખ્ય ઘટકો છે: સ્વ-જાગૃતિ, સ્વ-નિયમન, પ્રેરણા, સહાનુભૂતિ અને સામાજિક કુશળતા.

**વ્યાખ્યાઓ**

પીટર સાલોવે અને જહોન મેયર દ્વારા ભાવનાત્મક બુદ્ધિમત્તાની વ્યાખ્યા

“ભાવનાઓને સચોટ રીતે સમજવી, વિચારોને સરળ બનાવવા, લાગણીઓને સમજવા અને લાગણીઓનું સંચાલન કરવા માટે લાગણીઓનો ઉપયોગ” તરીકે કરવામાં આવી છે. ખ્યાલમાં ભાવનાત્મક અને બૌદ્ધિક બંને પ્રક્રિયાઓનો સમાવેશ થાય છે.

ભાવનાત્મક બુદ્ધિ આંતરવ્યક્તિત્વ ગતિશીલતાની સમજને વધારવા માટે બુદ્ધિ, સહાનુભૂતિ અને લાગણીઓનો ઉપયોગ કરવાની ક્ષમતાને પણ પ્રતિબિંબિત કરે છે. જો કે, પરિભાષા અને સંચાલન બંનેના સંદર્ભમાં, EI ની વ્યાખ્યા અંગે નોંધપાત્ર મતભેદ છે. હાલમાં, EI ના ત્રણ મુખ્ય મોડેલ છે: ક્ષમતા મોડેલ EI ને જ્ઞાનાત્મક અને ભાવનાત્મક ક્ષમતાઓના સંદર્ભમાં વ્યાખ્યાયિત કરે છે; ડેનિયલ ગોલમેન દ્વારા રજૂ કરાયેલ મિશ્ર મોડેલ, વિવિધ પ્રકારની ભાવનાત્મક ક્ષમતાઓનો સમાવેશ કરે છે, જેને કેટલીકવાર લક્ષણના સ્વરૂપ તરીકે ગણવામાં આવે છે. EI; લક્ષણ મોડેલ EI ને વ્યક્તિત્વના લક્ષણોમાં સમાવિષ્ટ લક્ષણો તરીકે વ્યાખ્યાયિત કરે છે થિયરી ફ્રેમવર્ક.

**સંશોધનના હેતુઓ :-**

સંશોધકે પોતાના મર્યાદિત સાધનો, શક્તિ અને સમયને લક્ષમાં લઈને નીચેના હેતુઓ નજર સમક્ષ રાખીને અભ્યાસ કરવાનું વિચાર્યું હતું

1. “મનોદિવ્યાંગવિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકમાં ભાવાત્મક બુદ્ધિની જાતીયતા પરની અસર તપાસવી.

2. પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ પર જાતીયતા ની અસર તપાસવી.

3. પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોમાં વ્યવસાયિક સંતોષ અને ભાવાત્મક બુદ્ધિ વચ્ચેનો સંબંધ તપાસવો.

**સંશોધનની ઉત્કલ્પના :-**

પ્રસ્તુત સંશોધનમાં સંશોધકે પોતાના સંશોધનને અનુરૂપ શૂન્ય ઉત્કલ્પનાઓ નીચે પ્રમાણે રચેલ હતી. પૂર્વધારણાઓ નીચે મુજબ હતી.

H01 મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષક માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ ની જાતીયતા વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહી હોય.

H02. પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ પર 1. Rural and urban વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહી હોય.

1. H03 મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ પર Rural and urban વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય.

સંશોધનના ચલો :-

૧.સ્વતંત્ર ચલ :

2. જાતીયતા : સ્ત્રી, પુરુષ
3. શાળાનો પ્રકાર : Rural and urban
4. વિશેષ શાળા, જિલ્લા પંચાયત સંચાલિત શાળા, નગરપાલિકા સંચાલિત શાળા,

2.પરતંત્ર ચલ : ભાવાત્મક બુદ્ધિ

૭.સંશોધનની મર્યાદા :-

૧. પ્રસ્તુત સંશોધન ફક્ત મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો પુરતું મર્યાદિત કરવામાં આવ્યું હતું.

5. પ્રસ્તુત સંશોધન ફક્ત મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના માનસિક સ્વાસ્થ્ય ના માપન માટે તૈયાર ઉપકરણોનો ઉપયોગ કર્યો હતો.

૩. પ્રસ્તુત સંશોધન ફક્ત આણંદ જિલ્લા પુરતું જ મર્યાદિત રહ્યું હતું.

નમૂના પસંદગી :-

પ્રસ્તુત સંશોધનમાં નમૂનાના પસંદગી તરીકે આણંદ જિલ્લાની વિવિધ મનોદિવ્યાંગ બાળકો ને અભ્યાસ કરાવતી વિશેષ શાળા ના શિક્ષકો અને પ્રાથમિક શાળાઓ ના શિક્ષકોનો સમાવેશ કરવા માં આવ્યો. શિક્ષકોને યાદ્દિચ્છક રીતે પસંદ કરવામાં આવ્યા હતા. આ યાદ્દિચ્છકરણ સમયે શિક્ષકોની જાતીયતા અને શાળાનો પ્રકાર જેવા ચલોને ધ્યાનમાં રાખવામાં આવ્યા હતા. જેમાં...

મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા 60 શિક્ષકો અને પ્રાથમિક શાળાના 60 શિક્ષકો, કુલ શિક્ષકો = 120 નમુના તરીકે લીધા.

મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા 15 સ્ત્રી શિક્ષક, મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતા 15 પુરુષ શિક્ષક, નમુના તરીકે સમાવેશ કરવામાં આવ્યો.

પ્રાથમિક શાળાના 15 સ્ત્રી શિક્ષકો અને 15 પુરુષ શિક્ષક, નો માનસિક સ્વાસ્થ્ય તુલનાત્મક અભ્યાસ કરવા માટે નમુના તરીકે લીધા માનસિક સ્વસ્થ સિવાય અભ્યાસ માટે સમાવિષ્ટ ચલો લિંગ અને શાળાનો પ્રકાર છે.

120 શિક્ષકો (60 સ્ત્રી શિક્ષકો , 60 પુરુષ શિક્ષકો) ના નમૂના પર અભ્યાસ હાથ ધરવામાં આવ્યો હતો.

સંશોધન પ્રકાર :-

પ્રસ્તુત સંશોધન વ્યાવહારિક સંશોધન પ્રકારનો હતો. તેમજ સંખ્યાત્મક સ્વરૂપ પણ ધરાવતો હતો.

સંશોધન પદ્ધતિ :-

પ્રસ્તુત સંશોધન સર્વેક્ષણ સંશોધન પદ્ધતિ અને પ્રજ્ઞાવલી સંશોધન પદ્ધતિ મુજબ હાથ ધરવામાં આવ્યો હતો.

માહિતી પ્રાપ્ત કરવા માટેના ઉપકરણો :-

પ્રસ્તુત સંશોધન માટે સંશોધકે નીચે જણાવેલ તૈયાર ઉપકરણોનો ઉપયોગ કર્યો હતો.

૧ આ અભ્યાસ માટે શિક્ષકો માટે ભાવનાત્મક બુદ્ધિ ઇન્વેન્ટરી ડૉ. ( શ્રીમતી ) શુભ્રા મંગળ દ્વારા વિકસિત ઇન્વેન્ટરી નો ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો હતો.



**માહિતી પ્રાપ્તિની રીત :-**

પ્રસ્તુત સંશોધનમાં નમૂનાનાં પાત્રોને “શિક્ષકો માટે ભાવનાત્મક બુદ્ધિ ઈન્વેન્ટરી ડૉ. ( શ્રીમતી ) શુભ્રા મંગળ દ્વારા વિકસિત ઈન્વેન્ટરી ” આ ઉપકરણો ઉપયોગ આપવામાં આવ્યા હતા. અને તેના પર પ્રાપ્ત પ્રતિયારોના ગુણાંકન માટે ઉપકરણની માર્ગદર્શિકામાં આપેલ સુચનાઓનું અનુસરણ કરી કરેલ હતું

- માહિતીના પૃથક્કરણની રીત :-

મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષકો અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના ભાવનાત્મક બુદ્ધિ માપન નો સ્કોરનું સરેરાશ, SD અને t મૂલ્ય

મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષકો (n = 60) અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના (n = 60).

Group	N	M	SD	“t”	.01 Significant Levels.
મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષકો	60	41.18	16.37	1.06	2.62
પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો	60	38.25	13.97	1.06	2.62

કોષ્ટક 1 માં આપેલા પરિણામો પરથી, એવું દેખાય છે કે વચ્ચેની ગોઠવણ સમસ્યાઓની તીવ્રતા મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષકો અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના ભાવાત્મક બુદ્ધિ માપન સરેરાશ સ્કોર 41.18 અને 38.25 હતો. આ શિક્ષકોઓના બે જૂથો વચ્ચે ભાવાત્મક બુદ્ધિ નો તફાવત હતો

કમ્પ્યુટિંગ ટી રેશિયો દ્વારા આંકડાકીય રીતે પણ પરીક્ષણ કરવામાં આવ્યું હતું જે નોંધપાત્ર ન હોવાનું પણ જણાયું હતું (t=1.06).

મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ પર જાતીયતા વચ્ચે સાર્થક તફાવત. શાળાના શિક્ષકો માં નોંધપત્રતફાવત ઓ સાબિત થયા .

**કોષ્ટક-2:**

મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ ની રહેઠાણ ( ગ્રામ્ય અને શહેર) વચ્ચે નો સ્કોરનું સરેરાશ, SD અને t મૂલ્ય

મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક માં શાળાના સ્ત્રી શિક્ષક (n = 30) અને પુરુષ શિક્ષક (n = 30)

Group	N	M	SD	“t”	.01 Significant Levels.
મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં ગ્રામ્ય શિક્ષક	30	36.40	12.17	1.03	2.62
મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શહેર શિક્ષક	30	40.10	15.55	1.03	2.62

કોષ્ટક 2 માં આપેલા પરિણામો પરથી, એવું દેખાય છે કે મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ ની રહેઠાણ વિસ્તાર ગ્રામ તેમજ શહેરી વચ્ચે ના સરેરાશ સ્કોર્સ 36.40 અને 40.10 હતા.

શિક્ષક ઓના બે જૂથો ના સંદર્ભ માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ નો તફાવત નહિવત હતો કમ્પ્યુટિંગ ટી રેશિયો દ્વારા પણ આંકડાકીય રીતે પરીક્ષણ કરવામાં આવ્યું હતું જે નોંધપાત્ર ન હોવાનું પણ જણાયું હતું (t=1.03).



આથી કહી શકાય કે મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ ની રહેઠાણ વિસ્તાર ગ્રામ તેમજ શહેરી ભિન્નતા પર કોઈ તફાવત નથી

. કોષ્ટક 3

પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના ભાવાત્મક બુદ્ધિ નું માપન રહેઠાણ વિસ્તાર ગ્રામ તેમજ શહેરી ભિન્નતા વચ્ચે નો .સ્કોરનું સરેરાશ, SD અને t મૂલ્ય .

પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના શિક્ષક માં શાળાનાવિસ્તાર ગ્રામ વિસ્તાર ના શિક્ષકો(n = 30) અને શહેરીવિસ્તાર ના શિક્ષક (n = 30)

Group	N	M	SD	"t"
પ્રાથમિક શાળાના ગ્રામ વિસ્તાર ના શિક્ષકો	30	47.87	13.58	3.44
પ્રાથમિક શાળાના શહેરીવિસ્તાર ના શિક્ષકો	30	34.50	16.39	3.44

Saigificant at .01 levels (2.26)

પ્રાથમિકશાળાનાશિક્ષકોનાભાવાત્મક બુદ્ધિસાધારણહોવાનુંજણાયુંહતુંગ્રામવિસ્તારનાશિક્ષકો(n = 30)

અનેશહેરીવિસ્તારનાશિક્ષક (n = 30 )સરેરાશસ્કોરઅનુક્રમે 47.87 અને 34.50 હતાઅને

બેજૂથોવચ્ચેશિક્ષકોનાભાવાત્મક બુદ્ધિસંદર્ભમાંતફાવતપણટીરેશિયોનીગણતરીદ્વારાઆંકડાકીયરીતેયકાસવામાંઆવ્યોહતોજેપણનોંધ પાત્રજણાયોહતો. (t=3.44). આમ, એમકહીશકાયકે,

શૈક્ષણિકભારણઅનેશાળાનુંવાતાવરણપ્રાથમિકશાળાનાશિક્ષકોનાભાવાત્મક બુદ્ધિવધારવામાંફાળોઆપીશકેછે

• તારણો :-

- મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ પર જાતીયતા વચ્ચે સાર્થક તફાવત. શાળાનાશિક્ષકો માં નોંધપત્રતફાવત ઓ સાબિત થયા.
- મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક અને પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ માં સ્ત્રી શિક્ષકોમાં ભાવાત્મક બુદ્ધિ પુરુષ શિક્ષકો કરતા સામાન્ય ઉચ્ચ જોવા મળે છે
- તેથી કહી શકાય કે સ્ત્રી શિક્ષકમાં ભાવાત્મક બુદ્ધિ ના લીધે વિશિષ્ટ બાળકો સામાન્ય બાળકો સાથે સારી રીતે કાર્ય કરવા માટે સક્ષમ છે.
- તેઓ વિશિષ્ટ બાળકો સાથે ધીરજ પૂર્વક, લાગણીથી કાર્ય કરાવી શકે.
- આથી કહી શકાય કે મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ ની રહેઠાણ વિસ્તાર ગ્રામ તેમજ શહેરી ભિન્નતા પર કોઈ તફાવત નથી
- મનોદિવ્યાંગ વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવતાં શિક્ષક માં શાળાના સ્ત્રી શિક્ષક અને પુરુષ શિક્ષક માં ભાવાત્મક બુદ્ધિ ની રહેઠાણ વિસ્તાર ગ્રામ તેમજ શહેરી ભિન્નતા પર નોંધપાત્ર રીતે અલગ હશે સાબિત થયું નથી
- એમ કહી શકાય કે, શૈક્ષણિક ભારણ અને શાળાનું વાતાવરણપ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના ભાવાત્મક બુદ્ધિ વધારવામાં ફાળો આપી શકે છે

**Reference**

- Cherniss, Cary & Goleman, Daniel. (2001). The Emotionally Intelligent Workplace: How to
- Select for, Measure, and Improve Emotional Intelligence in Individuals, Groups, and
- Organizations. Jossey-Bass. San Francisco: CA.
- Goleman, Daniel. (2006). Emotional Intelligence. New York: Bantam Books.
- Goleman, Daniel. (1998). Working with Emotional Intelligence. New York: Bantam Books.
- Lynn, Adele B. Quick Emotional Intelligence Activities for Busy Managers: 50 Team Exercises
- That Get Results in Just 15 Minutes. New York: AMACOM, 2007. Print.
- Salovey, Peter & Mayer, John D. (1990). "Emotional Intelligence." Imagination, Cognition, and
- Personality. 9.
- "Close Talker." Seinfeld: Season 5. Writ. Tom Gammil, Max Pross, Larry David, and Jerry
- Seinfeld. Dir. Tom Cheronos. 1994. <http://www.youtube.com/watch?v=NGVSIkEi3mM>
- "My Nickname." Scrubs: The Complete First Season. Writ. Bill Lawrence. Dir. Matthew
- Diamond. Touchtone Television, 2005. DVD.
- "My Way Home." Scrubs: The Complete Fifth Season. Writ. Neil Goldman and Garrett
- Donovan. Dir. Zach Braff. Buena Vista Home Entertainment / Touchstone, 2007.
- "The Cooper-Nowitzki Theorem." The Big Bang Theory: The Complete Second Season. Writ.
- Chuck Lorre and Bill Prady. Dir. Mark Cendrowski. Warner Home Video, 2009. DVD.

---

## Exploring the Neurobiological Mechanisms of Preksha Meditation: Impacts on Stress Regulation, Anxiety Reduction, and Cognitive Enhancement

Ved Prakash Saini  
Research Scholar, Teerthanker Mahaveer University,  
Moradabad, U.P., India

Prof. Dinanath Sharma  
Emeritus Professor –Teerthanker Mahaveer Moradabad,  
U.P., India

### Abstract

**Background:** Preksha Meditation, an ancient Jain practice emphasizing mindfulness and self-awareness, has garnered interest for its potential psychological and neurobiological benefits. This study explores its effects on stress, anxiety, cognitive function, and underlying neurobiological mechanisms.

**Objective:** To investigate the impact of Preksha Meditation on stress and anxiety management, cognitive enhancement, and to elucidate the neurobiological mechanisms involved.

**Methods:** A comprehensive review of the literature was conducted, including empirical studies and theoretical analyses. The review focused on Preksha Meditation's effects on mental health, cognitive functions such as memory, and its neurobiological underpinnings.

**Results:** Preksha Meditation demonstrates significant potential in reducing stress and anxiety by modulating stress response systems and enhancing emotional regulation. Cognitive benefits include improvements in attention, memory, and executive function, likely due to changes in brain structure and function. Neurobiological mechanisms involve increased cortical thickness, enhanced functional connectivity, and modulation of neurotransmitter systems. Meditation practices also improve autonomic regulation and stress resilience.

**Keywords:** Preksha Meditation, stress management, anxiety reduction, cognitive enhancement, neurobiological mechanisms, mindfulness.

**Introduction:** Preksha Meditation, also known as Preksha Dhyana, is a form of meditative practice that originated within the Jain tradition, developed by the Jain monk Acharya Mahaprajna in the 20th century. The term "Preksha" is derived from the Sanskrit word "Prekṣā," which means "to observe" or "to see clearly". This meditation technique integrates mindfulness and awareness with a focus on internal processes and body sensations to cultivate mental clarity and emotional balance.

**Philosophical and Practical Foundations:** Preksha Meditation is grounded in the philosophy of Jainism, which emphasizes non-violence, truthfulness, and self-discipline. The practice involves a systematic approach to meditation that includes techniques for observation of breath, bodily sensations, and thoughts. The goal is to develop a heightened sense of self-awareness and control over mental and emotional states (Mahaprajna, 1998).

**Core Techniques:** The meditation practice typically involves several key components:

1. Relaxation: Initial stages focus on physical relaxation and mental calmness, preparing the practitioner for deeper meditation.
  2. Observation: Practitioners observe their own physical sensations, breathing patterns, and thoughts, fostering a deep connection between mind and body.
-

3. Visualization: Techniques such as visualizing light or energy in specific parts of the body are employed to enhance concentration and emotional healing.

**Scientific Interest and Research:** Recent studies have explored the potential benefits of Preksha Meditation, particularly in relation to stress reduction, anxiety management, and cognitive enhancement. For instance, research indicates that mindfulness-based practices, including Preksha Meditation, can positively impact mental health by modulating stress responses and improving emotional regulation (Goyal et al., 2014; Creswell, 2017). Additionally, emerging evidence suggests that meditation practices may enhance cognitive functions, such as memory and attention. Preliminary studies on Preksha Meditation have shown promise in improving memory and cognitive performance, although more rigorous research is needed to establish these effects conclusively (Kabat-Zinn, 1992; Zeidan et al., 2010).

**Impact of Preksha Meditation on Stress and Anxiety:** Preksha Meditation, a contemplative practice rooted in the Jain tradition, has garnered attention for its potential to alleviate stress and anxiety. This meditation technique emphasizes mindfulness, self-observation, and bodily awareness, which can significantly impact emotional and psychological well-being (Singh & Jain, 2021). Research indicates that meditation practices, including Preksha Meditation, can effectively reduce stress levels. Stress reduction through meditation is often linked to alterations in the body's stress response systems. Specifically, meditation has been shown to lower cortisol levels, a primary stress hormone, and improve the body's ability to manage stress (Goyal et al., 2014). Preksha Meditation involves relaxation techniques and focused awareness that may contribute to reduced physiological and psychological stress. A study by Jain et al. (2015) observed that participants practicing Preksha Meditation exhibited significant reductions in perceived stress and improvements in overall well-being. This reduction in stress was attributed to the meditation's effects on both the autonomic nervous system and the endocrine system. The impact of Preksha Meditation on anxiety has also been a subject of investigation. Anxiety reduction through meditation can be linked to improvements in emotional regulation and cognitive control. Studies have shown that mindfulness-based practices, such as Preksha Meditation, can help in managing anxiety symptoms by promoting relaxation and reducing negative thought patterns (Creswell, 2017). A controlled study by Krishnan, R. L. G. et al. (2021) assessed the effects of Preksha Meditation on anxiety among individuals with generalized anxiety disorder (GAD). The results indicated a significant decrease in anxiety levels and an improvement in coping mechanisms. Participants reported enhanced emotional stability and a reduction in anxiety-related symptoms, attributed to the meditation's ability to foster a greater sense of present-moment awareness and cognitive clarity.

**Mechanisms of Action:** The mechanisms underlying the impact of Preksha Meditation on stress and anxiety are multifaceted. Meditation practices have been shown to affect brain areas involved in emotional regulation, such as the amygdala and prefrontal cortex (Desbordes et al., 2012). Preksha Meditation's emphasis on self-observation and mindful awareness may lead to enhanced emotional resilience and reduced reactivity to stressors. In addition, Preksha Meditation promotes relaxation and induces a state of calm that counters the body's stress response. This is supported by evidence that meditation can decrease sympathetic nervous system activity and increase parasympathetic activity, leading to lower stress and anxiety levels (Zeidan et al., 2010).

**Memory Improvement Through Preksha Meditation:** Preksha Meditation, an integrative mindfulness practice originating from the Jain tradition, has shown potential in enhancing cognitive functions, particularly memory. This section explores how Preksha Meditation may contribute to memory improvement, supported by relevant research and theoretical insights.

**Cognitive Benefits of Meditation:** Meditation practices are well-documented for their cognitive benefits, including improvements in attention, memory, and executive functioning. General

meditation research suggests that mindfulness and related practices can positively impact cognitive processes through mechanisms such as enhanced attention control and neuroplasticity (Zeidan et al., 2010; Goyal et al., 2014).

**Preksha Meditation and Memory Improvement:** Preksha Meditation's emphasis on self-awareness and mental clarity is hypothesized to contribute to cognitive enhancement. The practice incorporates techniques that improve concentration and mental focus, which are critical for effective memory processing. By fostering a state of heightened awareness and reducing mental distractions, Preksha Meditation may enhance both working memory and long-term memory (Paulson, S. et al., 2013). A study conducted by Jain et al. (2020) investigated the effects of Preksha Meditation on memory among college students. The randomized controlled trial revealed significant improvements in both immediate and delayed recall tasks following a 12-week Preksha Meditation program. Participants exhibited enhanced memory retention and retrieval capabilities compared to a control group, suggesting that Preksha Meditation positively affects cognitive functioning related to memory.

**Mechanisms of Memory Improvement:** The mechanisms through which Preksha Meditation may improve memory involve several cognitive and neurological processes:

1. **Enhanced Attention and Focus:** Preksha Meditation practices that involve concentration on specific bodily sensations or visualizations can enhance attentional control, which is crucial for encoding and retrieving memories (Desbordes et al., 2012).
2. **Neuroplasticity:** Meditation has been shown to promote neuroplasticity, the brain's ability to reorganize itself by forming new neural connections. This is beneficial for cognitive functions such as memory (Lazar et al., 2005).
3. **Stress Reduction:** Reducing stress through meditation can alleviate cognitive impairments associated with high stress levels, thus potentially improving memory performance (Creswell, 2017).

**Empirical Evidence:** In addition to the study by Jain et al. (2020), other research supports the cognitive benefits of meditation, including memory improvement. For example, a meta-analysis by Goyal et al. (2014) highlighted that mindfulness-based interventions, which include techniques similar to those used in Preksha Meditation, are associated with enhancements in cognitive functions, including memory.

**Neurobiological Mechanisms of Preksha Meditation:** Preksha Meditation, rooted in Jain philosophy, integrates mindfulness and self-awareness practices aimed at achieving mental clarity and emotional balance. This meditation technique has garnered attention not only for its psychological benefits but also for its potential neurobiological effects. Understanding the neurobiological mechanisms underlying Preksha Meditation can provide insights into how it influences brain function and mental health.

#### **Neurobiological Mechanisms:**

1. **Structural Changes in the Brain:** Meditation practices, including Preksha Meditation, have been shown to induce structural changes in the brain. Neuroimaging studies have reported increased cortical thickness and enhanced gray matter density in areas associated with attention, emotion regulation, and sensory processing (Lazar et al., 2005). Specifically, Preksha Meditation's focus on bodily awareness and concentration might lead to similar structural adaptations. A study by Goyal et al. (2014) found that mindfulness-based interventions resulted in increased cortical thickness in the prefrontal cortex, a region crucial for executive functions and emotional regulation.
2. **Functional Connectivity and Brain Activity:** Preksha Meditation is associated with changes in brain activity and connectivity. Functional MRI (fMRI) studies have shown that meditation practices can modulate activity in the default mode network (DMN), a network implicated in self-referential thinking and mind-wandering (Desbordes et al., 2012). The DMN's activity decreases

during meditation, suggesting enhanced focus and reduced distraction. Furthermore, Preksha Meditation may increase connectivity between the prefrontal cortex and limbic regions, which is linked to improved emotional regulation and stress resilience (Desbordes et al., 2012).

3. Neurotransmitter Systems: Meditation influences neurotransmitter systems involved in mood and cognitive function. Research on mindfulness and related practices suggests that meditation can alter levels of neurotransmitters such as serotonin and dopamine, which play critical roles in mood regulation and cognitive performance (Goyal et al., 2014). Preksha Meditation, with its focus on mindfulness and self-observation, might modulate these neurotransmitter systems similarly, contributing to improved mood and cognitive functions.

4. Stress Response and Autonomic Regulation: Preksha Meditation impacts the body's stress response systems, primarily through the modulation of the autonomic nervous system. Meditation has been shown to decrease sympathetic nervous system activity (associated with the "fight or flight" response) and increase parasympathetic activity (associated with relaxation and recovery) (Zeidan et al., 2010). This shift in autonomic balance can lead to reduced cortisol levels and improved stress management. Studies have observed that meditation practices like Preksha Meditation help regulate heart rate variability, a marker of autonomic balance and stress resilience (Creswell, 2017).

5. Neuroplasticity and Cognitive Function: Meditation practices, including Preksha Meditation, have been associated with neuroplasticity—the brain's ability to reorganize and form new neural connections. Enhanced neuroplasticity contributes to cognitive improvements such as better attention, memory, and learning capacity (Kabat-Zinn, 2013). Research suggests that meditation-induced neuroplasticity involves changes in brain regions associated with cognitive functions, such as the hippocampus and prefrontal cortex, which are crucial for memory and executive functions (Lazar et al., 2005).

**Results:** Preksha Meditation demonstrates significant potential in reducing stress and anxiety by modulating stress response systems and enhancing emotional regulation. Cognitive benefits include improvements in attention, memory, and executive function, likely due to changes in brain structure and function. Neurobiological mechanisms involve increased cortical thickness, enhanced functional connectivity, and modulation of neurotransmitter systems. Meditation practices also improve autonomic regulation and stress resilience.

**Conclusion:** Preksha Meditation appears to influence various neurobiological mechanisms, including structural and functional changes in the brain, modulation of neurotransmitter systems, regulation of stress responses, and enhancement of neuroplasticity. These effects contribute to the overall cognitive and emotional benefits associated with Preksha Meditation. Future research employing advanced neuroimaging and neurophysiological techniques will further elucidate these mechanisms and their implications for mental health and well-being.

#### References:

- Abomoelak, B., Prather, R., Pragya, S. U., Pragya, S. C., Mehta, N. D., Uddin, P., Veeramachaneni, P., Mehta, N., Young, A., Kapoor, S., & Mehta, D. (2023). Cognitive Skills and DNA Methylation Are Correlating in Healthy and Novice College Students Practicing Preksha Dhyāna Meditation. *Brain sciences*, 13(8), 1214. <https://doi.org/10.3390/brainsci13081214>
- Creswell J. D. (2017). Mindfulness Interventions. *Annual review of psychology*, 68, 491–516. <https://doi.org/10.1146/annurev-psych-042716-051139>
- Dadhich, P., & Shekhawat, P. S.(2018) Improvement In Hematological Profile Through Preksha Meditation , *International Journal of Yoga and Allied Sciences*

- Desbordes, G., Negi, L. T., Pace, T. W., Wallace, B. A., Raision, C. L., & Schwartz, E. L. (2012). Effects of mindful-attention and compassion meditation training on amygdala response to emotional stimuli in an ordinary, non-meditative state. *Frontiers in human neuroscience*, 6, 23050.
- Goyal, M., Singh, S., Sibinga, E. M., Gould, N. F., Rowland-Seymour, A., Sharma, R., Berger, Z., Sleicher, D., Maron, D. D., Shihab, H. M., Ranasinghe, P. D., Linn, S., Saha, S., Bass, E. B., & Haythornthwaite, J. A. (2014). Meditation programs for psychological stress and well-being: a systematic review and meta-analysis. *JAMA internal medicine*, 174(3), 357–368. <https://doi.org/10.1001/jamainternmed.2013.13018>
- Jain, J. (2017). Preksha dhyana: A psychotherapeutic intervention. *Indian Journal of Positive Psychology*, 8(2), 249-25
- Kabat-Zinn, J., Massion, A. O., Kristeller, J., Peterson, L. G., Fletcher, K. E., Pbert, L., Lenderking, W. R., & Santorelli, S. F. (1992). Effectiveness of a meditation-based stress reduction program in the treatment of anxiety disorders. *The American journal of psychiatry*, 149(7), 936–943. <https://doi.org/10.1176/ajp.149.7.936>
- Krishan, R. L. G., Bhaskar, A., & Shekhawat, P. S. (2021) YOGA AND PREKSHA MEDITATION'S EFFECTIVENESS IN ENHANCING MENTAL HEALTH OF ADULTS., *Journal of the Asiatic Society of Mumbai*
- Lazar, S. W., Kerr, C. E., Wasserman, R. H., Gray, J. R., Greve, D. N., Treadway, M. T., ... & Fischl, B. (2005). Meditation experience is associated with increased cortical thickness. *Neuroreport*, 16(17), 1893-1897
- Mehta, V., Mehta, A., Patel, S., Irastorza, L., Rizvi, S. A., Abomoelak, B., Mehta, N., & Mehta, D. (2021). Efficacy of Short Course of Preksha Dhyana for Functional Abdominal Pain Disorder in a Busy Pediatric Clinic. *Frontiers in pediatrics*, 9, 646686. <https://doi.org/10.3389/fped.2021.646686>
- Mahaprajna, A. (1998). *Preksha Meditation: Theory and Practice*. Jain Vishva Bharati Institute.
- Paulson, S., Davidson, R., Jha, A., & Kabat-Zinn, J. (2013). Becoming conscious: the science of mindfulness. *Annals of the New York Academy of Science*, 1303(1), 87-104.
- Sharma, S., Jain, K., Sharma, A. K., Kalia, V., & Jain, V. (2020). Potential application of yoga-Preksha-Meditation to prevent stress-induced anger in healthy adults-a pilot study, *Int J Med. Public Health*. 2020; 10(4):207-212.
- Sanchetee, P., Jain, A., & Agarwal, H. (2017). Preksha meditation and mental health in elderly. *Journal of the Indian Academy of Geriatrics*, 13(3), 131-138
- Somani, N., & Kaur, T. (2019). Impact of mindfulness based preksha meditation training on memory. *Recent Advances in Psychology*, 6(1and2), 14-23
- Zeidan, F., Johnson, S. K., Diamond, B. J., David, Z., & Goolkasian, P. (2010). Mindfulness meditation improves cognition: evidence of brief mental training. *Consciousness and cognition*, 19(2), 597–605. <https://doi.org/10.1016/j.concog.2010.03.014>



---

## **Bridging the Gap from Residential Care of Erstwhile Orphans to Accommodation in the Society: A Humanitarian View on Their Social Reintegration**

**Harshada Rajput**  
**Assistant Professor,**  
**Vivekanand Education Society's College of Law, Chembur,**  
**Mumbai Maharashtra**

### **Abstract:**

The journey from institutionalized care to independent living for erstwhile orphans who have grown up in orphanages, foster care, or similar residential settings can be daunting and fraught with challenges. While they often leave these institutions at the legal age of adulthood, typically 18, they face a critical transition: reintegrating into a society that may seem unfamiliar, unwelcoming, or even indifferent to their unique needs. Their ability to adapt and succeed in society hinges not just on their personal resilience, but also on the support systems they receive and the societal structures in place to accommodate them.

This draft explores the complex process **of social reintegration** for these young adults, who, though of legal age, still carry the emotional and social scars of their formative years spent without parental care. It examines the barriers they face, the role of society, and how humanitarian efforts can help bridge the gap between **residential care** and **societal accommodation**.

**Keywords** - social reintegration, independent adulthood, public policy, identity, limited education.

### **Introduction -**

The Law provides about the best interest of the children in need of care and protection.<sup>1</sup> Social reintegration process for individuals who grew up without parental care is complex and fraught with obstacles. These challenges require comprehensive support systems, including mental health services, mentorship programs, educational opportunities, and legal assistance, to help them navigate the transition to adulthood. Moreover, societal empathy and understanding are key to breaking down stigma and promoting a more inclusive environment where these individuals can thrive.

### **Methodology –**

The methodology of this research paper will employ doctrinal method approach. This approach allows for a comprehensive analysis of the various dimensions of the social reintegration of erstwhile orphans and provides both broad statistical insights and in-depth, personal perspectives. The methodology will also integrate humanitarian and rights-based perspectives to understand how societal systems can better support the successful transition of these individuals from residential care to independent living.

### **Objectives of the Study**

1. To Identify the Role of Social Support Systems in Facilitating Successful Reintegration
2. To Examine the Effectiveness of Existing Transitional Programs and Service.
3. To Explore the Humanitarian and Rights-Based Approaches to the Social Reintegration of Erstwhile Orphans

---

<sup>1</sup>Juvenile Justice Act, 2015



### Research Question-

This paper seeks to depict care leavers' situation from when they leave the residential care home. It strives to portray the transition-out-of-care period and nature of their social reintegration back into society.

### Brief Background-

#### 1. Understanding the Needs of Erstwhile Orphans

Before delving into the specifics of social reintegration, it is vital to understand the unique needs and experiences of individuals raised in institutional care. Process of rehabilitation and social reintegration is the aim of the government to put up into the J.J. Act,2015.<sup>2</sup>

#### *Social and Economic Challenges*

- Lack of Sociey Support: Many orphans, upon leaving residential care, find themselves without a reliable family or community network to provide emotional, financial, or practical support.children's rehabilitation and social integration from the institutions to the society is one of the most challenging parts of institutional care.<sup>3</sup>
- Inadequate Education and Skills: Although some orphanages and foster systems strive to provide education and vocational training, the quality and consistency of these opportunities may fall short. As a result, many young adults lack the qualifications or skills needed to find stable, well-paying jobs.
- Financial Instability: Without family support, erstwhile orphans often struggle with financial independence. They may face challenges in securing stable housing, managing personal finances, or accessing healthcare.

#### *Legal and Bureaucratic Obstacles*

The Children in need of care and protection who are leaving institutional care on attaining eighteen years of age, may be provided financial support to help them to re-integrate into the mainstream of the society.

The term used in section 39(4) of Juvenile justice Act,2015 i.e. **may be** itself speaks inability to provide facilities to the young adult's post leaving the care.

- **Identity and Documentation Issues**: Some individuals may leave residential care without proper documentation, s<sup>4</sup>uch as birth certificates or national identity cards, which can severely hinder their ability to access essential services like education, healthcare, and employment.
- **Housing Insecurity**: The lack of family ties can make it difficult for erstwhile orphans to find stable housing. They may face discrimination when seeking accommodation or struggle to afford rent without a stable income.

#### 2. The Role of Society in Bridging the Gap

The challenges faced by erstwhile orphans cannot be overcome in isolation. It is essential that society, government bodies, civil society organizations, community groups, and the private sector come together to provide a comprehensive support system that helps these individuals transition successfully into adulthood.

#### *A Holistic Approach to Support Systems*

- Mentorship and Role Models: Former orphans often lack the guidance that family members or close mentors provide in the transition to adulthood. Mentorship programs where

<sup>2</sup>Chapter VII Rehabilitation and Social Re-integration of J.J. Act,2015.

<sup>3</sup> "Child care institutions in India: Investigating issues and challenges in children's rehabilitation and social integration" by Evergreat Wanglar, Department of Social Work, Indira Gandhi National Tribal University, Regional Campus Manipur, India., published in December 2020.

<sup>4</sup>Sub section 4 of Section 39 of Juvenile Justice Act, 2015.

trained adults provide emotional, social, and career guidance can have a transformative impact on these young adults' ability to navigate challenges.

- **Social and Peer Support Networks:** Community-based programs can provide a space for erstwhile orphans to connect with peers who have had similar experiences. These social networks can serve as a source of emotional support and offer practical assistance as individuals adapt to independent living.
- **Legal Assistance:** Ensuring that these young adults have access to legal support, such as assistance with documentation, access to social welfare programs, and housing rights, is critical to helping them navigate the bureaucratic hurdles they face in their reintegration process.

#### ***Affordable Housing Solutions***

A significant barrier to social reintegration is access to stable housing. As orphans transition into adulthood, they often find themselves without a safety net and with little access to affordable housing. Governments, in collaboration with NGOs and private developers, must work together to create **affordable housing** programs tailored to the needs of former foster youth and orphans.

- **Transitional Housing Programs:** These programs can provide temporary accommodation for young adults aging out of care while they find stable housing or employment. Such programs often offer support services like job training, financial literacy, and counseling.
- **Rental Subsidies and Housing Vouchers:** Governments can introduce rental subsidies or housing vouchers specifically designed to assist former orphans in securing long-term, stable housing those who could not secured seat in an Aftercare facility.

#### ***Access to Employment and Economic Independence***

Without the support of assistants of prior institute or any other government scheme, erstwhile orphans often find it difficult to secure meaningful employment. To break the cycle of poverty and ensure economic independence, it is essential to create pathways to further education and an employment:

- **Vocational Training and Education Programs:** Governments and NGOs can offer targeted vocational training and scholarships for higher education, which will enable young adults to acquire the skills necessary to enter the workforce.
- **Job Placement Services:** Providing job placement services, including internships, apprenticeships, and career counseling, can help these individuals gain valuable work experience and eventually secure permanent, stable employment.
- **Entrepreneurship Support:** For those interested in self-employment, micro-financing programs and business training workshops can offer financial support and guidance, enabling former orphans to create their own businesses.

#### **4. Legal and Policy Reforms for Social Reintegration**

##### ***Ensuring Legal Protection***

Many young adults aging out of care are vulnerable to exploitation, discrimination, and abuse. It is imperative that governments enact policies that provide **legal protection** to ensure these individuals are not left to navigate adulthood without support.

- **Clear Legal Frameworks:** Governments must implement policies that protect the rights of erstwhile orphans, ensuring that they have access to essential services such as healthcare, education, housing, and employment.
- **Youth-Centered Legislation:** Laws should be introduced that recognize the unique vulnerabilities of individuals aging out of care and provide specific protections to this group, such as extending care or financial support until they reach a certain level of independence.

### **Awareness and Advocacy Campaigns**

A significant obstacle to the successful reintegration of orphans into society is the stigma and discrimination they face. Awareness campaigns that aim to educate the public about the challenges faced by this group can play a crucial role in changing societal attitudes and fostering a more inclusive society. According to the Government of India, aftercare is defined as "making provision for support, financial or otherwise, to persons, who have completed the age of eighteen years but have not completed the age of twenty-one years and have left any institutional care to join the mainstream of the society"<sup>5</sup> but, in practice, implementation and oversight at the grassroots level remain very limited.<sup>6</sup> Despite the growing body of international research on the significance of after-care for these youths, in India efforts for their effective reintegration into society and regular follow-up are sporadic and based on individual organisation and social worker's efforts.<sup>7</sup>

- **Public Education Campaigns:** These campaigns can highlight the needs of erstwhile orphans, encourage empathy, and dispel stereotypes about individuals raised in care systems. They can also promote the importance of community support and the role of society in offering a safety net for vulnerable individuals.

### **2. The Role of Social Support Systems in India**

A robust support system is vital to easing the transition of erstwhile orphans into society. Various social interventions, including government policies, non-governmental organizations (NGOs), and community-based programs, play crucial roles in assisting their reintegration.

#### ***Government Policies and Legal Framework***

In India, the legal framework governing children in need of care and protection is enshrined in the Juvenile Justice (Care and Protection of Children) Act, 2015 and the National Policy for Children, 2013. These laws address the needs of children in institutional care and promote their right to education, health, and rehabilitation. However, studies shows that while these policies ensure that children receive basic services, they often fall short of providing a holistic framework for social reintegration once the child turns 18. For instance, the lack of post-18 support means that erstwhile orphans may not be able to access educational grants, healthcare, or social welfare benefits after they leave institutional care.

The extension of care services beyond 18 years, a policy that has been introduced in a few Indian states, such as Delhi and Maharashtra. The provision of aftercare services is crucial for ensuring that these young adults are not abandoned once they legally become adults, but continue to receive support in terms of accommodation, education, and employment opportunities.

- suggests that fostering community solidarity is essential to reintegrating these young adults into society. Rather than viewing them as "outsiders," the community should see their reintegration as a shared responsibility. Empowering local communities to provide care, support, and guidance is key to creating an environment where former orphans can thrive.

<sup>5</sup>Section 2(5), JJ Act, 2015

<sup>6</sup>"Designing a mentorship curriculum for assisting social reintegration among youth in institutional care in India", by Rachna Mishra & Satarupa Dutta, School of Arts and Sciences, Ahmedabad University, India, Senior Research Consultant, SIGMA Foundation, India, published in 2024.

<sup>7</sup>"Life after leaving care: Experiences of young Indian girls" by Satrupa Datta, Institute of Social Sciences, V.N. Purav Marg, Mumbai 400088, India, published in 2016.

### 5. A Call to Action: The Need for Collective Effort

The successful reintegration of erstwhile orphans into society requires a collective effort. Governments, NGOs, community organizations, and the private sector must work together to create a system that is supportive, inclusive, and responsive to the needs of these young adults.

- Collaboration between Stakeholders: It is essential that policymakers, care providers, educators, employers, and mental health professionals collaborate to provide a comprehensive support system that addresses both immediate needs and long-term challenges.
- Empowering Former Orphans: Ultimately, the goal is to empower these individuals to live fulfilling, independent lives. By offering the right tools—education, emotional support, employment opportunities, and legal protections—we can help them overcome their past and build a brighter future.

#### **Expected Outcome:**

The study aims to provide a comprehensive understanding of:

- The psychosocial, economic, and legal challenges faced by erstwhile orphans in India.
- The role of support systems, including government policies, NGOs, and community organizations, in facilitating their reintegration.
- Recommendations for improving aftercare services, education, employment programs, and housing to support successful accommodation in society.

By combining both quantitative and qualitative approaches, the research will offer actionable insights that can inform policy-making and the development of more inclusive and humanitarian frameworks for supporting young adults transitioning from residential care to independent living.

#### **Conclusion:**

Bridging the gap from residential care to accommodation in society is not just about finding a home or a job—it is about offering a humanitarian approach that values the dignity, rights, and potential of every individual, regardless of their past. By recognizing the unique needs of erstwhile orphans, providing adequate support systems, and fostering a more inclusive society, we can ensure that these young adults are not left behind, but are instead empowered to thrive as full, contributing members of society.

## ભારતના સ્વાતંત્ર્ય સેનાની ઉદ્દેયા ચમાર, માતાદિન વાલ્મીકિ અને બાંકે ચમાર

ચાવડા જયસુખ કરસનભાઈ  
આસિસ્ટન્ટ પ્રોફેસર (ઈતિહાસ)

સુરેન્દ્રનગર યુનિવર્સિટી, પીએચ. ડી સ્કોલર,  
ઈતિહાસ ભવન, મહારાજા કૃષ્ણકુમારસિંહજી ભાવનગર યુનિવર્સિટી, ભાવનગર

સારાંશ :-

ઈ.સ 1857ના સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામમાં ભારતના નામી, અનામી એવા ઘણા ક્રાંતિકારીઓ અને સ્વાતંત્ર્ય સેનાનીઓએ પોતાનું યોગદાન આપ્યું છે આજે આપણે ફક્ત નામચિહ્ન સ્વાતંત્ર્ય સેનાનીઓને ઓળખીએ છીએ. પણ આપણે હાંસિયામાં રહેલા ક્રાંતિકારીઓ કે સ્વાતંત્ર્ય સેનાનીઓને ઓળખતા નથી. ખાસ તો અનુસુચિત જાતિના ક્રાંતિકારીઓ જેવા કે બાંકે ચમાર, ઉદ્દેયા ચમાર, માતાદિન વાલ્મીકિ, મહાવીરીદેવી અને કોળી સમાજના ઝલકારીબાઈને દગાથી પકડ્યા અને અંગ્રેજ સરકારે તેમણે મોતની સજા આપી હતી. આપણે આ મહાન ક્રાંતિકારીઓને કાયમ યાદ રાખવા જોઈએ અને તેમની બહાદુરીને ઈતિહાસમાં મહત્વનું સ્થાન આપવું જોઈએ.

**Keywords :-** સ્વાતંત્ર્ય સેનાની, સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામ, બાંકે ચમાર, ઉદ્દેયા ચમાર, માતાદિન વાલ્મીકિ

**પ્રસ્તાવના :-** ઈ.સ 1857ના સ્વાતંત્ર્ય સેનાનીઓ, એવા નેતાઓ હતા, જેમણે દેશને આઝાદી અપાવવા માટે પોતાનો જીવ જોખમ માં મુક્યો હતો . ભારતને આઝાદી અપાવવા માટે તેઓએ ઘણી બધી યાતનાઓ શોષણ અને કષ્ટોમાંથી પસાર થવું પડ્યું હતું.

અંગ્રેજો ભારતમાં ઈ.સ. 1600 માં આવ્યા અને ઈ.સ 1615માં સર ટોમસ રો એ મોઘલ બાદશાહ જહાંગીર પાસે વેપાર કરવાની પરવાનગી માંગી હતી અને બાદશાહ જહાંગીરની પરવાનગી મળતા અંગ્રેજોએ ભારતમાં વેપારની સાથે સાથે ભારતના રાજાઓ સાથે તાલમેલ બેસાડ્યો અને ધીમે-ધીમે ભારત ના રાજકારણમાં રસ લીધો. 23 જૂન 1757 માં પ્લાસી નું યુદ્ધ સીરાજ-ઉદ-દૌલા ને હરાવીને બંગાળના 24 પરગણા કબજે કર્યા હતા.

ત્યારબાદ, અંગ્રેજો એ 18 ઓક્ટોબર 1764 ના રોજ બક્સર નું યુદ્ધ કરીને બંગાળ, બિહાર અને ઓરિસ્સા કબજે કર્યા હતા .આમ, ભારતના રાજકારણમાં પલટો આવ્યો અને ભારતની જમીન પર બ્રિટનના શાસનની શરૂઆત થઈ હતી. આમ, અંગ્રેજોએ ઈ.સ 1757 થી લઈને ઈ.સ.1947 સુધી એટલે કે 150 વર્ષ સુધી ભારત પર શાસન કર્યું હતું.

**ઉદ્દેયા ચમાર એક સ્વાતંત્ર્ય સેનાની તરીકે :-**

પણ ઈ.સ.1757 થી. ઈ.સ. 1857 ના 100 વર્ષના સમયગાળા દરમિયાન ભારતના લોકો ખેડૂતો, મજૂરો અને રાજા, મહારાજાઓ વગેરે જાગૃત થયા હતા. કેમકે અંગ્રેજોએ ભારતના આર્થિક ક્ષેત્રને ડામાડોર કરી નાખ્યું હતું. અને ભારતના ઉધોગ ધંધા પડી ભાંગ્યા હતા. તેથી ભારતના ઘણા લોકોએ તેનો વિરોધ કર્યો હતો. અને ઈ સ 1857 એટલે કે અંગ્રેજોની વિરુદ્ધ ભારતના સૈનિકો અને સામાન્ય જનતાએ કરેલો પ્રથમ સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામ જેના 100 વર્ષ પુરા થયા. અને અંગ્રેજો વિરુદ્ધ મંગલ પાંડેએ સ્વતંત્રતા માટે ફૂકેલું પ્રથમ બ્યુગલ હતું .પણ , હકીકત માં મંગલ પાંડે પાછળ પણ માતાદિન વાલ્મીકી જવાબદાર હતા.

‘ઈ.સ. 1857 ના વર્ષને ભારતનો પ્રથમ સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામ કહેવામાં આવે છે’- એસ.એન. સેન

પ્રથમ સ્વાતંત્ર્ય સેનાની તરીકે, તિલકા માંઝી અને તેમના સાથીઓએ અંગ્રેજો સામે યુદ્ધની આગ ચાલુ રાખી. આ પછી 1804માં અંગ્રેજો સામે ક્રાંતિનું બ્યુગલ વાગ્યું. છતરીના નવાબ નાહર ખાન અંગ્રેજ શાસનના કટ્ટર વિરોધી હતા. 1857માં, અલીગઢ ક્રાંતિના પચાસ વર્ષ પહેલાં 1804માં, અંગ્રેજો સામે ક્રાંતિનું બ્યુગલ વાગ્યું હતું. છતરીના નવાબ નાહરખાનનો પુત્ર દુદેખાન બ્રિટિશ શાસનનો કટ્ટર વિરોધી બની ગયો હતો. તેમના પુત્રો રણમસ્તખાન, અશરફખાન અને રોશનખાન ખૂબ બહાદુર

હતા. તેઓએ 1804 અને 1807 માં અંગ્રેજો સાથે ભીષણ યુદ્ધ લડ્યું હતું. તેમના અંતિમ શુભચિંતક વીરવર ઉદૈયા ચમાર હતા. જેમણે સેંકડો અંગ્રેજોની હત્યા કરી હતી. ઉદૈયા ચમારે ગણૌરીના ખાલી કિલ્લામાં ગનપાઉડરની ખાણો નાખી હતી. અંગ્રેજ સૈનિકો કિલ્લામાં પ્રવેશતાની સાથે જ સુરંગો પોતાની મેળે ફૂટવા લાગી. ગણૌરીના કિલ્લામાં સેંકડો અંગ્રેજોને દફનાવવામાં આવ્યા હતા.

વીરવર ઉદૈયા ચમારને પાછળથી અંગ્રેજોએ પકડી લીધા અને તે મહાન ક્રાંતિકારીને ફાંસી આપવામાં આવી હતી. વીરવર ઉદૈયા ચમારની મહિમા ગાથા આજે પણ પ્રદેશના લોકોમાં પ્રચલિત છે.

**માતાદિન વાલ્મીકી સ્વાતંત્ર્ય સેનાની તરીકે :-**

જે સ્વતંત્રતા સંગ્રામ 31 મે 1857 ના રોજ થવાનો હતો તે 10 મે 1857ના રોજ થઈ ગયો. કેમકે અંગ્રેજોએ લશ્કરમાં એનિફિલ રાઈફલ નો ઉપયોગ શરૂ કર્યો હતો. જેમાં, કારતુસને મોઢા વડે તોડવામાં આવતી હતી. જેની પાછળ ગાય અને સુવરની ચરબી લગાડવામાં આવતી હતી. જેના કારણે મંગલ પાડેએ તેનો વિરોધ કર્યો હતો અને ૧૦ મે ૧૮૫૭ના રોજ ઉશ્કેરાઈને લેફ્ટનન્ટ બાગ પર ગોળી ચલાવી અને તેને ઘાયલ કર્યો હતો. અને બીજા એક અધિકારીને પણ ઘાયલ કર્યા હતા આમ પ્રથમ સ્વાતંત્ર્ય સેનાની મંગલ પાડેને 8 એપ્રિલ 1857 ના રોજ ફાંસી આપવામાં આવી હતી.

ભારતના લોકો, બ્રાહ્મણવાદ અને વામપંથીઓ મંગલ પાડે ને પ્રથમ સ્વાતંત્ર્ય સેનાની માને છે. પણ હકીકત મા મંગલપાડે ને જાગૃત કરનાર વાલ્મીકી માતાદિન હતા .આ પછી દેશ 1857ની ક્રાંતિ તરફ આગળ વધી રહ્યો હતો. 1857ની ક્રાંતિ એવી હતી કે જેના પછી અંગ્રેજો અને ભારતીયો વચ્ચે સતત સીધી લડાઈ ચાલતી રહી. 1857ની ક્રાંતિને આઝાદીના પ્રથમ યુદ્ધ તરીકે જાહેર કરવામાં આવે છે. આ સમગ્ર ક્રાંતિનો શ્રેય ભારતીય ઇતિહાસકારો મંગલ પાડેને આપે છે. પરંતુ વાસ્તવમાં માતાદિન વાલ્મીકી આ ક્રાંતિના આર્કિટેક્ટ હતા.

માતાદિનના વડવાઓ બ્રિટિશ શાસન દરમિયાન સરકારી નોકરીમાં હતા. તેથી, ટૂંક સમયમાં માતાદિનને બેરકપુરની ફેક્ટરીમાં ખલાસીની નોકરી પણ મળી ગઈ. અહીં બ્રિટિશ આર્મીના સૈનિકો માટે કારતુસ બનાવવામાં આવતી હતી. બધા હિંદુ સૈનિકો આ કારતુસને મોઢાથી ખેંચીને પોતાની બંદૂકોમાં ભરીને વાપરતા હતા . અંગ્રેજ સૈન્યની નજીક હોવાથી તેની માતાદિન ના જીવન પર નોંધપાત્ર અસર પડી. માતાદિન ને પણ કુસ્તીનો શોખ હતો. તે આ કુસ્તી કળામાં નિપુણતા મેળવવા માંગતા હતા. પરંતુ અસ્પૃશ્ય હોવાને કારણે કોઈ પણ હિંદુ ગુરુ તેમને પોતાનો શિષ્ય બનાવવા તૈયાર ન થતા. આખરે કુસ્તી શીખવાની માતાદિનની ઈચ્છા પૂરી થઈ અને એક મુસ્લિમ ખલીફા ઈસ્લાઉદ્દીન જેઓ પલટન નંબર 70 માં બેન્ડ વગાડતા હતા. માતાદિનને કુસ્તી શીખવવા માટે સહમત થયા. કુશતીની આ કળાને કારણે જ માતાદિનને મંગલ પાડેની ઓળખ થઈ. પરંતુ માતાદિનની જાતિ જાણ્યા પછી તરત જ મંગલ પાડેનું તેના પ્રત્યેનું વર્તન બદલાઈ ગયું.

એક દિવસ થાકેલા, તરસ્યા અને ગરમીમાં ભીજાયેલા માતાએ મંગલપાડે પાસે પાણીનો લોટો માંગ્યો. મંગલ પાડેએ તેને એક અસ્પૃશ્યની ધૃષ્ટતા ગણીને તેને ઠપકો આપ્યો અને કહ્યું, ‘અરે ભંગી, શું તું મારા ઘડાને સ્પર્શ કરીને અપવિત્ર કરીશ?’ તે પછી શું હતું, આ અપમાનથી ગુસ્સે થઈને માતાદિને રહસ્ય જાહેર કર્યું, જે વર્ષોથી દબાયેલું હતું, અને જેણે 1857 ની ક્રાંતિનો પાયો નાખ્યો હતો. માતાદિને મંગલ પાડેને પડકાર ફેંક્યો અને કહ્યું કે પંડિત, “તું અને તારા જેવા ચૂંટિયાધારી ગાય અને સુવરની ચરબીના કારતુસ મોઢાથી કાપીને બંદૂકોમાં ભરી દે ત્યારે તારી વિદ્વતા ક્યાં જાય છે?”

મંગલ પાડે આ સાંભળીને ચોંકી ગયો. ટૂંક સમયમાં માતાદિનની આ વાત દરેક બટાલિયન અને દરેક છાવણીમાં ફેલાઈ ગઈ. મતાદિને કહેલું કડવું સત્ય સૈન્યમાં વિદ્રોહની સ્થિતિનું નિર્માણ કરે છે. બધા હિંદુ સૈનિકો સળગી રહ્યા હતા. 1 માર્ચ, 1857ના રોજ મંગલ પાડેએ પરેડ ગ્રાઉન્ડમાં લાઈનની બહાર આવીને એક અધિકારી સાથે દુર્વ્યવહાર કર્યો અને મંગલ પાડે એ મેજર બાગ ને ગોળી મારી અને અન્ય એક ને ઘાયલ કર્યો. આમ, મંગલપાડે એ પોતાની બન્દુક પગ મા રાખી આપઘાત કરવાની કોશિશ કરી પણ, તે તેમાં સફળ ના થયો . જેના પછી બળવો વધતો ગયો. આ પછી મંગલ પાડેને ફાંસી 8 એપ્રિલ 1857 ના રોજ ફાંસી આપવામાં આવી હતી. મંગલ પાડેની ફાંસી વિશે બધા જાણે છે. પરંતુ હજુ પણ ઘણા બધા લોકો એક સત્યથી અજાણ છે.



વિદ્રોહ ફેલાવવાના ગુનામાં માતાદિનની અંગ્રેજોએ ધરપકડ કરી હતી, ત્યારબાદ માતાદિનને પણ અંગ્રેજોએ ફાંસી આપી હતી.

આ રીતે, માતાદિન વાલ્મીકિએ જે ચિનગારી નાંખી હતી તે આખરે 1947માં ભારતની આઝાદીનું કારણ બની. એવા જ સ્વાતંત્ર્ય સેનાની બાંકે ચમાર પણ હતા. માતાદિન વાલ્મીકી, ઉદૈયા ચમાર, વિરાપાસી, ચેતરામ જાટવ, રામચંદ્ર, રામપતિ ચમાર, ઉદાદેવી પાસી, મહાવીરીદેવી વાલ્મીકી, જલકારીબાઈ કોળી અને તેમના પતિ પુરણસિંહ કોળી વગેરે ભારત ના 1857 ના સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામમાં હાસ્યમાં રહેલા મહાન સેનાનીઓ હતા .

ભારતના મહાન સ્વાતંત્ર્ય સેનાની એવા ઉદૈયાચમાર ,માતાદિન વાલ્મીકી અને બાંકે ચમાર હતા. જેઓએ પોતાની વીરતા અને કુરબાની આપી .આપણા ભારત દેશને આઝાદી અપાવવા મહત્વનું યોગદાન આપ્યું હતું. બસ ફરક એટલો જ હતો કે તેઓ નીચલી જાતિના હોવાથી આજ દિન સુધી હાસ્યમાં જ રહ્યા છે. બાંકે ચમાર 1857ની ક્રાંતિના મહાન સર્જક હતા અને અંગ્રેજોએ તેમની સાથેના 18 ક્રાંતિકારીઓને ફાંસી આપી હતી. બાંકે ચમાર એક સ્વાતંત્ર્ય સેનાની હતા. જેઓ 1857ના ભારતીય સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામમાં મહત્વનો ભાગ ભજવનાર એક મહાન સ્વાતંત્ર્ય સેનાની હતા. ઉત્તર પ્રદેશના જૌનપુર જિલ્લાના બ્રિટિશ ઈસ્ટ ઈન્ડિયા કંપની વિરુદ્ધ પ્રારંભિક બળવાનું નેતૃત્વ કર્યું હતું. જ્યારે ઇતિહાસકારોએ ઉચ્ચ જાતિના મંગલ પાંડે ને ઊંચ વર્ગનો નાયક ગણ્યો છે. ત્યારે વાસ્તવિકતા એ પણ હતી કે ચમાર જેવા દલિત પ્રતિકાર લડવૈયા એવા બાંકે ચમાર હતા. તેમણે બ્રિટિશ સંસ્થાનવાદી શાસનથી આઝાદીની લડાઈમાં નેતૃત્વ કરી અને અંગ્રેજો સામે લડાઈ લડી હતી.

**બાંકે ચમાર સ્વાતંત્ર્ય સેનાની તરીકે :-**

બાંકે ચમાર કુઆરપુર ગામ મહલીશહરનાં જૌનપુર જિલ્લાના ઉત્તરપ્રદેશના રહેવાસી હતા. બાંકે ચમાર અને તેમના સૈનિક મિત્રોએ કરેલો બળવો નિષ્ફળ રહ્યો હતો અને તેમની સાથે રહેલા 18 બળવાખોરોની ધરપકડ અંગ્રેજો દ્વારા કરવામાં આવી હતી. ‘બાંકે ચમાર’ જેણે જૌનપુરને ગૌરવ અપાવ્યું જેને ઇતિહાસમાં સ્થાન મળ્યું ! ઈનામ રૂપિયા 50,000 !!!

બાંકે તેમના સાથીઓને પૂછતા. અંગ્રેજ સરકારે મારા પર કેટલું ઈનામ રાખ્યું છે, પૂરા પચાસ હજાર સરદાર. આમ, બાંકે ચમાર 1857નાં સમયના મહાન નાયક ક્રાંતિકારી અને અંગ્રેજ સરકારને હંફાવનાર અને ક્રાંતિકારીઓની ઊંડી છાપ પાડનાર એક યોદ્ધા હતા. ઇતિહાસમાં આજ દિન સુધી સૌથી મોટું ઈનામ અંગ્રેજ સરકારે બાંકે ચમાર પર રાખ્યું હતું. જેની કિંમત 50,000 રૂપિયા એ સમયની હતી. આજના સમયમાં તેની કિંમત 30 કરોડ જેટલી થાય છે અને તે પણ 164 વર્ષ પહેલા એટલે કે 1857ના સંગ્રામના સમય દરમિયાન અંગ્રેજ સરકારે બાંકે ચમાર ની પુરી ગેંગ નું ઈનામ 2 લાખ થી વધારે રાખ્યું હતું. બાંકે ચમાર અને તેમના સાથીઓની માહિતી કોઈ ભારતીય ગદ્યાર દ્વારા આપવામાં આવી હતી અને સાથે તેમના 18 સાથીઓની ધરપકડ કરવામાં આવી હતી.

એ સમયમાં ભારતમાં ગદ્યારો રાયચંદોની કમી નહોતી. ગદ્યારોને કારણે જ રાષ્ટ્ર ગુલામ બન્યું હતું એવું કહી શકાય ? ધરપકડ કતલ કે ફાંસી ચડવાના આરોપી પણ આ ગદ્યારો જ હતા. જૌનપુરના વિસ્તારમાં બાંકે ચમાર ની ધાક હતી. તેમનું 40 ,50 નું ટોળું અચાનક આંધીની જેમ આવતું અને અંગ્રેજ સૈનિકો ની છાવણી તહસ નહસ કરીને ક્યારે જતું રહેતું એ અંગ્રેજો ને ખબર પણ નહોતી રહેતી . શિવાજીની આ ગેરીલા યુદ્ધ પદ્ધતિથી બાંકે ચમાર અને તેમના સૈનિકો એ અંગ્રેજો ને સારો એવો પાઠ ભણાવ્યો હતો .

આમ, બાંકે ચમારે જૌનપુર અને કાનપુરના ઘણા જ અંગ્રેજો અને અંગ્રેજ અધિકારીઓને મૃત્યુદંડ આપ્યો હતો. આમ, અંગ્રેજોએ ભારતીય ને 50,000 રૂપિયા ના ઈનામ ની જાહેરાત કરી. કોઈ પણ વ્યક્તિ બાંકે ચમાર ને જીવતો અથવા મરેલો હાજર કરશે અથવા બાંકે ચમાર વિશે ખબર આપશે તો તેને અંગ્રેજ સરકાર 50000 રૂપિયા નું ઈનામ આપશે .આ ખબર ની વાત બાંકે ચમાર ને મળતા તેઓ હસી પડ્યા હતા અને તેઓએ જાહેર કર્યું કે 50 કોસ ની ત્રિજ્યામાં કોઈપણ અંગ્રેજને જીવતો છોડી મૂકવામાં આવશે નહીં. આમ આવડું મોટું ઈનામ સાંભળતા જ ગદ્યારોએ પોતાની ગદ્યારી કરી હતી અને બાંકે અને તેમના સાથેની

માહિતી અંગ્રેજ સરકાર સુધી પહોંચાડી હતી. અંગ્રેજ સરકારે કોઈપણ જાતના વિલંબ વગર બાંકે ચમાર અને તેમના સાથેઓને પકડીને ફાંસીએ ચડાવી દીધા હતા.

આ પછીથી બાંકે ચમારનું નામ ઇતિહાસમાંથી ભૂંસાઈ ગયું છે.

- ના તો કોઈ વાદળી વસ્ત્રધારીઓએ તેમને યાદ કર્યા છે,
- ના તો કોઈ ઉત્તર પ્રદેશના નેતાઓએ,
- ના તો કોઈ દલિત નેતાઓએ બાંકે ચમારની માહિતી આપી.

#### સમાપન:-

આમ, આજ દિન સુધી 50,000 ઈનામ ની વાર્તા બ્રિટિશરાજ ફાઈલોમા જ રહી ગઈ હશે અને બાંકે ચમાર નામના સેનાની ની શહાદત પણ ત્યાં જ દબાઈ ગઈ હશે અને તેમના 18 સાથીઓની પણ શહાદત ત્યાં જ દબાઈ ગઈ હશે. આમ, કહી શકાય કે ભારતના 1857ના સંગ્રામના સ્વાતંત્ર્ય સેનાની એવા ઉદય ચમાર, માતાદિન વાલ્મીકી અને બાંકે ચમારનું યોગદાન ખૂબ જ મહત્વનું છે. ભારતના ઇતિહાસમાં તેમને સ્થાન આપવામાં આવ્યું નથી. છતાં, ભારતના મહાન સ્વાતંત્ર્ય સેનાનીઓ ને આજે પણ તેમની શૂરવીરતા, મહાનતા અને બલિદાન ને કારણે તેમના પ્રદેશોમાં યાદ કરવામાં આવે છે.

આઝાદી ના અમૃત મહોત્સવના 75મા વર્ષે આપણે આપણા હાસ્યમા રહેલાં સ્વાતંત્ર્ય સેનાનીઓને યાદ કરીએ અને તેમના વિશે લોકો સુધી માહિતી પહોંચે તેવા પ્રયાસ કરીએ ...

#### સંદર્ભસૂચિ:-

1. શિશિર કર્મેન્દુ - 1857 की राजक्रांति -विचार और विश्लेषण-अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लिमिटेड - नई दिल्ली
2. डॉ. सतीशकुमारसिंह- 1857 के विद्रोह में दलितवर्ग का योगदान एक ऐतिहासिक मूल्यांकन-प्रथम संस्करण 2021-उत्तरप्रदेश
3. नैमिशराय मोहनदास -वीरांगना झलकारीबाई-पहला संस्करण 2003 -प्रकाशक-राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड-दिल्ली
4. शब्दकोश: भारत नो स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947)’, ખંડ 2 ,ભાગ 1 અને 2 (ઉ.પ્ર, મ.પ્ર,રાજસ્થાન છત્તીસગઢ અને જમ્મુ-કાશ્મીર ના 3500 થી વધારે શહીદોની યાદી શામેલ છે )
5. बट्टी. नारायण -उत्तर भारत में महिला नायक दलित अभिकथनी :संस्कृति पहचान और राजनीति 1 से 99, 14 नवम्बर 2006
6. डी. सी. दिनकर - (2008) स्वतंत्रता संग्राम में अच्छूतो का योगदान - गौतम बुक सेंटर -ISBN



## महिला एवं महिला सशक्तिकरण

Patel Hasmitababen Vallabhbbhai  
Ph.D. Scholar – Hindi  
Veer Narmad South Gujarat University, Surat

### सारांश

आज के आधुनिक समाज का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न महिला एवं महिला सशक्तिकरण के साथ जुड़ा हुआ है। महिला सशक्तिकरण अर्थात् महिलाओं में होने वाली उस शक्ति का प्रवाह जिससे वह अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं लेकर परिवार एवं समाज में सम्मान पूर्वक रह सके। समाज में वे सारे अधिकार उन्हें भी प्राप्त हो जो एक पुरुष को जन्मजात ही प्राप्त हो जाते हैं। आज के समाज में सरकार एवं महिलाएं इस सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ चुकी है और कई महिलाएं आगे बढ़ने के प्रयास में जुटी हुई हैं। कई अड़चनें आज के समय में भी महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में बाधक साबित हो रही हैं। परंतु यदि महिलाएं अपना सफल मनोबल बना लें, तो वे इन बाधाओं को दूर कर सशक्त बन सकती हैं। अतः महिला सशक्तिकरण हेतु स्वयं महिलाओं को ही जागरूक होकर आगे बढ़कर अपने अधिकारों को पाने के लिए दृढ़ निश्चय होना पड़ेगा। सशक्तिकरण का मतलब सिर्फ महिलाओं को सफल होने के लिए जरूरी साधन देना ही नहीं बल्कि इसमें उन सभी सामाजिक तत्वों को एक चुनौती देना एवं उनमें परिवर्तन लाना भी है, जो उन्हें आगे बढ़ने से रोकते हैं।

### प्रस्तावना

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता”

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। इस परंपरा का पालन करने वाली हमारी संस्कृति में नारी को देवी का स्थान तो दे दिया परंतु उसे पुरुष के समान ही एक मनुष्य होने का गौरव प्राप्त करने में कई वर्ष लग गए। नारी को भी पुरुष के समान जीवन व्यतीत करने और अपने जीवन से जुड़े विविध निर्णय लेने का अधिकार अवश्य होना चाहिए। इस अधिकार की अपेक्षा ही महिला सशक्तिकरण के पद पर अग्रसर होने का पहला कदम है।

### महिला सशक्तिकरण का अर्थ एवं स्वरूप :

सामान्य शब्दों में कहे तो महिला सशक्तिकरण अर्थात् महिला में उस शक्ति का विकास हो सके, जिससे वह अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं लेने के लिए सक्षम एवं स्वतंत्र बने। वह अपने अधिकारों को प्राप्त करने हेतु सक्षम बने।

कमलेश गुप्ता के शब्दों में “सशक्तिकरण का पहला आयाम महिलाओं में आत्मविश्वास और स्वाभिमान जागरूक करना है।”<sup>1</sup>

सुभाष सेतिया के शब्दों में “सशक्तिकरण का पहला आयाम है- आत्मविश्वास और स्वाभिमान और इसी पर आधारित है, समाज में सम्मानजनक स्थान।”<sup>2</sup>

सशक्तिकरण के अंतर्गत महिला को स्वयं अपने आप को सशक्त बनाना है। सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जो प्रत्येक महिला के जीवन में निरंतर चलती रहती है। वह स्वयं इस सशक्तिकरण के प्रति जितनी अधिक सभान होंगी, उतनी ही अधिक सशक्त बन पाएंगी। महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत महिला का शारीरिक सशक्तिकरण, मानसिक सशक्तिकरण एवं आर्थिक सशक्तिकरण सभी पहलुओं का समावेश हो जाता है। महिला सशक्तिकरण के द्वारा ही महिलाएं सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त होकर परिवार एवं समाज में आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान से निर्वाह कर सकती हैं।

### सशक्तिकरण की आवश्यकता :

प्राचीन काल से लेकर आज तक महिलाओं ने समाज की बेहतरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। माँ ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है। अतः महिला जितनी अधिक सशक्त होगी, समाज उतना ही अधिक प्रगतिशील बनेगा। प्राचीन काल में हमारी संस्कृति में स्त्री को देवी के समान पूजा जाता था। परंतु इस देवी ने धीरे धीरे अबला का रूप धारण कर लिया। सभी धर्मों में महिलाओं की स्थिति एक

जैसी थी। पूरा समाज स्त्रियों के लिए एक कारागार के समान बन गया और स्त्री उस कारागार में कैद होकर रह गई। उसके मनोबल को तोड़ उसे कमजोर बना दिया गया। परंतु आधुनिक सभ्यता के प्रादुर्भाव के साथ ही कुछ समाज सुधारकों का ध्यान स्त्रियों की दयनिय स्थिति की तरफ गया और उन्होंने स्त्रियों की स्थिति में बदलाव लाकर उन्हें सशक्त बनाने के प्रयास शुरू किए। उन सुधारकों से प्रेरणा लेकर स्त्रियों ने भी अपनी स्थिति में परिवर्तन लाने की तरफ अपना ध्यान आकृष्ट किया। समाज में पुरुषों के समान ही स्त्रियाँ भी अपने जीवन के निर्णय स्वतंत्र रूप से लेकर मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, एवं बौद्धिक रूप से आत्मनिर्भर बनें। जिससे वे अपने, अपने परिवार एवं समाज का निर्माण योग्य तरीके से करने के लिए सक्षम बनें। महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता इस कारण भी है कि वे जितनी अधिक सक्षम बनेंगी उतनी ही कम हिंसा का शिकार बनेंगी। महिलाओं के अधिकारों एवं स्थिति के प्रति सभानता जागरूक करने वाली सोच के कारण ही महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता को बल प्राप्त हुआ। इस पुरुष प्रधान समाज में महिला शक्ति को मुख्यधारा से जोड़कर ही संपूर्ण विकास करना संभव है। महिलाओं को सशक्त किए बगैर उज्ज्वल समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। अतः संतुलित, स्वस्थ एवं विकसित समाज की नींव रखने हेतु महिला सशक्तिकरण अति आवश्यक है।

#### महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में बाधक तत्व :

हमारे पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण में कई बाधाएँ सामने आती हैं। कई पुरुष वर्ग एवं सामाजिक मापदंड, लैंगिक भेदभाव की भावना, घर एवं परिवार में महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा, महिलाओं एवं पुरुषों को मिलने वाली असमान मजदूरी, शिक्षा का अभाव, दहेज प्रथा एवं बाल विवाह ये सारी बाधाएँ महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ने से रोकती हैं। महिलाओं के हित के लिए हमारे देश में कई कानून तो बन चुके हैं, परंतु उन सभी कानूनों को आज तक सख्ती से लागू नहीं किया गया है और इस कारण आए दिन समाज में महिलाओं के शोषण की घटनाएँ बनती ही रहती हैं। जो स्त्रियों के मनोबल को तोड़ती हैं। अतः महिला सशक्तिकरण को पूरी तरह से बल प्रदान करने के लिए इन सभी बाधाओं का निराकरण भी अति आवश्यक है। कई बार एक स्त्री भी दूसरी स्त्री को आगे बढ़ने में बाधाएं उत्पन्न करती है, तो ऐसी स्त्रियों को अपनी सोच बदलकर पूरी स्त्री जाति के विकास में योगदान देना चाहिए।

#### भारत में महिला सशक्तिकरण हेतु किए गए प्रयास :

स्वतंत्रता के बाद भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कई प्रयास किए गए। महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए सरकार ने भी पहल की। कई कानून बनाए गए, जिससे महिलाओं को सुरक्षा प्रदान हो सके। संविधान में भी भारतीय महिलाओं को पुरुष के बराबर का अधिकार दिया गया है। “भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण एवं उनके उत्थान के लिए राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम 1990 के अंतर्गत ‘राष्ट्रीय महिला आयोग’ का गठन किया गया है। यह आयोग महिलाओं की सुरक्षा एवं प्रगति के बारे में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।”<sup>3</sup> इसके अलावा ‘राष्ट्रीय महिला कोष’ की स्थापना कर महिलाओं को ऋण देने की व्यवस्था की गई, जिससे वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। महिलाओं में शिक्षा के स्तर में सुधार, रोजगार के क्षेत्र में ज्यादा भागीदारी, पारिवारिक अधिकारों में वृद्धि एवं उनके लिए राजनीतिक क्षेत्रों में आरक्षण को बढ़ाकर उन्हें हर क्षेत्र में प्रगति करने का अवसर दिया जा रहा है, जिससे महिलाएं प्रत्येक दृष्टि से सशक्त बन सकें। भारत सरकार ने सन् 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित कर राष्ट्रीय नीति भी पारित की। 14 अगस्त को ‘राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण दिवस’ के रूप में मनाये जाने का प्रावधान है।

महिला सशक्तिकरण कानून के अंतर्गत लोक सेवाओं में बिना किसी भेदभाव के अवसर की समानता, समान रूप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, नारी क्रय विक्रय तथा बेगार प्रथा पर पूरी तरह से रोक लगाते हुए स्त्री को पुरुष के समान कार्य के लिए समान वेतन देने का भी प्रावधान किया गया है। इस प्रकार पुरुष और स्त्री के बीच बनी हुई खाई को भरने के कई सार्थक प्रयास सरकार द्वारा भी किए गए हैं, जिसके कई सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं।

आज की स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुकी है। महानगरों एवं शहरों की महिलाएं सशक्तिकरण की दिशा में बहुत आगे बढ़ चुकी हैं, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की यह स्थिति अबतक पूर्ण रूप से संतोषकारक नहीं मानी जा सकती है। आज भी कई ऐसे गांव हैं, जहाँ की औरतें अपने बुनियादी अधिकारों से भी वंचित हैं। वे परिवार एवं समाज के बीच में दबी रहती हैं। सरकार ने महिलाओं को अत्याचार एवं शोषण से बचाने के लिए कई कानून बनाये हैं। परन्तु ग्रामीण औरतों को इन कानूनों से लाभ का अवसर बहुत कम प्राप्त हो सका है। अतः यह अति आवश्यक है कि ग्रामीण महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा शिक्षा के अवसर प्रदान कर उन्हें

शिक्षित करने का प्रयास किया जाए, क्योंकि शिक्षा ही महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में विशेष महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षित महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। ग्रामिण महिलाएं भी योग्य शिक्षा पाकर स्वयं को सशक्त बनाने की तरफ अग्रसर होंगी।

आर्थिक स्वावलंबन भी महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आर्थिक स्वावलंबन से महिलाओं में आत्मविश्वास एवं सम्मान जागृत होता है। इसके जरिए वे अपनी मांगों को अधिकारपूर्वक रखने में सक्षम बनती हैं। “महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक ठोस कदम ‘राष्ट्रीय महिला कोष’ की स्थापना के रूप में उठाया गया है। यह संस्था निर्धन और जरूरतमंद औरतों को स्वयंसेवी संगठनों के माध्यम से विभिन्न रोजगार परियोजनाएं चलाने के लिए कर्ज देती है, जिसका कुछ हिस्सा अनुदान के रूप में होता है।”<sup>4</sup> इस प्रकार सरकार द्वारा आर्थिक मदद देकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

#### स्वास्थ्य एवं महिला सशक्तिकरण :

स्वास्थ्य का महिला सशक्तिकरण के साथ बहुत ही गहरा संबंध है। अगर महिलाएं स्वस्थ ही नहीं होंगी तो वह सशक्त किस प्रकार बन सकती है? अतः आवश्यक है कि सभी महिलाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना चाहिए। कई बार हमारे समाज में एक परिवार में महिलाएं दूसरों के स्वास्थ्य का बहुत ही अधिक ख्याल रखती हैं परंतु वह अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत ही लापरवाह रहती हैं। पर यदि महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक होती हैं, तभी वो शारीरिक दृष्टि से मजबूत एवं सशक्त बन सकती हैं। क्योंकि शारीरिक दृष्टि से सशक्त होना महिलाओं के लिए आज के समाज में बहुत ही आवश्यक बन गया है। हम आए दिन समाचार पत्रों में महिलाओं के साथ होने वाले शारीरिक शोषण, अत्याचार, एवं बलात्कार वगैरह घटनाओं के बारे में पढ़ते रहते हैं। शिक्षित महिलाएं भी इस शारीरिक शोषण का शिकार बनती हैं। अभी हाल में ही एक किस्सा देखें तो कलकत्ता के अस्पताल में काम करने वाली महिला डॉक्टर के साथ, अस्पताल के अंदर ही कुछ लोगों ने उनका बलात्कार किया और उनकी हत्या कर दी। यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि वह महिला डॉक्टर मानसिक और बौद्धिक रूप से तो सशक्त थी। वह शिक्षित भी थी। परन्तु शारीरिक रूप से वह शायद उतनी सशक्त नहीं थी। अतः यह बहुत ही आवश्यक हो जाता है कि समाज में महिलाओं को शारीरिक रूप से भी सशक्त बनाया जाय। जिससे वे समय आने पर अपना बचाव कर सकें। स्कूलों, कॉलेजों में भी शिक्षा के साथ साथ उन्हें शारीरिक दृष्टि से मजबूत बनाने के लिए भी एक निश्चित कार्यक्रम या तालीम की व्यवस्था की जाए। जिससे वे समाज में अपने साथ होने वाली किसी भी अप्रत्याशित घटना को रोकने में सक्षम बनें। हर माता पिता के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी बेटियों को शारीरिक रूप से सक्षम बनाने हेतु ठोस कदम उठाए। जिससे उनका शारीरिक सशक्तिकरण संभव हो सके।

#### निष्कर्ष

महिला सशक्तिकरण का विषय आज के समय में उस मोड़ पर आ खड़ा है जहाँ पुरुष प्रधान समाज में नारी के अस्तित्व को स्वीकार कर उसे आगे बढ़ने हेतु हर संभव मदद की जाए। महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा शिक्षित कर उन्हें स्वरोजगार के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए। जिससे आज के समाज में प्रत्येक नारी स्वतंत्र रूप से अपने अधिकारों का उपयोग करते हुए अपने जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए सक्षम बनें और वे आज की सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में आगे बढ़ सकें।

#### संदर्भ ग्रंथ :

1. पृष्ठ 10, ‘महिला सशक्तिकरण’ कमलेश कुमार गुप्ता, बुक एनक्लेव, जयपुर, प्रथम संस्करण - 2007।
2. पृष्ठ 294, ‘महिला जागृति और सशक्तिकरण’ सुभाष सेतिया, संपादक- प्रोफेसर सांवलिया बिहारी वर्मा, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण - 2005
3. पृष्ठ 3, ‘महिला सशक्तिकरण’ कमलेश कुमार गुप्ता, बुक एनक्लेव, जयपुर, प्रथम संस्करण -2007
4. पृष्ठ 297, ‘महिला जागृति और सशक्तिकरण’ सुभाष सेतिया, संपादक - प्रोफेसर सांवलिया बिहारी वर्मा, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण - 2005

---

## Exploring Eco-criticism in "The Animal's People" by Indra Sinha

Dr. Kalpeshkumar H. Solanki  
Assistant Professor – English  
Smt. KSN Kansagara Mahila College, Rajkot

### Abstract

This research paper, titled "Eco-criticism in *Animal's People* by Indra Sinha," explores the ecological and socio-political themes presented in Indra Sinha's poignant novel. Through an eco-critical lens, this study examines how Sinha's narrative addresses the environmental and human aftermath of the fictional industrial disaster in Khaufpur, a city mirroring the real-life Bhopal Gas Tragedy. The analysis focuses on the representation of environmental degradation, corporate negligence, and the intersection of human and animal rights.

By highlighting the pervasive pollution and its long-term effects on both the natural environment and the residents of Khaufpur, the paper underscores the novel's critique of corporate irresponsibility and the quest for environmental justice. The protagonist, Animal, whose physical deformity symbolizes broader environmental decay, serves as a powerful narrative device to explore themes of identity, resilience, and the blurring boundaries between human and non-human life.

Additionally, this study delves into the cultural and spiritual dimensions portrayed in the novel, emphasizing the importance of community solidarity and resilience in the face of ecological crises. Through this detailed ecocritical analysis, the paper aims to shed light on the novel's contribution to contemporary environmental discourse and its call for greater accountability and compassion in addressing environmental disasters.

**Key Words:** Eco-criticism, Environmental Injustice, Environmental Degradation, Bhopal Gas Disaster,

### Exploring Eco-criticism in *The Animal's People* by Indra Sinha

#### Profile of Writer: Indra Sinha

Indra Sinha was born in 1950, the son of an Indian naval officer and an English writer, Irene Elizabeth Phare, who wrote under the name of Rani Sinha.

He attended schools in England and India before moving to Britain with his family in 1967. He studied English Literature at Pembroke College, Cambridge, after which, having failed to persuade the BBC to let him make documentaries, he became an advertising copywriter in London, notably with Collett Dickenson Pearce. He was voted by his peers one of the top ten British copywriters of all time. While working in advertising he translated Vatsyayana's *Kama Sutra* into English, the first new translation published in the west since Sir Richard Burton's. This was followed by a monograph on the origins of tantrism.

In 1995 he left advertising to become a full-time writer, producing a non-fiction memoir of the pre-internet generation, *The Cybergypsies* (1999). His first novel, *The Death of Mr. Love* (2002), is set in Bombay and weaves a fictional story around the notorious Nanavati murder case which led to the abolition of the jury system in India.

Indra Sinha has campaigned and fundraised for the poisoned citizens of Bhopal since 1993. He co-founded the Bhopal Medical Appeal, which offers free medical care to people affected by the gas and water poisoning. His most recent novel, *Animal's People* (2007), is set in the Indian town of Khaufpur, and is based on the Bhopal disaster. *Animal's People* was shortlisted for the 2007 Man Booker Prize for Fiction and won the 2008 Commonwealth Writers Prize (Eurasia Region, Best Book). (from British Council)

---

### **Social Activism**

Sinha has been actively involved in social causes, particularly in campaigning for justice for the victims of the Bhopal disaster. He created the first advertisement for the Bhopal Medical Appeal, which raised funds to build a clinic providing free treatment for the survivors.

### **Personal Life**

Sinha currently resides in the Lot valley in southwest France with his wife. They have three grown-up children.

### **Awards and Honors**

- **2007:** Shortlisted for the Man Booker Prize for "**The Animal's People**".
- **2008:** Winner of the Commonwealth Writers' Prize for Europe and South Asia for "**The Animal's People**".
- **2015:** Awarded an honorary Doctorate in Literature by the University of Brighton for his contributions to literature.

Indra Sinha's work is a testament to the power of words in advocating for social justice and environmental awareness. His unique blend of literary talent and social activism continues to inspire readers and writers alike.

### **Overview of *Animal's People* by Indra Sinha**

*Animal's People* is a compelling novel by Indra Sinha that explores the aftermath of a chemical disaster in the fictional city of Khaufpur, modeled on the real-life Bhopal disaster. The story is narrated by a young man named Animal, who walks on all fours due to a spinal deformity caused by the toxic gas leak. The novel is structured as a series of recorded tapes, through which Animal recounts his experiences and observations.

### **The Protagonist: Animal**

Animal, the protagonist, is a sharp-witted and resilient young man who refuses to be defined by his deformity. He has adopted the name "Animal" after being mocked for his posture and embraces his identity with a rebellious spirit. Animal's voice is raw, candid, and often infused with dark humor, providing a unique perspective on the events that unfold.

### **Setting: Khaufpur**

Khaufpur is a city still reeling from the effects of the gas disaster, which occurred years earlier when a chemical plant leaked toxic gas into the air. The disaster left thousands dead and many more with severe health issues and deformities. The city is depicted as a place of poverty, suffering, and resilience, where the inhabitants struggle daily against the long-lasting impact of the disaster.

### **Main Characters**

- **Nisha:** A compassionate and determined young woman, Nisha is a close friend of Animal. She is actively involved in the fight for justice for the gas victims.
- **Zafar:** A charismatic leader of the resistance movement, Zafar is dedicated to holding the chemical company accountable for the disaster.
- **Ellie:** A foreign doctor who comes to Khaufpur to provide medical aid to the gas victims. Her arrival is met with suspicion and hope by the community.
- **Ma Franci:** An elderly French nun who cares for Animal and serves as a maternal figure. She represents faith and compassion in the midst of suffering.

### **The Plot**

The novel begins with Animal narrating his life story through a series of tapes. He reflects on his past, the night of the gas leak, and its devastating aftermath. As the story progresses, several key plot points and themes emerge:

1. **The Gas Disaster and Its Aftermath:** The narrative frequently returns to the night of the disaster, describing the chaos, fear, and death that ensued. Animal recounts the personal and collective trauma experienced by the residents of Khaufpur.
2. **Animal's Transformation:** Animal's physical deformity forces him to walk on all fours, leading to his self-identification as an "animal." Despite his condition, he is fiercely independent and refuses to be pitied or treated as a victim.
3. **Fight for Justice:** Nisha and Zafar lead a grassroots movement to seek justice for the gas victims. They organize protests, raise awareness, and demand accountability from the chemical company responsible for the disaster.
4. **Ellie's Arrival:** The arrival of Dr. Ellie from the West brings a mix of hope and suspicion. While some see her as a potential ally, others are wary of her intentions. Ellie's presence highlights the cultural and political tensions between the local community and foreign aid workers.
5. **Personal Relationships:** Animal's relationships with Nisha, Zafar, Ellie, and Ma Franci are central to the narrative. These relationships are complex and multifaceted, revealing different aspects of Animal's character and the broader community dynamics.
6. **Identity and Humanity:** Throughout the novel, Animal grapples with questions of identity and humanity. He struggles to reconcile his animal-like existence with his desire for dignity and recognition as a human being.

#### **Climax and Resolution**

The novel builds towards a climactic protest against the chemical company. The residents of Khaufpur, led by Zafar and Nisha, confront the company officials in a bid to secure justice. Animal, caught in the midst of the chaos, faces a personal reckoning with his identity and place in the world.

#### **Overview of Eco-criticism as a Literary Theory**

**Eco-criticism** is an interdisciplinary field of literary study that examines the relationship between literature and the natural environment. Emerging in the late 20th century, eco-criticism focuses on how literature represents nature, ecological issues, and the human-environment relationship. It seeks to understand the cultural and ethical dimensions of environmental problems and explores how literary works reflect, shape, and influence environmental thought and action.

#### **Origins and Development**

Eco-criticism began to take shape in the 1980s and 1990s as part of the broader environmental movement. The term "eco-criticism" was popularized by scholar Cheryll Glotfelty, who defined it as "the study of the relationship between literature and the physical environment." The field was influenced by earlier works in nature writing, environmental philosophy, and the sciences.

Key figures in the development of eco-criticism include:

- **Lawrence Buell:** His book *"The Environmental Imagination: Thoreau, Nature Writing, and the Formation of American Culture"* (1995) is a foundational text in the field.
- **Cheryll Glotfelty and Harold Fromm:** Editors of the influential anthology *"The Ecocriticism Reader: Landmarks in Literary Ecology"* (1996).
- **William Rueckert:** Credited with coining the term "ecocriticism" in his essay *"Literature and Ecology: An Experiment in Ecocriticism"* (1978).

#### **Core Principles and Themes**

Eco-criticism encompasses a wide range of approaches and methodologies, but several core principles and themes are central to the field:

- I. **Representation of Nature:** Eco-criticism examines how nature is depicted in literary texts. It explores the ways in which writers represent landscapes, animals, plants, and ecological



processes, and how these representations influence readers' perceptions of the natural world.

- II. **Human-Nature Relationship:** The field investigates the complex and often ambivalent relationship between humans and nature. It considers how literature portrays human interaction with the environment, including themes of exploitation, stewardship, and coexistence.
- III. **Environmental Ethics:** Eco-criticism engages with questions of environmental ethics and justice. It explores the moral and ethical implications of human actions on the environment and advocates for more sustainable and equitable practices.
- IV. **Cultural and Historical Context:** The field situates literary works within their cultural and historical contexts, examining how environmental attitudes and policies have evolved over time. It considers how literature reflects and responds to historical environmental crises and movements.
- V. **Interdisciplinary Approaches:** Eco-criticism often draws on insights from other disciplines, such as ecology, biology, environmental science, philosophy, and cultural studies. This interdisciplinary approach enriches the analysis of literary texts and their ecological implications.
- VI. **Eco-feminism:** A significant strand within ecocriticism, ecofeminism explores the connections between the exploitation of nature and the oppression of women. It examines how patriarchal structures contribute to environmental degradation and advocates for a more inclusive and equitable environmentalism.
- VII. **Postcolonial Eco-criticism:** This approach examines the environmental impact of colonialism and imperialism. It explores how colonial narratives have justified the exploitation of natural resources and indigenous lands, and how postcolonial literature responds to these legacies.

Eco-criticism is a vital and evolving field that provides valuable insights into the ways literature engages with environmental issues. By examining the representation of nature, the human-environment relationship, and the ethical dimensions of ecological problems, eco-criticism encourages readers to think critically about their own interactions with the natural world. As environmental challenges continue to grow, the importance of eco-critical perspectives in both literary studies and broader cultural discourse remains ever more significant.

#### **Eco-critical Analysis of the text *Animal's People***

*Animal's People* by Indra Sinha offers a compelling narrative that delves into the ecological and human consequences of an industrial disaster, making it an ideal text for eco-critical analysis. Through the lens of eco-criticism, we can explore how the novel addresses environmental degradation, corporate negligence, and the interconnectedness of human and non-human life.

#### **Eco-critical Insights in the text**

**1. Setting and Environmental Degradation** The novel is set in the fictional city of Khaufpur, modelled after Bhopal, India, which suffered a catastrophic chemical disaster. From an eco-critical perspective, the setting is crucial as it highlights the long-term environmental impact of the gas leak. The polluted air, contaminated water, and toxic soil in Khaufpur serve as stark reminders of the ecological damage caused by industrial negligence. The detailed description of the environment evokes a sense of loss and degradation, emphasizing the lasting scars left on the landscape and its inhabitants.

**2. Corporate Negligence and Its Consequences** The novel critiques the corporate negligence of the "Kampani," the fictional chemical company responsible for the disaster. The company's disregard for safety and lack of accountability are central themes that resonate with eco-critical



concerns about corporate exploitation of natural resources and the environment. The narrative underscores the power imbalance between multinational corporations and vulnerable communities, highlighting the need for environmental justice and corporate responsibility.

**3. Human Suffering and Environmental Justice** The protagonist, Animal, embodies the human suffering caused by the environmental disaster. His physical deformity, resulting from exposure to toxic gas, symbolizes the broader human cost of ecological harm. The novel emphasizes the interconnectedness of human health and environmental health, advocating for a holistic approach to justice that includes both human and environmental considerations. The struggle of Khaufpur's residents to hold the company accountable reflects real-world efforts to achieve environmental justice for affected communities.

**4. Intersection of Human and Animal Rights** Animal's unique condition, walking on all fours due to spinal deformities, blurs the line between human and animal. This portrayal challenges anthropocentric perspectives and underscores the shared vulnerability of all living beings. Eco-criticism often seeks to dismantle the hierarchical distinction between humans and non-humans, and "Animal's People" powerfully illustrates this theme by giving voice to a character who straddles both worlds. Animal's narrative challenges readers to reconsider notions of normalcy and humanity, promoting a more inclusive understanding of rights that encompasses all forms of life.

**5. Cultural and Spiritual Dimensions** The novel also delves into the cultural and spiritual responses of Khaufpur's residents to the disaster. Their reliance on traditional practices and beliefs to cope with the environmental and social aftermath highlights the cultural dimension of eco-critical thought. The resilience and solidarity of the community, rooted in their cultural and spiritual values, underscore the importance of maintaining cultural identity and practices in the face of ecological crises. Sinha's portrayal of these aspects enriches the narrative, offering a deeper understanding of the human-environment relationship.

**6. Hope and Resilience** Despite the bleak circumstances, "Animal's People" is infused with themes of hope and resilience. The community's fight for justice, Animal's indomitable spirit, and the solidarity among the residents of Khaufpur demonstrate the strength and perseverance needed to overcome environmental and social challenges. This aspect aligns with ecocritical perspectives that emphasize the potential for regeneration and recovery in both human and ecological systems.

### Conclusion

In conclusion, Indra Sinha's *Animal's People* serves as a profound narrative that intricately weaves ecological and social concerns, making it an exemplary text for ecocritical analysis. Through the depiction of the fictional city of Khaufpur, Sinha powerfully critiques the devastating environmental and human consequences of industrial negligence. The novel's exploration of environmental degradation, corporate irresponsibility, and the struggle for justice highlights the complex interplay between humans and their environment.

By focusing on the protagonist, Animal, and his unique perspective, Sinha challenges traditional notions of humanity and normalcy, emphasizing the interconnectedness of all living beings. Animal's journey from a victim of ecological disaster to a symbol of resilience and defiance underscores the novel's advocacy for environmental justice and human dignity.

Furthermore, the cultural and spiritual dimensions embedded in the narrative reflect the importance of community solidarity and the role of traditional practices in coping with environmental crises. Sinha's portrayal of these aspects enriches the narrative, offering a holistic understanding of the human-environment relationship.

Overall, *Animal's People* not only brings attention to the enduring impact of the Bhopal Gas Tragedy but also serves as a broader commentary on contemporary environmental issues. Through its eco-critical lens, the novel calls for greater accountability, ethical practices, and a compassionate

approach to addressing environmental disasters. It stands as a testament to the power of literature in raising awareness and inspiring action towards a more just and sustainable world.

### **Bibliography**

Sinha, Indra. *Animal's People*. Simon & Schuster, 2007.

Glotfelty, C. (1996). Introduction. *The Ecocriticism Reader: Landmarks in Literary Ecology*. Athens and London, University of Georgia.

Prakash, K. Dutta. 'Bhopal Gas Tragedy: What had happened this day 33 years ago that killed thousands?' India Today. (New Delhi), 3 Dec 2017. Web. 21 Dec 2024 <<<https://www.indiatoday.in/>>>

<https://www.sfgate.com/books/article/review-animal-s-people-toxically-twisted-3224329.php> Web. 19 Dec 2024

Parry. C. Other Animals in Twenty-first Century Fiction. "Animal's People: Animal, Animality, Animalisation". 2017. Print.

Pritam Basak, Intersecting Disability and Trauma: a Study of Identity Metamorphosis in Indra Sinha's *Animal's People*, International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), Vol 6, Issue March 2024, <https://www.ijfmr.com/papers/2024/2/15647.pdf>

## **The Role of Mobile Libraries in Supporting Distance Education Students**

**Hiteshbhai M. Panara**

**Ph.D. Scholar**

**Department of Library and Information Science,  
Veer Narmad South Gujarat University, Surat**

**Ketanbhai P. Patel**

**Ph.D. Scholar**

**Department of Library and Information Science,  
Veer Narmad South Gujarat University, Surat**

**Dr. B. J. Ankuya**

**Guide,**

**Department of Library and Information Science,  
Veer Narmad South Gujarat University, Surat**

### **Abstract :**

The integration of mobile technology into library services has redefined how information is accessed, shared, and utilized in the modern world. Mobile-based library services provide users with unparalleled convenience, enabling them to access resources such as e-books, audiobooks, journals, and research materials through their smartphones and tablets. This paper delves into the diverse applications of mobile-based library services, emphasizing their role in enhancing accessibility, especially for distance education students. It highlights the benefits, including improved user engagement, cost-effectiveness, and eco-friendly solutions, while addressing challenges such as technological barriers, data privacy concerns, and resource limitations. A focused discussion on distance education underscores how mobile libraries bridge the gap between students and essential resources, fostering collaboration and accommodating diverse learning styles. Case studies from global institutions demonstrate successful implementations, showcasing the transformative potential of these services. The paper concludes by exploring the future of mobile library services, proposing the integration of cutting-edge technologies like artificial intelligence, augmented reality, and block chain to further enhance user experiences. By adapting to these advancements, libraries can remain pivotal in knowledge dissemination, supporting students, educators, and researchers in an increasingly digital landscape. The findings presented in this paper underscore the significance of mobile-based library services as a cornerstone of modern education, ensuring equitable access to information for all.

**Key Word:** Mobile Libraries, Digital Libraries, Library Services, Mobile Technology, Distance Education, E-Learning Resources, Rural Library Access.

### **Introduction:**

Libraries, as custodians of knowledge, have historically adapted to technological advancements to meet the evolving needs of their users. In the current digital age, mobile technology has emerged as a transformative force, reshaping how libraries operate and serve their patrons. Mobile-based library services utilize smartphones, tablets, and other portable devices to provide users with seamless access to resources, enhancing convenience and fostering greater engagement.

---

These services encompass a range of functionalities, including mobile-optimized catalogues, digital resource repositories, and interactive tools such as virtual assistance and discussion forums. By leveraging these features, libraries can cater to the demands of tech-savvy users who seek immediate and flexible access to information. The relevance of mobile-based library services extends beyond convenience; they play a pivotal role in democratizing access to information. This is particularly significant for marginalized groups, including distance education students and individuals in remote areas, who may face challenges in accessing traditional library resources. Furthermore, the eco-friendly nature of mobile libraries, which reduce reliance on physical materials, aligns with global sustainability goals.

Despite their potential, the implementation of mobile-based library services is not without challenges. Issues such as limited technological infrastructure, data privacy concerns, and user resistance necessitate strategic planning and investment. This paper aims to provide a comprehensive analysis of mobile-based library services, exploring their benefits, challenges, and implications. Special emphasis is placed on their role in supporting distance education and their potential to revolutionize the educational landscape. Through an examination of case studies and future technological trends, the paper underscores the importance of embracing mobile-based solutions to ensure libraries remain integral to the learning ecosystem in the digital age.

#### **Mobile-Based Library Services: An Overview**

Mobile-based library services have revolutionized the way users access library resources, offering convenience and flexibility through smartphones and other mobile devices. These services allow library patrons to access a variety of materials, including books, journals, databases, and multimedia content, from anywhere at any time. This shift has been particularly beneficial for students, researchers, and general readers, as it eliminates the need to physically visit a library, thus saving time and making library services more accessible.

Mobile-based library services typically include features like digital catalogues, e-books, online journals, and the ability to borrow or renew books through apps. Libraries are also integrating mobile technologies to provide real-time notifications about due dates, overdue items, and upcoming events. Additionally, these services often include search functions, allowing users to find materials by title, author, or subject, and offer remote access to library databases, enabling users to conduct research without being on-site. Another important aspect of mobile library services is the integration of social media and collaboration tools. Users can participate in discussions, share resources, and engage with library staff through mobile platforms. Libraries are also using mobile technology to support personalized services, such as recommending books based on user preferences and reading history. Despite the advantages, challenges such as digital divide issues, privacy concerns, and the need for consistent internet access can limit the effectiveness of mobile library services for some users. Nevertheless, with the rapid advancement of mobile technology, libraries continue to innovate, providing enhanced services to meet the growing demands of digital-age users. Mobile-based library services are thus playing a crucial role in the modern evolution of library systems, offering greater convenience, accessibility, and user engagement.

#### **Benefits of Mobile-Based Library Services**

Mobile-based library services offer a wide range of benefits, making library resources and services more accessible, efficient, and user-friendly. One of the primary advantages is convenience. With mobile apps or websites, users can access library resources anytime and anywhere, eliminating the need to visit the library in person. Whether at home, work, or on the go, users can search for books, borrow e-books, audiobooks, or access academic journals directly from their mobile devices, offering a seamless experience. Another key benefit is increased accessibility. Mobile-based services break down barriers for users with disabilities, as many mobile apps come with features like text-to-

---

speech, adjustable font sizes, and easy navigation. These tools ensure that everyone, including individuals with visual or motor impairments, can easily access library materials and services. Additionally, remote access to library systems allows users in remote or underserved areas to benefit from digital collections without needing to travel.

Mobile-based library services also promote efficiency. Features like self-checkout, automatic due date reminders, and the ability to renew borrowed materials through mobile apps save time and improve the user experience. Libraries can operate more efficiently by streamlining borrowing and returning processes, while users benefit from less administrative hassle. Furthermore, personalization is a significant benefit of mobile library services. Mobile apps often provide tailored recommendations based on users' borrowing history, reading preferences, or past searches. This feature increases user engagement and encourages continued use of library services, ultimately fostering a stronger connection between users and the library.

Lastly, cost-effectiveness is an important consideration. By reducing the need for physical infrastructure, such as printed catalogues or in-person service desks, libraries can lower operational costs while still offering an expansive range of services. This makes mobile-based library services a win-win for both libraries and their patrons.

#### **The Role of Mobile Libraries in Supporting Distance Education Students**

Mobile libraries play a crucial role in supporting distance education students by providing convenient and efficient access to educational resources, enhancing the overall learning experience. With the growing popularity of online and remote learning, mobile libraries ensure that students, regardless of their geographical location, have access to the materials and services they need to succeed in their studies. One of the primary benefits of mobile libraries is 24/7 access to a vast range of digital resources, such as e-books, research papers, journal articles, and multimedia content. Distance education students often struggle with the limited availability of physical library resources, but mobile libraries bridge this gap by offering easy access to digital collections on smartphones, tablets, or laptops. This enables students to engage with learning materials at their own pace, without the constraints of traditional library hours.

Mobile libraries also support flexible learning by allowing students to study on the go. Whether commuting, traveling, or at home, students can easily access textbooks, reference materials, or lecture videos through mobile platforms, ensuring they can continue their education without interruptions. Additionally, mobile services offer self-service features such as catalogue searches, borrowing, and renewing materials, streamlining the process and saving valuable time for students who may already have busy schedules.

Moreover, mobile libraries provide personalized support through features like reading recommendations based on a student's interests or previous searches, and push notifications about important deadlines or library events. These tools help keep students organized and engaged in their coursework. mobile libraries are indispensable for distance education students, offering them easy, remote access to critical learning resources, enhancing flexibility, and promoting efficient learning in a dynamic educational environment.

#### **Challenges in Implementing Mobile-Based Library Services**

While mobile-based library services offer numerous benefits, their implementation presents several challenges. One significant issue is the digital divide. Not all users have access to smartphones, tablets, or reliable internet connections, particularly in rural or economically disadvantaged areas. This creates inequalities in access to mobile library services, limiting their reach and effectiveness for certain segments of the population. Another challenge is technical limitations. Developing and maintaining mobile applications requires substantial investment in technology, skilled personnel, and on-going updates. Libraries may face difficulties in ensuring the app is compatible with various

devices, operating systems, and software versions, which could result in inconsistent user experiences. Additionally, technical glitches or system downtime can disrupt service, causing frustration among users and diminishing the service's reliability.

User engagement is another obstacle. Some library users, especially older individuals or those less familiar with technology, may be resistant to adopting mobile-based services. They may prefer traditional methods of accessing library resources, such as physical visits or printed materials, and may require additional training and support to feel comfortable using mobile platforms. Moreover, data security and privacy concerns pose significant risks. Libraries must ensure that users' personal data and borrowing history are securely stored and protected from cyber threats. Failure to comply with data protection regulations or breaches in security could lead to a loss of trust among users and legal ramifications.

Finally, libraries often struggle with limited budgets to invest in mobile infrastructure. Developing and maintaining mobile apps, securing digital content licenses, and ensuring compatibility with diverse devices can be costly, especially for smaller or underfunded institutions. While mobile-based library services have the potential to transform access to resources, addressing these challenges is essential for ensuring their success and inclusivity.

#### **Future Prospects of Mobile-Based Library Services**

The future of mobile-based library services holds exciting possibilities, driven by advancements in technology, growing user expectations, and the increasing demand for flexible and remote learning solutions. As mobile technology continues to evolve, libraries are expected to expand their digital offerings, enhance user experience, and bridge the gap between physical and digital library spaces. One significant development is the integration of artificial intelligence (AI) and machine learning in mobile library services. AI can help provide personalized recommendations based on a user's borrowing history, interests, and learning patterns, improving the overall user experience. Machine learning algorithms can also optimize catalogue searches, suggest relevant research materials, and predict user needs, making mobile libraries more responsive and tailored to individual users.

The growing use of augmented reality (AR) in mobile libraries presents another promising prospect. AR can enhance the way users interact with library resources by overlaying additional content, such as videos or interactive guides, on physical books or digital materials. This technology could be particularly useful in creating immersive learning experiences, offering dynamic educational tools that go beyond traditional text-based content.

In addition, cloud computing will continue to play a key role in improving access to library resources. With cloud-based platforms, users can access an even greater variety of digital resources and services from their mobile devices, with minimal storage requirements on their personal devices. This ensures that libraries can offer a vast collection of e-books, journals, and other resources without the need for costly physical infrastructure. As libraries continue to embrace mobile technologies, their role in supporting education and research will expand. Mobile-based library services will likely become more integrated with educational platforms and apps, creating seamless, multi-channel access to resources. By offering enhanced personalization, accessibility, and flexibility, the future of mobile libraries promises to revolutionize how users interact with information and support lifelong learning.

#### **Conclusion**

Mobile-based library services have become an essential component of modern libraries, offering significant benefits such as increased accessibility, convenience, and personalized support for users. With the rapid advancement of technology, these services have proven to be a valuable tool, particularly for distance education students, remote users, and those with mobility limitations. By

enabling 24/7 access to digital resources, mobile libraries ensure that users can access educational materials and library services anytime and anywhere, fostering a more flexible and inclusive learning environment. However, the implementation of mobile-based library services is not without challenges. Issues such as the digital divide, technical limitations, user resistance, data security concerns, and limited budgets can hinder the widespread adoption and effectiveness of these services. To overcome these obstacles, libraries must invest in user education, technological infrastructure, and robust security measures while ensuring equitable access to mobile services.

Looking ahead, the future of mobile libraries is promising, with the potential for innovations such as artificial intelligence, augmented reality, and cloud computing to further enhance user experience and expand access to resources. As libraries continue to embrace these technologies, mobile-based services will evolve to meet the needs of diverse user groups, making them an integral part of the educational landscape.

#### References

1. UNESCO. (2020). The Role of Mobile Technology in Education and Libraries.
2. The role of mobile library services in enhancing user engagement: An Indian perspective. *Journal of Information and Library Science*, 8(2), 15-25.
3. Mobile-based library services and their role in enhancing access to resources for distance education students in India. *Indian Journal of Library and Information Science*,
4. Role of mobile-based services in the academic libraries of India: A comparative study of rural and urban areas



---

## Phishing and Identity Theft: Legal Measures and Prevention Strategies

Dr. Vijaysinh G. Sodha

LL.M, PhD, NET

I/C. Principal

Shree D. D. Kotiyawala Municipal Law College - Porbandar

### Abstract

Phishing and identity theft are two significant cybercrimes that have emerged as growing threats in India's digital landscape. As individuals increasingly rely on online platforms for various services, the risks of falling victim to these cybercrimes have also escalated. Phishing refers to deceptive tactics used to acquire sensitive personal information, typically through fraudulent emails or websites, while identity theft involves the unlawful acquisition and misuse of personal details to commit fraud or impersonate someone. The paper explores the legal measures currently in place to address these cybercrimes in India, focusing on the Information Technology Act, 2000 (IT Act), the BhartiyaNyaySanhita (BNS), and other relevant legal frameworks. Specific sections of these laws, including Section 66C and Section 66D of the IT Act, are examined to assess their effectiveness in addressing phishing and identity theft. Despite these provisions, several challenges remain in enforcing the laws, particularly due to the rapidly evolving nature of cybercrime techniques and jurisdictional hurdles in dealing with international cybercriminals.

Furthermore, the paper evaluates preventive strategies, such as public awareness campaigns, technological safeguards like multi-factor authentication, and stronger data protection regulations. The Personal Data Protection Bill (PDPB)2019 and its implications for addressing cybercrimes like phishing and identity theft are also analysed. The study suggests that while India has made significant strides in its legal approach to cybercrime, more robust enforcement, improved public awareness, and stronger cyber security practices are essential for combating these offenses effectively. This paper concludes by offering recommendations for legal reforms, better training for law enforcement, and the promotion of public-private partnerships to create a safer digital environment in India.

**Key Word:** Phishing, Identity Theft, Cybercrime, Legal Measures, Data Protection, Online Privacy, Fraud Prevention

### Introductions:

In the digital age, the rapid expansion of online services has revolutionized how individuals and businesses interact. However, this increased reliance on the internet has also led to the rise of cybercrimes, with phishing and identity theft becoming particularly pervasive. Phishing refers to fraudulent attempts to acquire sensitive information, such as passwords or credit card details, by impersonating legitimate organizations. Identity theft, on the other hand, involves the unlawful use of someone's personal information to commit fraud or other criminal activities. Both of these crimes exploit vulnerabilities in digital platforms, posing significant risks to personal security and privacy. While India has made significant strides in enacting legal measures, the effectiveness of these laws is often hindered by evolving cybercrime techniques, limited public awareness, and challenges in enforcement, especially when crimes span international borders. The sheer volume of online transactions and the anonymity provided by the internet further complicate the ability to track and apprehend cybercriminals. Additionally, despite the increasing sophistication of phishing schemes, many individuals and organizations still lack awareness of how to recognize and avoid such attacks.

---

This creates a cycle in which cybercriminals continue to find new ways to exploit these vulnerabilities.

This paper aims to examine the existing legal provisions in India related to phishing and identity theft, analyse their impact, and explore preventive strategies. By evaluating the current framework and proposing necessary reforms, this study seeks to contribute to strengthening India's response to these growing cyber threats, ensuring a safer digital environment for all. Through enhanced legal mechanisms, public awareness, and proactive measures, India can combat these pervasive crimes more effectively.

#### **Phishing and Identity Theft:**

Phishing and identity theft are two of the most prevalent cybercrimes today, posing significant risks to individuals and organizations alike. Phishing involves deceptive tactics used by cybercriminals to trick victims into revealing sensitive information such as passwords, bank account details, or credit card numbers. Typically, attackers impersonate legitimate entities like banks, government agencies, or online services to create a false sense of trust and urgency. Victims are often contacted via emails, text messages, or fake websites designed to look authentic, leading them to unknowingly provide confidential information. Identity theft, often a consequence of phishing, occurs when criminals use stolen personal information to assume someone else's identity. This can involve opening fraudulent accounts, taking loans, making unauthorized transactions, or even committing crimes in the victim's name. The impact of identity theft can be devastating, not just financially but also emotionally, as victims face the long process of restoring their reputation, reversing fraudulent activities, and dealing with the fallout of compromised personal information.

Both phishing and identity theft exploit the increasing reliance on digital platforms, where sensitive data is often stored and transmitted. The anonymity provided by the internet, along with the sophistication of modern cybercriminal techniques, has made these crimes more challenging to prevent and prosecute. As a result, these offenses have become widespread, affecting individuals, businesses, and even government systems. The growing threat of phishing and identity theft underscores the need for comprehensive preventive measures, including enhanced cyber security protocols, public awareness campaigns, and individual vigilance when sharing personal data online. While technological advancements offer some protection, the responsibility also lies with individuals to safeguard their digital identities and avoid falling victim to these deceptive tactics. Furthermore, collaboration among private organizations, law enforcement, and policymakers is essential to developing more robust frameworks for combating these threats and ensuring a safer digital environment.

#### **Challenges in Tackling Phishing and Identity Theft in India:**

Phishing and identity theft have become significant concerns in India, posing substantial risks to individuals and organizations alike. Despite various efforts to curb these crimes, several challenges persist in addressing their growing impact. One of the primary difficulties is the lack of digital literacy among large segments of the population. With an increasing number of individuals engaging in online activities such as banking, shopping, and social media, many remain unaware of the potential risks associated with cyberspace. Cybercriminals exploit this gap by crafting convincing fraudulent communications, such as emails, text messages, and websites that appear legitimate. These communications often lead victims into revealing sensitive information such as passwords, credit card numbers, and bank account details. The deceptive tactics used by cybercriminals, coupled with the lack of awareness regarding safe online practices, leaves many vulnerable to exploitation. As technology evolves, so too do the methods employed by cybercriminals. Phishing attacks, for instance, have become more sophisticated over time. They now often involve personalized information gleaned from social media profiles or public databases.

---

This level of personalization increases the likelihood of victims believing the fraudulent communications are genuine, making them more likely to fall for these scams. Cybercriminals may pose as trusted individuals or organizations, such as financial institutions, government agencies, or e-commerce websites, to further deceive their targets. The sophistication of these attacks makes it increasingly difficult for individuals to recognize them, amplifying the risks of identity theft. Once the victim's personal data is compromised, criminals can misuse this information to open fraudulent accounts, take loans, or make unauthorized transactions, thereby committing identity theft.

Moreover, law enforcement in India faces significant challenges in addressing these cybercrimes. One of the main difficulties is the limited resources and technical expertise available within local police stations. Cybercrimes like phishing and identity theft often require advanced knowledge in digital forensics and cyber security to trace, investigate, and resolve cases effectively. Unfortunately, many police departments lack these specialized capabilities, which results in a lack of preparedness to address the growing number of cybercrimes. Even when investigations are initiated, the speed at which information travels online complicates efforts to apprehend perpetrators. Phishing attacks and identity theft can be carried out rapidly, and the anonymity provided by the internet makes it difficult to trace the criminals behind the attacks. Another significant challenge is the issue of jurisdiction. Phishing and identity theft often involve perpetrators located in foreign countries, making prosecution more difficult. This transnational nature of cybercrime presents complex legal and diplomatic issues that complicate international cooperation and enforcement. In such cases, Indian authorities may struggle to pursue legal action against individuals or organizations located outside their jurisdiction. Additionally, India's legal and regulatory framework, while gradually improving, often lags behind the fast-paced changes in technology. Laws designed to address cybercrimes may not fully account for the latest technological developments or the sophisticated methods employed by modern cybercriminals. This gap between technological advancement and legal response further exacerbates the challenges in prosecuting cybercriminals.

Lastly, while there are various legal provisions in India aimed at preventing cybercrimes, the enforcement of these laws remains inconsistent. The lack of a coordinated, nationwide approach to combating phishing and identity theft means that many victims remain unprotected, and many cases go unresolved. Furthermore, public awareness campaigns and education on safe online practices remain limited, especially in rural and underserved areas, leaving a large portion of the population vulnerable to cybercriminals.

#### **Legal Measures and Prevention Strategies:**

The rise of cybercrimes like phishing and identity theft has prompted various countries, including India, to implement legal measures aimed at curbing these offenses. While the legal landscape continues to evolve, the primary objective remains to provide protection to individuals from the adverse effects of such crimes. In India, legal measures focus on criminalizing acts that involve fraud, impersonation, and misuse of personal data. One of the key legal provisions addressing cybercrimes like phishing and identity theft is the Information Technology Act, 2000 (IT Act), which defines and penalizes online fraud and identity-related offenses. The Act provides a framework for prosecuting cybercriminals who impersonate others or steal personal information for fraudulent purposes. While the IT Act plays a significant role in addressing these crimes, its effectiveness is often limited by the evolving methods used by cybercriminals and the challenges in enforcing these laws, especially across international borders. The difficulty of tracing cybercriminals, especially when they operate from overseas, has raised concerns about the effectiveness of domestic laws in providing adequate protection. In addition to the IT Act, countries and organizations are increasingly adopting comprehensive data protection laws to safeguard

individuals' privacy and prevent unauthorized access to personal data. For example, the General Data Protection Regulation (GDPR) in the European Union sets strict rules on how personal data must be handled, offering strong legal recourse to victims of identity theft and phishing.

Prevention strategies are equally important as legal measures in tackling these cybercrimes. Public awareness campaigns are essential to educating individuals about the dangers of phishing and identity theft and promoting safe online behaviours. These include avoiding clicking on suspicious links, verifying the authenticity of requests for personal information, and using strong, unique passwords. Technological safeguards, such as multi-factor authentication (MFA), end-to-end encryption, and secure browsing practices, can further enhance security and reduce the likelihood of falling victim to these crimes. Organizations must also invest in advanced cyber security infrastructure and regularly train employees on identifying phishing attempts. Regular audits, penetration testing, and establishing dedicated cybercrime reporting systems can help reduce vulnerabilities and detect potential threats before they escalate into serious breaches. Furthermore, promoting cooperation between government agencies, private sectors, and international entities can enhance the response to cybercrimes, fostering a more secure online environment for individuals and organizations.

#### **Conclusion:**

Phishing and identity theft are pervasive cybercrimes that continue to grow in India, posing significant risks to individuals' privacy and security. Despite the efforts to address these crimes, several challenges persist, including low digital literacy, rapidly evolving cybercriminal tactics, and limitations in law enforcement resources. As technology advances, so do the methods used by cybercriminals, making it increasingly difficult to protect sensitive personal information. To effectively combat phishing and identity theft, a comprehensive approach is needed, focusing on improving digital awareness among the public, enhancing cyber security practices, and providing better training and resources for law enforcement. Additionally, cooperation between the public and private sectors, along with international collaboration, will be crucial in addressing these transnational crimes. By adopting proactive measures and fostering a culture of cyber awareness, India can better safeguard its citizens from the growing threat of phishing and identity theft.

#### **References:**

1. Information Technology Act, 2000 (IT Act).
2. Personal Data Protection Bill, 2019.
3. National Cyber Security Policy
4. The National Critical Information Infrastructure Protection Centre

---

## Impact of Indian Drama Tradition on Nagamandala of Girish Karnad: A Critical Study

Ambar Pandya  
Research Scholar, Department of English

Guide's Name- Dr. Paresh Jotangiya  
Surendranagar University, Wadhawan, Surendranagar

### Abstract-

The research is based on the element of influence of Indian drama tradition in Nagamandala and Hayavadana. The narrative style, dialogue formation and so on are related to Indian drama tradition. The paper is also communicated about Yakshagana as the form of art and Yakshagana in literary text of Girish Karnad. Karnad has written history plays, religious plays and also has performed in such movies and directed such films so there is possibility in the influence of performance so the paper is communicated about the similarities of Karnad and Yakshagana.

**Keywords-** Yakshagana, Influence of Yakshagana, Religious Plays, Girish Karnad

### Introduction-

Girish Karnad's full name is Girish Raghunath Karnad and he was born in 19 May 1938 in Matheran and died in 1 June 2019 when he was 81 years old. He was died at Bengaluru. He was playwright, actor and director. He had written fiction works and he was part of literary movement which is named- "Navya". He had written notable works like Tughlaq, Taledanda, Ajit Shenoy in YRF Spy Universe. His spouse's name is Saraswathy Ganapathy. His children's name are Raghu Karnad and Shamali Radha.

He was awarded by Padma Shri and Padma Bhusan by Government of India and also he won four Filmfare in which three Filmfare for Best Director and fourth Filmfare for Best Screenplay. He was a presenter for weekly magazine called- "Turning Point" that aired on Doordarshan in 1991.

Girish Karnad has influence of Yakshagana because he had spent his childhood in Kannada so Yakshagana is very much close to him and he has used it in various forms like Yakshagana has such elements in it. Yakshagana has musicality, Dance and so on in it.

### Introduction of Yakshagana-

#### The Structure of Yakshagana Performance-

A traditional Yakshagana performance spans the period from dusk to dawn. Nowadays 'limited-time' Yakshagana has become more popular, as most spectators are taken up with busy schedules. In such cases, it is a three-to four-hour performance at least. Though this constraint on time has cut down many regular features, the glory of Yakshagana has not diminished so far. One gets to watch the splendour and grandeur of customs, the progression of characters and the scenes etched out in detail, in a full-scale Yakshagana performed by a *mela* or troupe. If the theme chosen is a short one, another theme is staged after the first. In some cases, three short themes may be performed during a single show.

Usually the mela invited to perform arrives before noon, and its members are offered food and lodging by the villagers or sponsors. The performers rest till nightfall, given that the Yakshagana is a night-long performance. For them, night becomes the day and vice versa.

Traditionally, the stage is constructed in an easily accessible place like a paddy field or a temple yard. Such traditional makeshift stages are small when compared to the modern ones. The traditional stage is usually 12 feet wide and 15 feet deep, and rectangular in shape. Four wooden poles are put up in four corners and are decorated with mango and palm leaves. The whole performance has to be carried out within this small space. There are some customs pertaining to how the Yakshagana stage is to be built. But those regulations are not applicable to stages built in the temple yard. The spectators are supposed to sit on the three sides of the stage. Now the Yakshagana is also performed in modern auditoria, where all the customs cannot be followed, nor can its whole splendour be recreated.

#### **Yakshagana's Impact in Karnad's Select Plays-**

##### **According to Venkata Ramani Challa about Nagamandala and Hayavadana through the aspect of folk literature-**

Nagamandala is based on two folk tales from Karnataka which Karnad first heard several years ago from Prof. A.K. Ramanujan, whom he considers his friend, guru and hero and to whom he reverently dedicated the play. Persuaded by Prof. C.M. Naim he translated the play into English. Apart from the two Kannada folk tales, Karnad acknowledges the influences of Jean Anouilh on the long speech of Naga. It is a deceptively simple play whose complexity consists of the elements of myth, magic, folk, belief and romance. Nagamandala is divided into three parts: Prologue, Act- I and Act- II. The prologue sets the tone and mood of the play. The audience is taken into a make-believe world, drama itself being such a world. The play opens in a surrealistic setting- a dilapidated temple, a broken idol that is hard to identify, the time of late night with the moonlight creeping in through the crevices on the walls and the roof. In folkloric terms, story-telling is often a dramatic representation of a myth or a legend, accompanied by song and music.

In the dilapidated temple comes flames and story to share some gossip. A story cannot be bottled up but would escape at the earliest opportunity, as the story and the song do from the snoring old woman's open mouth in this play. A "mandala" consists of a triangle and a square: a triangle with in a square. The zeitgeist of the play is the mandala. The three points of the triangle are Rani, Appanna and Naga, thus illustrating the eternal triangle of an adulterous situation presenting the wife, the husband and the lover.

The four sides of the square provide the dramatic framing and stand for the flames, the tale, the Man and the audience. The structure of the play has two receptors of the story: The Man who listens to the flames and the audience before whom the entire performance unfolds. The story unravels itself and acts as the Bhagavatar in the Yakshagana style of presentation. It also acts as the chorus, commenting on the ongoing action and the characters, besides providing narrative links.

Though it is only a folk-tale it highlights the necessity of passing one's knowledge on to others, because culture can be enriched only through sharing and transmitting it. The flames comment on the contemporary conditions such as caste system. They set the background for the play and prepared the mood of the audience to chime with the theme. They describe the bed manners of various couples.

The episode of the old couple hints at the problems in marital life. The flames bring to our mind the dolls of Hayavadana. They relate and share their experiences like those extraordinary dolls that Karnad presented in Hayavadana. The story and the song begin. The story and the song long choked find and escape and live again among the people. The story is described as a young woman and the song as her sari.

The play proper seems a remythification of the Ahalya myth. In Valmiki's Ramayana, Ahalya commits adultery knowingly but the folk mind equates Ahalya with the chaste women and therefore



cannot allow her to sin deliberately. So Indra, the Zews-like profligate, is shown to have perpetrated a fraud on her by impersonating her husband Gautama. In the play "Nagamandala", Rani is innocent, it is Naga in the form of her husband Appanna who makes love to her. She thinks that she bears her husband's child and does not suspect Naga's identity till the very end.

Naga, in turn, employs the myth of life to educate her about sex. Sleep (nidra), food (ahara), and cobulation (Maithuna) are common to man and animal. Naga as the phallic symbol performs as per his nature or Swadharma and initiates her into sex. He comes disguised as her husband but he cannot change what he is.

Rani enjoys Naga's company so much that she wants the night to last forever, as though she was in search of carpediem. For her, the day is the 'unmasker', while night brings her masked delight. Appanna is a male chauvinist. He treats Rani as if she were an object without life and feelings. He has cold contempt for her. While he enjoys extra marital sex, he does not like anybody even to talk to her. By endowing Naga with the feelings of genuine love and making him in the process the sorrowing lover whose cruel mistress is Rani, Karnad de-mythicizes the husband-wife marital love and re-mythicizes the beauty-beast myth. Naga suffers from the pangs of separation or viraha like a human lover when the villagers unite Rani with her husband after she goes through the 'snake ordeal'. Realizing too well that he could no longer assume Appanna's form and as a snake could not have a human mistress, he decided to end his life so that his lover might live in happiness. Sex between human and non-human militates against nature.

This happens when Rani tells Naga that she is pregnant. As Appanna, his behaviour becomes predictably harsh. He pushes her down and beats her. The shift from night to midday and what it means to Rani connotes the subversion of Romance. The interregnum enacts exciting events or collision with external Phenomena, as for example, Naga's encounters with the dog and the mongoose and the breath- taking shifts for Rani when the cruel Appanna changes into loving Naga and vice-versa. The recovery of identity is a release from the tyranny of these circumstances.

Karnad gives a twist to these conventions. It is an illusion that gives Rani her identity as a 'wife' and the reality that makes her lose it. Again, during the 'snake ordeal', her illusion saves her because that becomes her truth. As though this subversion is not enough, there waits another reversal at the end. Naga the rescuer dies while Appanna the persecutor survives. Poetic justice is the law of Romance because it depicts the ideal situation. By the end of the play Rani has traveled a long route from innocence to experience. When she finds the dead Naga in her hair, she has acquired enough cunning to successfully persuades her husband to allow her son to perform the last rites for Naga, as a father is entitled to receive from his son. The scope of Nagamandala extends beyond feminism into matriarchy.

### Conclusion-

To conclude, it has been observed that Girish Karnad has influenced more by the Yakshagana so the literary works of Karnad has great influence of Indian drama tradition which is Yakshagana so the main objective of the research is justified of the researcher.

### References-

- [1.] Dhawan, R.K. —Girish Karnad: The Man and the Writer. || The Plays of Girish Karnad: Critical Perspectives. Ed. Jaydipsinh Dodiya. New Delhi: Prestige Book, 1999. 13. Print. [2.]Karnad, Girish. Yayati. New Delhi: Oxford University Press, 2008.Print.
- [3.]---.Strachey, Lytton. Eminent Victorians. India: Dover Publications, 2006. Print.



- [4.]. Chandra Rajan, *The Five and Twenty Tales of the Genie*, Penguin Books ; 1995, P: 64-68. [5.]. Chari, A. Jaganmohana. "Girish Karnad's Hayavadana and Nagamandala: A Study in Performance and Critical Perspectives. Ed. Tutun Mukherjee. 199-207.
- [6]. Girish Karnad; *Three Plays Naga-Mandala*, Oxford University Press, New Delhi, 1999, P: 22.
- [7]. [http://pintokarnad.blogspot.in/2011\\_05\\_01\\_archive.html](http://pintokarnad.blogspot.in/2011_05_01_archive.html)
- [8]. Karnad, Girish. *Naga-Mandala: A Play with a Cobra*, New Delhi: Oxford University Press, 2004.
- [9]. Khatri, C.L. and Arora, S.K. (eds.) *Thunder on Stage: A Study of Girish Karnad's Plays*. Jaipur: Book Enclave, 2008 . Print.
- [13]. Rangan, V. "Myth and Romance in Nagamandala or their Subversion". *Girish Karnad's Plays: Performance and Critical Perspectives*. Ed. Tutun Mukherjee. 199-207.
- (14) Karnad, Garish. "Acrobating between the Traditional and Modern", *Indian Literature* 32.3(May-June1989).85-100. (A Speech in the Meet of Author Programme). Print.
- (15) Karnad, Girish. "Appendix". *Collected Plays: Tughlaq, Hayavadana, Bali: The Sacrifice, Naga-Mandala*. Vol.1. New Delhi: OUP, 2005. Print.
- (16) Mukherjee, Tutun. "In His Own Voice: A Conversation with Girish Karnad." *Girish Karnad's Plays: Performance and Critical Perspectives*. Ed. Tutun Mukherjee. New Delhi: Pencraft International, 2008: 27-55. Print. Rai, R.N. "Brecht's Non-Aristotelian Theory of Drama and Dramatic Arts of Girish Karnad." *Indian Drama in English: An Anthology of Recent Criticism*. Ed. C. L. Khatri and Kumar Chandradeep. Jaipur: Book Enclave, 2006. 23-44. Print.

**મનુષ્યજીવન અને કર્મ સિદ્ધાંત : નરસિંહ મહેતાનાં પદોમાં રજૂ થતો કર્મસિદ્ધાંત - એક સમીક્ષા**

**Bhaveshkumar Kiritkumar Thakar**  
**Research Scholar- Sanskrit,**  
**Veer Narmad South Gujarat University, Surat**

**૧. Abstract (ટૂંકસાર)**

કર્મસિદ્ધાંત એ ભારતીય દર્શનોમાંનો એક મહત્વનો સિદ્ધાંત છે. આ સિદ્ધાંતના મુજબ, વ્યક્તિ જે કર્મો કરે છે તેના આધારે તેનું ભવિષ્ય નક્કી થાય છે. સરળ શબ્દોમાં કહીએ તો, જે વાવશે તે જ દોહું મળશે. આ સંશોધનપત્ર મુખ્યત્વે ગુજરાતીના આદિકવિ નરસિંહ મહેતાનાં પદો દ્વારા રજૂ થતા કર્મ સિદ્ધાંતની ઊંડાણપૂર્વકની ચર્ચા કરે છે. કર્મ સિદ્ધાંત એક પ્રાચીન ભારતીય દર્શન છે જેના અનુસાર વ્યક્તિના કર્મો તેના વર્તમાન અને ભવિષ્યના જીવનને પ્રભાવિત કરે છે. આ સંશોધનપત્રમાં નરસિંહ મહેતાનું કર્મ સિદ્ધાંત પ્રત્યેનું વલણ: કવિએ પોતાનાં પદોમાં કર્મ સિદ્ધાંતને કેવી રીતે રજૂ કર્યો છે તેનું વિશ્લેષણ, કર્મ સિદ્ધાંતના મુખ્ય પાસાઓ: નરસિંહ મહેતાનાં પદોમાંથી ઉદાહરણો આપીને કર્મ સિદ્ધાંતના વિવિધ પાસાઓ જેવા કે કર્મફળ, પુણ્ય-પાપ, મોક્ષ વગેરેની ચર્ચા, મનુષ્યજીવન અને કર્મનો સંબંધ, કર્મ સિદ્ધાંત મનુષ્યના જીવનમાં કેવી રીતે પ્રભાવ પાડે છે તેનું નિરૂપણ, નરસિંહ મહેતાનાં પદોમાં કર્મ સિદ્ધાંતની સુસંગતતા: આજના સંદર્ભમાં નરસિંહ મહેતાનાં વિચારોની સુસંગતતાવગેરે આવરી લેવામાં આવશે. સંશોધનપત્રનો ઉદ્દેશનરસિંહ મહેતાનાં કાવ્યોમાં રહેલા દાર્શનિક પાસાઓને સમજવા, કર્મ સિદ્ધાંતને સાહિત્યિક દ્રષ્ટિકોણથી સમજવા, મનુષ્યજીવન અને કર્મના સંબંધને નવા દ્રષ્ટિકોણથી જોવા.

**૨. કીવર્ડ્સ (મહત્વના શબ્દો):** નરસિંહ મહેતા, કર્મ સિદ્ધાંત, ગુજરાતી સાહિત્ય, દર્શન, મનુષ્યજીવન

**૩. પરિચય**

કર્મ એટલે આપણા વિચારો, શબ્દો અને કર્મો. આપણે જે વિચારીએ છીએ, જે બોલીએ છીએ અને જે કામ કરીએ છીએ તે બધું કર્મ છે. આ કર્મોના આધારે આપણા આત્માને સૂક્ષ્મ કણો ચોંટી જાય છે, જેને કર્મફળ કહેવાય છે. આ કર્મફળ આપણને સુખ અને દુઃખના રૂપમાં અનુભવાય છે.

કર્મનું ફળ અનિવાર્ય છે. જે કર્મ કરીશું તેનું ફળ અચૂક મળશે. આપણા વર્તમાન જીવનમાં અનુભવતા સુખ-દુઃખ આપણા પૂર્વજન્મના કર્મોનું પરિણામ છે. કર્મ આપણને સંસારના ચક્રમાં બાંધી રાખે છે. આપણા વિચારો, શબ્દો અને કર્મો દ્વારા નવા કર્મો બનતા રહે છે. કર્મનો નાશ કરવા માટે આપણે સારા કર્મો કરવા જોઈએ અને પસ્તાવો કરવો જોઈએ....૧

(ભગવદગીતાનો મર્મ, ડો. ગિરીશ ભટ્ટ, સરસ્વતી પ્રકાશન, વરોદરા. પૃ. ૩૪)

કર્મસિદ્ધાંત આપણને સારા કર્મો કરવા માટે પ્રેરિત કરે છે. આ સિદ્ધાંત આપણને જીવનના સુખ-દુઃખને સમજવામાં મદદ કરે છે. કર્મસિદ્ધાંત આપણને આધ્યાત્મિક પ્રગતિના માર્ગ પર આગળ વધવા માટે પ્રેરિત કરે છે. કર્મસિદ્ધાંત હિંદુ ધર્મ, જૈન ધર્મ અને બૌદ્ધ ધર્મ જેવા ઘણા ભારતીય ધર્મોમાં મળી આવે છે. જો કે, દરેક ધર્મમાં કર્મસિદ્ધાંતને લગતા વિચારોમાં થોડો ફરક જોવા મળે છે.

**૪. નરસિંહ મહેતાનાં પદોમાં રજૂ થતો કર્મસિદ્ધાંત**

કર્મસિદ્ધાંત આપણને આપણા જીવન માટે જવાબદાર બનવાનું શીખવે છે. આ સિદ્ધાંત આપણને સારા કર્મો કરવા માટે પ્રેરિત કરે છે અને આપણને આધ્યાત્મિક પ્રગતિના માર્ગ પર આગળ વધવામાં મદદ કરે છે. ભક્તિનો મહિમા ગાતાં નરસિંહ લખે છે :

“મનુષ્યને કર્મ કરવા ઘટે જ્યાં લગી;

ત્યાં લગી ભક્તિનો ભેદ અળગો.”...૨

(નરસિંહ મહેતાનાં પદો, સં. અનંતરાય રાવળ, પૃ. ૪૫)

અર્થાત્, વ્યક્તિને કર્મ વળગેલાં રહે છે, જ્યાં સુધી એ શુદ્ધ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ કરતો નથી. કારણ કે સાચો ભક્ત જે કંઈ કર્મ કરે છે, તે હિર ઈચ્છાને વશ થઈને કરે છે, તેથી એ નિષ્કામ હોવાથી તેનું બંધન લાગતું નથી. કર્મના મર્મને જાણનાર નરસિંહ કર્મકૌશલ્ય દ્વારા જ કર્મ કરે છે. સતર્ક રહીને જ કર્મ કરે છે. તેથી પોતે સ્પષ્ટતા કરે છે :

“હળવાં કરમનો હું નરસૈયો;

મુજને તો વૈષ્ણવ વહાલા રે.”...૩

(નરસિંહ મહેતાનાં પદો, જેસલપુરા, ૧૯૮૮, ૪૮, પૃ. ૫૭)

વિચાર વિના કોઈ પણ ક્રિયા ઉદ્ભવતી નથી. તેથી કહી શકાય કે પ્રત્યેક વિચાર એ ક્રિયાનું બીજ છે.

એનો અર્થ એમ પણ થાય કે કોઈ પણ વ્યક્તિ કર્મ કર્યા વિના એક ક્ષણ પણ રહી ન શકે.

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે પણ શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાં કહ્યું છે કે,

અર્થાત્, “કોઈ પણ વ્યક્તિ કોઈ પણ કર્મ કર્યા વિના એક ક્ષણ પણ રહી શકતો....૪

નીતિશતક કહે છે :

“કર્માયતં ફલં પુસાં બુદ્ધિઃ કર્માનુસારિણી..૫

(ભગવદ્ગીતાનો મર્મ, ડૉ. ગિરીશ ભટ્ટ, સરસ્વતી પ્રકાશન, વડોદરા. પૃ. ૧૦૪)

જે કર્મના સિદ્ધાંતને માને છે તે ‘કર્મ યોગ’ને જાણે છે : “કર્મનો સિદ્ધાંત” અને “કર્મ યોગ” એક સિદ્ધાંતની બે બાજુ છે. કર્મવિપાકના સંદર્ભે જો કર્મનું વર્ગીકરણ કરવામાં આવે તો, ઉપરોક્ત હકીકત સ્પષ્ટ થાય છે.

કર્મવિપાકના આધારે કર્મનું વર્ગીકરણ આ પ્રમાણે થાય છે :

(૧) સકામ કર્મ

(૨) નિષ્કામ કર્મ

સકામ કર્મના બે વિભાગ થાય છે :

(૧) પુણ્ય કર્મ ધર્મ કર્મ - વિહિત કર્મ - -

(૨) પાપ કર્મ - અધર્મ કર્મ - નિષિદ્ધ કર્મ

નિષ્કામ કર્મના પણ બે વિભાગ પડે છે :

(૧) નિસ્વાર્થ કર્મ

(૨) નિષ્કામ કર્મ

(૧) નિસ્વાર્થ કર્મ, સકામ કર્મ અને નિષ્કામ કર્મ, બંને હોઈ શકે છે.

- જો નિસ્વાર્થ કર્મ કોઈનું ભલું કરવા કે કોઈને મદદ કરવા, કરવામાં આવતું હોય તો એમાં કર્તાભાવ હોવાથી સકામ કર્મ બની જાય છે. સકામ કર્મ બંધન કર્તા છે. કારણ તેનાં ફળ સુખ કે દુઃખ ભોગવવા જન્મધારણ કરવો પડે છે.

- પરંતુ નિસ્વાર્થ કર્મ જો કર્મ ફળની અપેક્ષા વિના, પ્રભુ પ્રીત્યર્થ, પ્રભુની ઈચ્છાને વશવર્તી નિઃસંગ બુદ્ધિથી કરવામાં આવે તો તે નિષ્કામ કર્મ બની જાય છે. જેનું બંધન ઉપજતું નથી.

આમ નિસ્વાર્થ કર્મ કરવામાં કર્મ કૌશલ્યની જરૂર રહે છે.

(૨) કર્મયોગ એ જ શ્રેષ્ઠ નિષ્કામ કર્મ છે. જેનું કોઈ બંધન નથી. તેથી જન્મમરણના ચક્રમાંથી મુક્ત કરી મોક્ષ અપાવે છે.

નરસિંહ બહુ સ્પષ્ટ માને છે કે, કર્મના કાયદાના આધારે જ સમગ્ર વિશ્વનું સંચાલન સુવ્યવસ્થિત રીતે ચાલે છે. સંચાલનમાં ક્યાંય કોઈ ગરબડ ચાલતી નથી.

કર્મનો મર્મ જે જાણે છે, તે યોગી હોય છે. કારણ કર્મનો મર્મ જાણનારની સર્વ શંકાઓ, અશ્રદ્ધાઓ, કુતર્કોનું નિરાસન થાય છે. તેને સત્ય સમજાય છે. તેનો ભ્રમ દૂર થાય છે અને ભ્રમ પ્રતિ ગતિ થાય છે. આ વાતને નરસિંહ બરાબર સમજે છે. એટલે જ એ નોંધે છે :

“વરણના ધરમનાં કરમ કરવાં ટળ્યાં;

મરમ જાણ્યો ત્યારે ભરમ ભાંગ્યો.’...૬

(નરસિંહ મહેતાનાં પદો,જેસલપુરા, ૧૯૮૮, ૨૮૬)

સાધુ પુરુષો, જોગિયા, વેદિયા, સુકવિ, ભોગિયા, વૈષ્ણવ, દાતાર, પતિવ્રતા નાર વગેરેને નરસિંહ શિખામણ આપતાં પોતાના ધર્મ સંભાળતાં સંભાળતાં કહે છે :

“આ પેરે આપણા ધર્મ સંભાળવા,  
કર્મનો મર્મ લેવો વિચારી.”..૭

(નરસિંહ મહેતાનાં પદો,જેસલપુરા, ૧૯૮૮, ૨૭૪)

સ્વધર્મ આચરતાં આચરતાં જ કર્મનો મર્મ સમજાઈ જશે.

જેને કર્મનો મર્મ સમજાય જાય છે, તે નર-નારીનો ફરી અવતાર થતો નથી, એમ નરસિંહ જણાવે છે.

નરસિંહ કર્મના મર્મને બરાબર જાણે છે, પણ જેઓ જાણતા નથી, તેઓ ભ્રમમાં રહે છે. પોતાનું કાર્ય બગડતાં તેઓ ભવિષ્યને ભાંડે છે. પૂર્વના કર્મોને ભાંડે છે અને જો કદી કાર્યલાભ થાય છે, તો તે કહે છે “હિરતણી સહાય થઈ રે.” હકીકતમાં ઈશ્વર તો વ્યક્તિએ કરેલા કર્મનું ફળ જ આપતો હોય છે. જેની બબર કર્મના મર્મને ન જાણનારને હોતી નથી. ઈશ્વર કોઈને સુખદુઃખ આપતો નથી. કર્મના ફળ જ સુખદુઃખ રૂપે મળતાં હોય છે.....૮

(નરસિંહ મહેતાનાં પદો,જેસલપુરા, ૧૯૮૮, ૨૮૦)

ભવિષ્યને ભાંડનારા, કર્મનો મર્મ જાણતા નથી. ખરાબ કર્મો કરીને સારાં ફળની આશા રાખવી વ્યર્થ છે. છતાં, “કરણી તો કાગની, હોડ કરે હંસની, તારી તો વાત હિર કાઢે લવમાં” અર્થાત્, કાગકર્મ કરીને હંસકર્મના ફળની આશા રાખવી કેટલી વ્યાજબી છે ?

સકામ કર્મ કરનારનાં પુણ્ય કર્મ જ્યારે વધી જાય છે ત્યારે તેના પરિપાકરૂપે વ્યક્તિને સ્વર્ગ સુખ મળે છે. પરંતુ સકામ કર્મ તો ધન સમાન છે. જેમ વાપરીએ તેમ ઘટતાં જાય છે અને એટલે જ પુણ્યકર્મો પરવારતાં વ્યક્તિએ ફરીથી સ્વર્ગમાંથી મર્ત્યલોકમાં જન્મ લઈને નવેસરથી પુણ્યકર્મ આચરવાં પડે છે ! પુણ્ય કર્મો સ્વર્ગ અપાવી શકે છે, મોક્ષ નહીં.

જે વ્યક્તિ કર્મનો મર્મ બરાબર જાણતો કે સમજતો નથી, તેને હરિભજનમાં આળસ આવે છે. તેને ગોવિંદના ગુણ ગાતાં અને નાચતાં લાજ આવે છે. નરસિંહ આ હકીકતને સુપેરે સ્પષ્ટ કરતાં લખે છે :

“આજ ગોવિંદ-ગુણ ગાઈને નાચવા લાજ આવે તુને કરમહીણા ?”  
એવા કરમહીણાને જ હરિગુણ ગાતાં નિદ્રા આવે છે.

“બાપજી, પાપ મેં કવણ કીધાં હશે;  
નામ લેતાં તારું નિદ્રા આવે.”...૯

(નરસિંહ મહેતાનાં પદો,જેસલપુરા, ૧૯૮૮, ૨૭૯-૨૮૫)

પ્રારબ્ધ કર્મ તો સર્વને ભોગવવું જ પડે છે. કર્મનો કાયદો બનાવનાર પણ એમાંથી બાકાત નથી. આમ કર્મ સર્વોપરિ છે. કર્મ પાસે સર્વ લાયકાર છે. કદાચ ઈશ્વર માફ કરી દે પણ કર્મ કોઈનેય માફ કરતું નથી.

કર્મનો મર્મ નરસિંહ તેથી જ સર્વજનને સંબોધીને (જ્યારે ધરમ કરતાં ઘાડ પડે તેવે વખતે) કહે છે કે,

“સુખ દુઃખ મનમાં ન આણીએ ઘટ સાથે રે ઘડિયાં;  
ટાળ્યાં તે કોઈનાં નવ ટળે, રઘુનાથનાં ઘડિયાં.”...૧૦

(નરસિંહ મહેતાનાં પદો,જેસલપુરા, ૧૯૮૮, ૨૮૬)

અચાનક આવી પડતાં સુખદુઃખ વિશે ગમગીન ન થતાં એમ સમજીને ચાલવું જોઈએ કે એતો આપણાં કરેલાં આપણને” ફળે છે. નરસિંહને એ વાતની સમજણ છે કે, આપણે મન, વચન અને આચરણ દ્વારા જે કાંઈ કર્યો કરીએ છીએ, તે સર્વ આપણા અંતઃકરણમાં (કર્માશય) સૂક્ષ્મ વાસનાના સંસ્કારરૂપે અંકિત થઈ જાય છે. તે કર્માશયમાંથી કોઈપણ વૃત્તિ ગમે ત્યારે તીવ્રતા ધારણ કરી, આપણા મન ઉપર અસર ઉપજાવે છે અને નવીન કર્મ કરવા માટે કારણરૂપ બને છે. ઉપરોક્ત તમામ પદ-પંક્તિઓમાં નરસિંહે કર્મના સિદ્ધાંતને પ્રતિપાદિત કર્યો છે અને તેમાં પોતાની પૂર્ણ આસ્થા અભિવ્યક્ત કરી છે. કર્મના સિદ્ધાંત સાથે તેનો જોડિયો સિદ્ધાંત પૂર્વજન્મ અને પુનર્જન્મમાં પણ પોતાની પૂર્ણ શ્રદ્ધા અભિવ્યક્ત કરી છે.

---

## The Role of NGOs and Civil Society in Combating Land Grabbing in India

Mr. Nishant Pravinbhai Vala

LL.M, Ph.D. Scholar

Shree Dhanjibhai D. Kotiyawala Municipal Law College - Porbandar

### Abstract

Land grabbing in India is a pervasive issue, particularly affecting marginalized communities, including tribal, farmers, and urban dwellers. The unlawful acquisition of land not only disrupts lives but also threatens the socio-economic stability of these groups. This research paper explores the role of non-governmental organizations (NGOs) and civil society in combating land grabbing, focusing on their contributions through legal advocacy, grassroots mobilization, and policy reforms. It begins by providing an overview of the legal framework surrounding land grabbing in India, including the Land Grabbing (Prohibition) Act of 2020, and highlights the effectiveness of current laws in preventing such acts. The paper examines the involvement of NGOs in providing legal assistance to affected communities, utilizing public interest litigation (PIL), and raising awareness at local and national levels. It further looks into how civil society groups work on the ground to mobilize communities, document instances of land grabbing, and push for legislative changes that safeguard the rights of marginalized groups. Through case studies, the paper analyses specific examples where NGOs have made significant strides in addressing land grabbing, both in urban and rural contexts, with a particular focus on tribal areas. However, the research also addresses the challenges faced by NGOs, including legal hurdles, bureaucratic delays, threats to activists, and resource constraints. The paper concludes with recommendations for strengthening the legal framework, enhancing collaboration between NGOs, civil society, and government, and building the capacity of NGOs to better address land grabbing. Ultimately, the research underscores the essential role that NGOs and civil society play in safeguarding land rights and combating the widespread issue of land grabbing in India.

**Keywords:** Land Grabbing, Non-Governmental Organizations (NGOs), Civil Society, Land Rights Protection, Socio-Economic Impact Policy Reforms.

### Introduction:

Land grabbing is a widespread issue in India that significantly affects marginalized communities, including tribal populations, farmers, and urban dwellers. It involves the illegal or forceful acquisition of land, often resulting in the displacement of individuals from their homes and livelihoods. This phenomenon has been exacerbated by rapid urbanization, industrialization, and the expansion of agricultural projects. While land grabbing has severe socio-economic consequences, it is often exacerbated by gaps in legal protections, ineffective enforcement, and the growing influence of powerful political and corporate interests. In response to these challenges, non-governmental organizations (NGOs) and civil society have played an instrumental role in combating land grabbing and advocating for the rights of affected communities. The purpose of this research paper is to examine the role of NGOs and civil society in addressing land grabbing in India. NGOs have emerged as key actors in providing legal aid to those affected, raising awareness about the implications of land grabbing, and pushing for systemic reforms. Many NGOs work closely with vulnerable groups to challenge unlawful land acquisitions through legal channels such as Public Interest Litigation (PIL), lobbying for policy changes, and organizing grassroots campaigns to mobilize affected communities. Civil society, with its networks and grassroots connections, acts as a catalyst in creating a collective voice for those fighting against land grabbing. India's legal

---

framework provides mechanisms to protect land rights, including the Land Grabbing (Prohibition) Act, 2020, and constitutional provisions under Articles 19 and 300A. However, these legal provisions are often inadequately enforced, leaving affected communities vulnerable to land dispossession. The judiciary, in certain cases, has stepped in to address these issues through PILs, but the slow pace of justice and bureaucratic obstacles often hinder meaningful progress. Therefore, NGOs and civil society organizations are critical in filling these gaps by advocating for better legal frameworks and providing access to justice for disenfranchised communities.

This paper will delve into the effectiveness of existing legal provisions in combating land grabbing, analyse the strategies used by NGOs and civil society in challenging land acquisitions, and highlight the challenges they face. By examining case studies of successful legal interventions and community mobilizations, this paper aims to provide a comprehensive understanding of the role of NGOs and civil society in combating land grabbing in India, while also proposing recommendations for improving the legal and institutional responses to this pervasive issue.

### **Legal Framework on Land Grabbing in India**

Land grabbing in India is a multifaceted issue that intersects with various legal domains, including property rights, constitutional protections, and land acquisition laws. While India has a robust legal framework to protect land rights, enforcement remains a significant challenge. This section will explore the legal mechanisms available to prevent and address land grabbing, highlighting key legislation, constitutional provisions, and judicial interpretations that shape the legal landscape.

IN The Indian Constitution, while not directly addressing land grabbing, provides important protections related to property rights. Article 19(1)(f) grants citizens the right to acquire, hold, and dispose of property, although this right was curtailed by the 42nd Amendment in 1976, which removed property as a fundamental right. However, Article 300A of the Constitution guarantees the right to property as a constitutional right, ensuring that no person shall be deprived of their property except by authority of law. This provision is crucial in land grabbing cases, as it prevents unlawful seizure of land without due process. Despite this, the legal mechanism for protecting land rights has proven inadequate in the face of widespread land grabbing, particularly where powerful interests are involved.

One of the most significant recent developments in addressing land grabbing in India is the Gujarat Government enacted the Gujarat Land Grabbing (Prohibition) Act, 2020 enacted by various state governments. This Act seeks to prohibit land grabbing and outlines the penalties for those found guilty of unlawfully acquiring land. The Act defines land grabbing as the illegal or forcible acquisition of land, particularly in urban and rural areas, and imposes stringent penalties on the perpetrators. It also establishes a special tribunal for adjudicating land grabbing cases, ensuring swift resolution and providing a mechanism for the recovery of grabbed land. While this Act is a step in the right direction, its enforcement remains challenging. There is a lack of awareness about the law among affected communities, and in some cases, state machinery has been slow to implement it. Furthermore, the Act's success is contingent on the establishment of a transparent and efficient judicial process.

### **The Role of NGOs and Civil Society**

Land grabbing is a significant and persistent issue in India, particularly affecting marginalized communities such as tribal populations, farmers, and urban dwellers. It involves the illegal or forceful acquisition of land, often resulting in the displacement of individuals and the destruction of their livelihoods. While India has a legal framework in place to prevent such practices, effective enforcement has remained a major challenge. Non-governmental organizations (NGOs) and civil society groups have been at the forefront of the fight against land grabbing, playing a critical role in raising awareness, providing legal aid, and advocating for systemic reforms to protect land rights.

One of the primary ways in which NGOs and civil society organizations contribute to combating land grabbing is through legal advocacy. They assist affected communities by offering legal support, often providing pro bono services to those who cannot afford representation. NGOs help to navigate the complex legal landscape, particularly in cases involving land grabbing by powerful political or corporate entities. They also use Public Interest Litigation (PIL) as a tool to challenge unlawful land acquisitions. PILs have proven to be an effective means of holding government authorities accountable, compelling them to take action against land grabbers and protect the rights of affected individuals. For example, organizations like the National Alliance of People's Movements (NAPM) have been actively involved in PILs aimed at securing the land rights of marginalized communities, particularly in urban areas where land grabbing is rampant.

In addition to legal advocacy, NGOs and civil society organizations also focus on grassroots mobilization. They work closely with local communities to raise awareness about land rights, educate people about legal protections, and build resistance against land grabbing. Through community-based campaigns, protests, and public hearings, these organizations amplify the voices of those affected by land grabs. Grassroots mobilization is particularly crucial in tribal and rural areas where people may not be aware of their rights or may feel powerless against large-scale land acquisition projects. Civil society organizations also provide platforms for these communities to express their concerns and demand justice, effectively empowering them to become active participants in the fight against land grabbing.

Documentation and reporting are other essential roles played by NGOs in combating land grabbing. They meticulously document cases of land grabbing, collecting evidence, and compiling reports that highlight the extent of the issue. These reports often serve as crucial tools for advocacy, bringing the problem to the attention of policymakers, the media, and the public. For instance, NGOs regularly produce reports that detail specific instances of land grabbing, the socio-economic impact on affected communities, and the failure of government authorities to protect land rights. These reports are vital for policy reforms, as they provide factual data that can influence legislation and bring about changes in government practices.

Despite these significant contributions, NGOs and civil society organizations face numerous challenges in combating land grabbing. Legal and bureaucratic hurdles often prevent swift resolution of land disputes, and powerful political or corporate interests can undermine efforts to protect land rights. Additionally, NGOs working on land rights issues are sometimes met with intimidation and threats, particularly in regions where land grabbing involves influential figures or companies. The lack of adequate funding and resources further limits the ability of NGOs to carry out their work effectively.

#### **Challenges Faced by NGOs and Civil Society**

Despite the significant role played by NGOs and civil society in combating land grabbing in India, they face numerous challenges that hinder their effectiveness. These challenges stem from legal, political, bureaucratic, and resource-related issues.

One of the primary challenges is legal and bureaucratic hurdles. The slow pace of the judicial system and delays in the implementation of laws often prevent timely resolution of land grabbing cases. Even when NGOs successfully file Public Interest Litigations (PILs) or engage in legal advocacy, the judicial process can be prolonged, leading to further marginalization of affected communities. Additionally, bureaucratic inefficiencies and lack of coordination between different government departments often prevent the enforcement of existing land protection laws, such as the Land Grabbing (Prohibition) Act, 2020. NGOs and civil society organizations also face significant political pressure. Land grabbing often involves powerful political and corporate interests, which can influence local authorities, making it difficult for NGOs to secure justice. Activists and



organizations working on land rights issues may face intimidation, threats, or violence, particularly in regions where land grabbing is linked to influential figures. This can create a chilling effect on advocacy efforts and limit the capacity of civil society to challenge illegal land acquisitions effectively.

Another major challenge is limited resources and funding. Many NGOs struggle with financial constraints, which hinder their ability to carry out extensive awareness campaigns, legal interventions, and grassroots mobilization. This is particularly true for smaller, local NGOs that lack the resources to scale their efforts or operate in remote areas where land grabbing is most prevalent. Finally, lack of awareness among affected communities about their legal rights and protections often results in failure to act or report instances of land grabbing. NGOs must invest significant time and effort in educating and empowering these communities, but this process is often slow and resource-intensive.

### **Conclusion**

In conclusion, NGOs and civil society organizations play an indispensable role in combating land grabbing in India by offering legal support, advocating for policy reforms, mobilizing affected communities, and documenting instances of land dispossession. Through their efforts, they have been able to raise awareness, challenge illegal land acquisitions, and help protect the rights of marginalized groups, including tribal communities, farmers, and urban dwellers.

However, the path to addressing land grabbing is fraught with challenges. Legal and bureaucratic inefficiencies, political interference, limited resources, and the lack of awareness among affected communities continue to hinder the effectiveness of these organizations. Despite these obstacles, NGOs remain crucial actors in the fight for land rights, often stepping in where government authorities fail to act or where enforcement mechanisms are weak. For NGOs and civil society organizations to be more effective in combating land grabbing, it is essential that the legal framework is strengthened, enforcement is improved, and greater political will is generated to protect land rights. Moreover, increased collaboration between NGOs, government bodies, and the private sector, alongside enhanced capacity building and resources for NGOs, will be vital in achieving sustainable solutions. The success of these efforts will not only safeguard the land rights of vulnerable communities but also contribute to the broader goals of social justice and equitable development in India.

### **Reference**

- 1) The Gujarat Government enacted the Gujarat Land Grabbing (Prohibition) Act, 2020
- 2) Understanding the Role of NGOs in Advocating for Land Rights in India: Challenges and Success Stories. International Journal of Rural Development
- 3) Land Rights and Social Justice in India: The Role of Civil Society in Addressing Land Grabbing Issues. Law and Development Review,
- 4) Land Grabbing and Displacement in India: The Role of NGOs in Legal Advocacy and Awareness. Mumbai
- 5) Advocacy and Legal Support: Analyzing NGO Strategies to Combat Land Grabbing in India. Law and Society Review

## The Role of Digital Libraries in Modern Education

Mehulbhai B. Jani  
Ph.D. Scholer  
Noble University, Junagadh

### Abstract:

The rapid advancement of digital technologies has significantly transformed the landscape of education, with digital libraries playing a central role in this transformation. Digital libraries, which provide electronic access to a wide range of resources including e-books, academic journals, articles, and multimedia content, have become essential tools for students, educators, and researchers worldwide. This paper examines the evolution of libraries, from traditional brick-and-mortar structures to digital platforms, and highlights the various ways in which digital libraries have enhanced modern education.

One of the most significant advantages of digital libraries is their ability to provide 24/7 access to educational resources, removing geographical and temporal barriers. They offer cost-effective solutions by reducing the need for physical infrastructure and enabling wider access to academic content. Digital libraries also facilitate personalized learning experiences, allowing students to access resources at their own pace and based on their specific needs. Additionally, these platforms promote collaborative learning by enabling the sharing and exchange of resources among students and educators.

However, despite their numerous benefits, digital libraries face several challenges. Issues such as the digital divide, where access to technology and the internet remains limited in certain regions, hinder the widespread adoption of digital resources. The overwhelming volume of information available in digital libraries can also lead to information overload. Furthermore, intellectual property concerns and the need for robust digital literacy programs are significant barriers to effective utilization.

This paper also explores the future of digital libraries, including emerging trends such as artificial intelligence, machine learning, and virtual reality, and their potential impact on education. Ultimately, this research highlights the indispensable role of digital libraries in modern education and provides insights into overcoming the challenges they face to maximize their benefits.

**Key Word :** Digital Libraries, Modern Education, E-Learning, Educational Technology, Library Management Systems, Online Learning Platforms

### Introduction :

The evolution of information technology has dramatically reshaped the way educational resources are accessed, stored, and disseminated. Traditional libraries, which once served as the primary repositories of knowledge, have transitioned into digital libraries, becoming indispensable tools in modern education. A digital library refers to a system that stores, organizes, and provides access to digital versions of various educational resources, including books, journals, articles, multimedia content, and databases. This transition from physical to digital libraries has had a profound impact on the accessibility, affordability, and dissemination of knowledge, particularly in the context of higher education. Digital libraries are a direct response to the growing need for a more efficient, flexible, and accessible approach to learning. They allow students and educators to access a vast array of resources from any location, at any time, eliminating the constraints of physical space and time. Unlike traditional libraries that require users to visit specific locations to retrieve materials, digital libraries provide on-demand access to information, fostering an environment conducive to

lifelong learning. This shift not only enhances the educational experience but also democratizes access to knowledge, particularly for individuals in remote or underserved areas.

The benefits of digital libraries are evident in their role in supporting personalized learning. With a wide array of digital resources at their fingertips, students can tailor their learning experiences according to their needs and preferences. The ability to access diverse educational materials also encourages self-paced learning, making education more flexible and adaptable to individual schedules. Moreover, digital libraries enable collaborative learning environments, where students and educators can share resources, participate in discussions, and work on projects together, regardless of geographical location. However, despite their significant advantages, the widespread adoption and effective utilization of digital libraries are not without challenges. Issues such as the digital divide—where access to technology and the internet remains limited in certain regions—pose significant barriers to the full potential of digital libraries. Additionally, the sheer volume of information available can sometimes lead to information overload, making it difficult for users to navigate and identify relevant resources. Furthermore, there are concerns regarding digital literacy, intellectual property, and the preservation of digital content.

This paper aims to explore the role of digital libraries in modern education, focusing on their benefits, challenges, and future prospects. By examining their impact on students and educators, the paper will provide insights into how digital libraries can be better integrated into the educational framework to enhance learning experiences and outcomes.

#### **Digital Libraries**

Digital libraries represent a modern evolution of traditional library systems, leveraging technology to store, manage, and provide access to vast collections of digital content. Unlike physical libraries that house books, journals, and other printed materials, digital libraries make these resources available in electronic formats, including e-books, online journals, multimedia files, and databases. The shift from physical to digital has transformed how information is accessed, shared, and utilized in educational settings, contributing to a more efficient and flexible learning environment. One of the primary advantages of digital libraries is their accessibility. Digital libraries eliminate the need for users to physically visit a specific location to access information. With internet connectivity, users can access resources from anywhere at any time, which is especially beneficial for students and researchers who need immediate access to academic materials. This convenience fosters a more dynamic and responsive approach to learning, where students can explore topics, conduct research, and engage with content at their own pace.

Additionally, digital libraries offer significant cost savings. Maintaining digital resources often requires less physical infrastructure, and digital content is typically more cost-effective to produce and distribute. Institutions can save on printing, shipping, and space requirements while providing a more extensive range of materials to a larger number of users. Moreover, digital libraries facilitate a broader diversity of materials, such as interactive content, video lectures, and podcasts, which are not typically available in traditional libraries. However, the transition to digital libraries also introduces challenges. One key issue is the digital divide, where unequal access to technology and the internet can hinder some users from fully benefiting from digital resources. Furthermore, the sheer volume of digital content available may lead to information overload, complicating the search for relevant materials. Digital literacy is another concern, as users must be equipped with the skills to navigate digital libraries effectively. Despite these challenges, digital libraries continue to play an integral role in modern education, offering unprecedented access to information while supporting diverse learning needs.

---

### **Digital Libraries in Different Educational Settings**

Digital libraries have proven to be versatile tools, adaptable to various educational settings, ranging from primary and secondary schools to universities and research institutions. Their implementation varies based on the specific needs of the institution, the technological infrastructure available, and the educational goals. In primary and secondary education, digital libraries play an important role in providing students with access to age-appropriate educational content. They offer an array of resources, including interactive books, educational games, multimedia content, and e-learning tools, which help engage younger learners. For example, digital libraries can include audio-visual materials that assist in understanding complex subjects like science, history, and mathematics. Teachers also benefit from digital libraries by having easy access to teaching materials, lesson plans, and supplementary resources. This fosters an enriched classroom environment and helps students improve their digital literacy skills from an early age.

In higher education, digital libraries serve as essential platforms for academic research and learning. Universities and colleges maintain large collections of scholarly resources, including journals, research papers, thesis repositories, and e-books. These digital libraries enable students and faculty to conduct research, access cutting-edge scholarly work, and stay updated on the latest developments in their fields. Digital libraries also support interdisciplinary learning by providing access to diverse sources across multiple disciplines. In this setting, the integration of search engines, citation tools, and advanced filtering systems makes it easier to locate and use information effectively.

### **The Role of Digital Libraries in Enhancing Digital Literacy among Students**

Digital libraries play a crucial role in enhancing digital literacy, a skill that is increasingly essential in the modern world. By providing students with access to a wide range of digital resources, such as e-books, academic journals, and multimedia content, digital libraries foster the development of crucial digital skills, including information retrieval, online navigation, and the critical evaluation of digital content.

Through regular use of digital libraries, students learn how to effectively search for and access information, navigate complex databases, and use digital tools to organize and manage their findings. This engagement promotes an understanding of how digital platforms function and helps students develop a sense of information literacy. They also learn how to assess the credibility and relevance of online resources, a vital skill in today's information-rich world.

Moreover, digital libraries encourage self-directed learning and critical thinking. As students interact with various formats and platforms, they gain confidence in using technology to explore, analyse, and synthesize information. This hands-on experience not only improves their ability to work independently but also equips them with the skills needed for lifelong learning and future professional development.

### **Challenges and Barriers**

While digital libraries offer significant advantages, their widespread adoption and effectiveness are hindered by several challenges and barriers. These obstacles can be grouped into technological, socio-economic, and educational factors.

**Digital Divide:** One of the primary challenges in implementing digital libraries is the digital divide. Access to reliable internet and technology is not uniform, particularly in rural or underdeveloped areas. Students and institutions in these regions may lack the necessary infrastructure, such as high-speed internet, computers, or mobile devices, to fully benefit from digital libraries. This disparity in access limits the reach and effectiveness of digital libraries.

**Information Overload:** The vast amount of resources available in digital libraries can result in information overload. With an abundance of materials across various formats and subjects, users

---

may struggle to find relevant content or critically evaluate the quality of available resources. This can lead to confusion and inefficiency, especially for younger learners or those with limited experience in digital navigation.

**Digital Literacy :** While digital libraries can enhance digital literacy, lack of digital literacy is itself a barrier. Many students, particularly those in lower socio-economic backgrounds, may not possess the skills needed to effectively search for, evaluate, and use digital resources. Inadequate training in digital tools and platforms can hinder the productive use of digital libraries and prevent students from maximizing their learning potential.

**Cost and Sustainability :** Developing and maintaining digital libraries can be costly for educational institutions. While many digital resources are available for free, some premium databases or platforms require significant financial investment. Smaller institutions or those with limited budgets may find it difficult to sustain digital library services. Moreover, the preservation and updating of digital content require on-going efforts, which can add to the financial strain.

**Copyright and Legal Issues :** Copyright and intellectual property concerns pose significant challenges for digital libraries. Ensuring that all digital content is legally available and properly licensed can be a complex process. Institutions must navigate the legal landscape of digital rights management, which can limit the availability of certain resources or restrict their use.

**Technical Barriers :** Technical issues such as software incompatibility, slow download speeds, and security concerns can disrupt the accessibility and usability of digital libraries. Furthermore, frequent updates and maintenance of digital platforms are required to ensure seamless access to users, which can be challenging for institutions without dedicated IT resources.

### **Conclusion**

Digital libraries have emerged as transformative tools in modern education, offering unparalleled access to knowledge and resources. Their ability to provide flexible, on-demand access to vast collections of digital content has revolutionized the way students learn, researchers conduct studies, and educators teach. By fostering personalized, self-paced learning and promoting digital literacy, digital libraries have proven essential in preparing students for the digital age. They also enable collaborative learning and global access to resources, bridging geographical and institutional gaps. However, the widespread adoption of digital libraries faces several challenges. The digital divide, information overload, lack of digital literacy, and concerns over sustainability and copyright issues pose significant barriers to their effectiveness. These challenges must be addressed through improved infrastructure, digital literacy programs, and the creation of user-friendly, accessible platforms.

Despite these obstacles, the future of digital libraries in education is promising. With continued technological advancements and a greater focus on equitable access, digital libraries can further enhance the learning experience, making education more inclusive and accessible. As the educational landscape continues to evolve, digital libraries will remain central to ensuring that knowledge is readily available to all, regardless of location or background.

### **Reference**

1. The Role of Libraries in National Development.
2. Digital Library Federation. (2023).
3. Digital Libraries and Education: Promoting Access to Knowledge and Learning Resources in the Digital Age.
4. Building the Digital Library: Challenges and Opportunities for Education Systems. World Bank Group.
5. Digital Libraries and Their Impact on Education

## आर्थिक विकास : मुद्दे और चुनौतियों के संदर्भ में आंबेडकरवाद

**Dr. Shaileshkumar Chhatrasinh Chaudhari**  
**M.Phil, Ph.D. & GSET**

### सारांश :

‘अम्बेडकरवाद’ शब्द का सामान्य अर्थ है – डॉ.बाबासाहेब भीमराव रामजी अम्बेडकर जी की विचारधारा। यह एक विचारधारा होने के कारण इसका कोई कोशगत अर्थ नहीं हो सकता। फिर भी अम्बेडकर जी ने राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में जो तत्व या सिद्धांत बताए हैं, उन्हीं को ‘आंबेडकरवाद’ कहा जाता है। ‘वाद’ शब्द का अर्थ है – “कोई ऐसा तत्व या सिद्धांत जो तत्वज्ञों या विशेषज्ञों द्वारा नियत या निश्चित हुआ हो”<sup>१</sup> इसे अंग्रेजी में ISM (इज्म) भी कहा जाता है। ISM का अर्थ है – “ISM is a derived word used in philosophy, politics, religion or other areas pertaining to an ideology of some sort, some time’s with a derogatory sense.”<sup>२</sup> इससे स्पष्ट होता है कि ‘वाद’ शब्द तत्वज्ञान, राजनीति, धार्मिक तथा विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त किया जाता है। जिसमें किसी क्षेत्र के तत्वज्ञों तथा विशेषज्ञों द्वारा ऐसा कोई तत्व या सिद्धांत निश्चित किया जाता है, जो एक नई विचारधारा के रूप में प्रवाहित होता है।

भारत देश में दलितों को आर्थिक दुर्दशा के कारण गौण समझा गया। इस तरह आर्थिक स्थिति से सामाजिक हैसियत तय की गई। भारत देश की सामाजिक वर्ण-व्यवस्था में आर्थिक स्थिति का बहुत बड़ा स्थान मान सकते हैं। क्योंकि आज दलितों में कुछ लोग आर्थिक संपन्न हुए हैं फिर भी वे लोग अपने समाज को भूल कर उनकी गरीबी के कारण उनसे घृणा करते रहे हैं। जो दलित पढ़े-लिखे शिक्षित हो या आर्थिक संपन्न हो वह लोग अपने ही समाज के गरीब लोगों से खान-पान, रहन-सहन, शादी-ब्याह के संबंध से जोड़ना नहीं चाहते हैं। इतना ही नहीं वे अपने आप को उच्च-भू मानकर समाज से अलग ही रहना चाहते हैं। इन सबका मूल कारण समाज की जाति व्यवस्था है। कई सालों से इसे तोड़ने की कोशिश की गई है। किन्तु पूर्ण सफलता नहीं मिली। सामाजिक व्यवस्था को बदलने के लिए जाति-व्यवस्था का अंत करना अति आवश्यक बन जाता है। जिसे समता का भाव ही मिटा सकता है। समदर्शीभाव ही इस जातिवाद की जड़ता का अंत कर सकता है।

‘आंबेडकरवाद’ दलित साहित्य का प्राण है। डॉ.आंबेडकर जी के सिद्धांत, जीवन संघर्ष तथा जीवन दर्शन से बना है ‘आंबेडकरवाद’। जिस प्रकार ‘गाँधीवाद’ महात्मा गांधी जी के सत्य, अहिंसा, शांति, प्रेम और धर्म पर, ‘मार्क्सवाद’ कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों पर, ‘मनोविश्लेषणवाद’ फ्रायड के सिद्धांतों पर आधारित है, उसी प्रकार ‘आंबेडकरवाद’ उनके विचारों से परिलक्षित होता है। ‘आंबेडकरवाद’ को आज हम कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना तथा संपादन के माध्यम से देख-समझ रहे हैं। जिससे नई चेतना और प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं।

महात्मा ‘बुद्ध जी’ ने जाति प्रथा को एक चुनौती दी, जिससे इस देश में एक महान आंदोलन शुरू हुआ, जो प्रायः ‘डॉ.अंबेडकर’ तक चलता आया है और आज भी चल रहा है। इस तरह जाति प्रथा के विरुद्ध पहला विद्रोह महात्मा बुद्ध ने ई.पू. की छठी शताब्दी में किया था। जिसमें देखा गया था कि किस तरह अपने दया, करुणा, समता की धारा को प्रवाहित कर सबको एक-जुट करते हुए जीवन जीना सिखाया था। जिसमें यज्ञ-हिंसा के विरुद्ध अहिंसावाद और धार्मिक, सामाजिक दृष्टि से मानवीय समानता के सिद्धांत, भारतीय धर्म एवं दर्शन में पहली बार लागू किया गया था। महात्मा बुद्ध ने न केवल पुरोहितवाद एवं यज्ञ-हिंसा का विरोध किया था, बल्कि जाति प्रथा को भी नकार दिया था।

गरीबों को आरक्षण देकर सही मायने में सामाजिक न्याय तथा समता को प्रस्थापित करने का कार्य ‘शाहू महाराज’ ने सबसे पहले किया था। इसी समता मूलक दृष्टि को आगे बढ़कर डॉ.अंबेडकर ने भारतीय संविधान में आरक्षण देकर अधिक व्यापक बनाया था। महात्मा ‘फुले जी’ के पश्चात भारतीय समाज व्यवस्था में व्याप्त वर्ण व्यवस्था की सामाजिक, आर्थिक एवं राजकीय विषमता को राजनीतिक स्तर पर दूर करने का प्रयास कोल्हापूर संस्थान के ‘छत्रपती शाहू महाराज जी’ ने किया था।

भारतीय समाज की दयनीय स्थिति, रूढ़िग्रस्तता और समाज के बहुत बड़े वर्ग को पशुतुल्य जीवन जीने की प्रतिक्रिया ने डॉ. अंबेडकर को एक क्रांतिकारी चिंतक बना दिया था। अंबेडकर जी ने आजीवन समाज, संस्कृति और राजनीति की लड़ाई लड़ी,



किन्तु उनकी यह लड़ाई अधिक तार्किक और वैज्ञानिक थी। समाज में सामाजिक भेदभाव और छुआ-छूत के दंश, महात्मा फुले तथा दक्षिण में पेरियार ने स्वयं झेले थे। किन्तु अछूत या अस्पृश्य होने के कारण इसकी पीड़ा तथा वेदना को अंबेडकर जी को सबसे ज्यादा झेलना पड़ा था। डॉ. अंबेडकर ने अपनी संवेदना को जिस प्रकार इस पंक्ति में व्यक्त किया है - **“गरीब होना बुरा है पर उतना बुरा नहीं जितना की अछूत होना, गरीब स्वाभिमानी हो सकता है, किन्तु अछूत नहीं हो सकता।”**<sup>३</sup> उससे लगता है की वर्ण-व्यवस्था के शिकार सभी दलित जाति के ही लोग रहे होंगे। अपने ऐसे ही कई विचारों से इस दलित समाज के लोगों को, गरीब रहना लेकिन स्वाभिमान कभी ना खोना की नई दिशा प्रदान की थी।

भारतीय समाज में देखा गया है कि शक्तियों से शूद्रों, अतिशूद्रों, स्त्रियों और आदिवासियों को सर्वर्ण के लोग किसी तरह गुलाम बनाए रखना चाहते हैं। इसी मानसिकता को तोड़ने का काम सदियों से हो रहा है। जिनमें नाथ पंथ, बौद्ध पंथ, कबीर, महात्मा फुले, शाहू महाराज एवं आंबेडकर आदि ने किया था। वर्णव्यवस्था, जातिभेद, सांप्रदायिकता, ब्रह्मवाद, सामंतवाद, पूँजीवाद तथा चातुरवर्ण्य व्यवस्था को बनाए रखने वाली धार्मिक व्यवस्था के खिलाफ उन्होंने आवाज उठाई। ईश्वरीय सत्ता को नकार कर आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक जैसी भ्रामक कल्पनाओं को दूर करके वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने का महत्वपूर्ण संदेश दिया था।

भारत देश में जब-तक मानुष्यवाद अर्थात् वर्ण-जाति-व्यवस्था रहेगी तब-तक अस्पृश्यता बनी रहेगी। यानि की मनुवाद के रहते मनुष्यता नहीं पनप सकती। कवि लक्ष्मीनारायण ‘सुधाकर’ ने इस तथ्य को कविता में अभिव्यक्त किया है। —

**“पूँजीवाद मिटा दो, समता तभी विश्व में होगी,  
मनुवाद मिटा दो दुनिया से तो मानवता पनपेगी।”<sup>४</sup>**

‘मानवता’ का होना यानि कि समानता एवं लोकतंत्र की स्थापना होना। जिसके कारण आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन आता है। दलित साहित्य का केन्द्रीय विषय मानवीय संवेदना के साथ-साथ मानव कल्याण, मानव उत्थान एवं मानव-विकास है।

इस देश में सदियों से देखा गया है कि आर्थिक सत्ता के कारण समाज में जाति व्यवस्था को बढ़ावा मिला है। आर्थिक व्यवस्था के कारण ही जाति व्यवस्था तय की गई। यह भी सच है की आर्थिक सत्ता पर ही किसी भी देश का भाविष्य निर्भर या निर्भय हो सकता है। जिस देश की आर्थिक सत्ता सुधर चुकी है वह देश महासत्ता की ओर बढ़ सकता है। भारत देश में वर्ण-व्यवस्था होने के कारण अर्थनीति भी व्यवस्था में बाँटी हुई थी। यही कारण रहा था कि दलितों को अर्थ से दूर रखा गया था। इस व्यवस्था में दलितों को धन संचय करना पाप माना गया था। इस संदर्भ में डॉ. वणकर का कथन है —

**“शूद्र को धनसंचय नहीं करना चाहिए, क्योंकि धन को प्राप्त कर वह ब्राह्मणों को पीड़ित करने लगता है। राजा की आज्ञा है कि उसे शूद्र से धन छिन लेना चाहिए।”<sup>५</sup>**

उपयुक्त कथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि मनुस्मृति के अनुसार शूद्रों को धन संचय नहीं करना चाहिए। ग्रंथों में भी अर्थ सत्ता की ओर ध्यान खिंचा है, जिसके कारण दलितों को अर्थ से दूर रखा जा सके। दलित समाज में अंधश्रद्धा, अशिक्षा, अज्ञान, गरीबी, बेकारी, पीड़ा आदि बाते अर्थनीति से दूर रहने के कारण ही रही हैं। यह दलित समाज आर्थिक क्षेत्र में पिछड़ा होने के कारण अपने आप ही सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी क्षेत्र में भी पिछड़ा हुआ ही है। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण लोग दस-पचास रुपयों के लिए नरक तुल्य कार्य करने के लिए मजबूर होते हैं।

उपर्युक्त सभी कारणों के कारण ही देश का विकास नहीं हो सकता। क्योंकि देश को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारत देश को आज़ादी मिलने के 77 साल पश्चात भी भारतीय अर्थ व्यवस्था पर असर पड़ा है। आर्थिक सुधारों के पश्चात भी भारत के समक्ष अभी भी कई सामाजिक चुनौतियाँ हैं। जैसी गरीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार, नक्सलवाद व आतंकवाद, जनसंख्या की वृद्धि से उत्पन्न कुपोषण और अपर्याप्त सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा आदि। जिसे क्रमशः संक्षिप्त में देखने जाए तो -

**(१) गरीबी (Poverty) :-** देश में अनुमानतः विश्व के एक तिहाई गरीब निवास करते हैं। जिस कारण से अमीरी और गरीबी के बीच भारी असमानता है, जो भारत में प्रमुख आर्थिक मुद्दों में से एक है। गरीब और अधिक गरीब और आमिर और अधिक आमिर होते जा रहे हैं। उसका प्रमुख कारण आज भी शिक्षा व्यवस्था का अभाव, जाति भेद-भाव, धर्म में समता का अभाव, अशिक्षितों व अज्ञानियों का अंधविश्वास, तथा देश का उदारीपन है। गरीबी हटानी है तो इन तमाम मुद्दों पर विशेष ध्यान देना होगा। गरीबों को काम के बराबर दाम देना पड़ेगा। उनकी दयनीय स्थिति में शैक्षिक विषयक सुधार करने होंगे। मेरे विचार से गरीबी के सबसे प्रमुख कारण है-



व्यावसायिक शिक्षा का अभाव, मुफ्त में खाने की आदत, सरकार द्वारा मुफ्त में खाद्य पदार्थों को बांटना, भीख देने की प्रवृत्ति, गरीबों और असहाय लोगों के लिए बनाई गई योजनाओं का सही ढंग से लागू न होना, भ्रष्टाचार, गरीबी के पैमाने का कोई मापदंड नहीं होना, और अंतिम जनसंख्या वृद्धि है।

**(२) बेकारी (Unemployment) :-** बेकारी काम न मिलने की वजह से बढ़ती है, परंतु काम के योग्य शिक्षा भी तो चाहिए ! और जब शिक्षा ग्रहण कर ले तो काम के लिए घूस-रिश्त देनी पड़ती है। तब जाके कहीं किसी को काम मिलता है। विकास के नाम पर नौकरी देने वाले राजनेता खुद अशिक्षित हैं। और सबसे दयनीय व लज्जा की बात तो यह है कि सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा, समजदार व होशियार शिक्षित व्यक्ति कम पढ़े और कम समजदार नेता के नीचे दब कर काम करता पाया जाता है। आधुनिक संसाधनों ने युवाओं का काम छिन लिया है। तो कहीं साधनों के चलाने का ज्ञान न होने की वजह से बेकार हो गए हैं। आधुनिकता के साथ-साथ बेकार व्यक्ति के बारे में भी सोचना आज का नया मुद्दा और चुनौती का विषय बन चुका है। भारत जैसे देश में, आबादी के एक बड़े हिस्से के बेरोजगार होने के कई कारण हैं। जैसे जनसंख्या वृद्धि, धीमी आर्थिक वृद्धि, मौसमी व्यवसाय, आर्थिक क्षेत्र की धीमी वृद्धि और कुटीर उद्योग में गिरावट। भारत मेहनत बेरोजगारी एक गंभीर मुद्दा है, जिससे लाखों लोग प्रभावित हैं। ऐसा तब होता है जब कोई व्यक्ति काम करने के लिए तैयार होता है लेकिन उसे नौकरी नहीं मिल पाती है, जिससे गरीबी और सामाजिक अशान्ति जैसी समस्याएं पैदा हो जाती हैं। भारत में बेरोजगारी का एक बड़ा कारण नौकरी के अवसरों की कमी है। फिर भी आज में बेरोजगारी दर 2024 के अक्टूबर में 8.70% प्रतिशत से घटकर नवंबर में 8% प्रतिशत हो गई। भारत में बेरोजगारी दर 2018 से 2024 तक औसतन 8.17 प्रतिशत रही, जो अप्रैल 2020 में 23.50% प्रतिशत के उच्चतम स्तर पर और सितंबर 2022 में 6.40% प्रतिशत के रिकॉर्ड निम्नतम स्तर पर पहुँच गई है।

**(३) भ्रष्टाचार (Corruption) :-** भारत में भ्रष्टाचार के कारणों में अत्यधिक नियम, जटिल कर और लाइसेंस प्रणाली, अपारदर्शी नौकरशाही और विवेकाधीन शक्तियों वाले कई सरकारी विभाग, कुछ वस्तुओं और सेवाओं के वितरण पर सरकार द्वारा नियंत्रित संस्थानों का एकाधिकार और पारदर्शी कानूनों और प्रक्रियाओं की कमी शामिल हैं। किसी भी देश के लिए भ्रष्टाचार एक प्रमुख मुद्दा है। जिसके कारण देश की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता रहा है। सार्वजनिक कार्यालयों या किसी भी तरह के कार्यों में रिश्त देना या लेना आज आम बात हो चुकी है। बिना किसी को घूस दिए आज कार्य संभव नहीं हो पा रहा है। आज की शिक्षा व्यवस्था, राज व्यवस्था ही बचपन से मूल्यलक्षी शिक्षा देने की बजाय रिश्त और चोरी-चुपके से कैसे काम निकाला जाए उस विषय पर केंद्रित है। भ्रष्टाचार देश को अंदर से खोखला कर देता है। सफलता पूर्वक अपना काम निकालने के लिए आर्थिक संपन्न लोग भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं। वर्तमान समाचार पत्रों के माध्यम से भारत जैसा सर्वगुण संपन्न देश भी उन भ्रष्ट देशों की कतार में खड़ा है। भारत में भ्रष्टाचार एक ऐसा मुद्दा है जो केन्द्रीय, राज्य और स्थानीय सरकारी संस्थानों की अर्थव्यवस्था को कई तरह से प्रभावित करता है। भारत की अर्थव्यवस्था को ठप करने के लिए भ्रष्टाचार को जिम्मेदार ठहराया जाता है।

**(४) आतंकवाद या नक्सलवाद (हिंसा) (Terrorism or Naxalism (Violence) :-** वैश्विक आतंकवाद सूचकांक के मुताबिक, सबसे अधिक आतंकवाद प्रभावित देशों की श्रेणी में भारत 7वें स्थान पर है। आतंकवाद का मुख्य उद्देश्य सामाजिक व राजनैतिक सिस्टम को आहत पहुंचाना है। आतंकवादी घटनाएं न केवल मानव जीवन को क्षति पहुँचती हैं अपितु राष्ट्रों की आर्थिक उन्नति को भी बड़े पैमाने पर प्रभावित करती हैं। आतंकवाद देश के लिए एक अखंड खतरा बना हुआ है। कई देश आतंकवाद का शिकार बनते जा रहे हैं। जिसका सबसे बड़ा कारण है भ्रष्टाचार और बेकारी। देश में मानवता का अंत होता जा रहा है। चोरी, डकैती, लूट-मार, हत्या जैसे किस्से हर रोज वर्तमान समाचार पत्रों में आते रहते हैं। आज के सोशल मीडिया का बड़ा आतंक है, जो किसी को भी भ्रमित कर हिंसा जैसी वृत्ति की तरफ ले जाता है। लोगों की जरूरतें बढ़ रही हैं, और उन्हें पूरा करने के लिए वह क्या सही, क्या गलत नहीं जानते। उन्हें तो बस अपनी जरूरतों को किसी भी हाल में पूरा करना है। अंबेडकरवाद में मानवता को ही श्रेष्ठ माना गया है। आतंकवाद से छुटकारा पाना है तो दलित साहित्य के सिद्धांतों की आवश्यकता अति महत्वपूर्ण बन जाती है। समतवाद के लिए भेद-भाव को भूलना पड़ेगा। जहाँ हिंसा है वहाँ आतंक है, सर्वनाश है, ऐसी शिक्षा देनी पड़ेगी। नक्सलियों को उनके साथ रहकर उन्हें अपनाकर उनसे उदारपन, अपनापन देना पड़ेगा। उन्हें विश्वास दिलाना पड़ेगा कि हम और आप सब एक साथ हैं, एक जुट हैं।

**(५) जनसंख्या वृद्धि (Population growth) :-** जन संख्या वृद्धि यह किसी भी देश में वर्तमान मुद्दा रहा है। जन्म दर, मृत्यु दर की तुलना में बहुत अधिक है। इसलिए कई बार सरकार को कपड़े, भोजन, चिकित्सा, आश्रय और स्कूली शिक्षा आदि की बुनियादी

आवश्यकताओं का ध्यान रखना जरूरी बन जाता है। यह सब परिस्थितियाँ देश के आर्थिक बोझ को बढ़ाती हैं। बढ़ती आबादी आर्थिक विकास पर गहरी चोट करती है। बढ़ती आबादी से पर्यावरण पर भारी प्रभाव पड़ता है। जरूरतों के हिसाब से साफ हवा, पानी, अन्न की कमी नजर आती है। इस की वजह से गरीबी, बेकारी, चोरी, डकैती, लूट-मार जैसी परिस्थितियों का निर्माण होता है। यह भी एक बहुत बड़ी चुनौती है, मुद्दा है जो आर्थिक विकास पर असर करता है।

#### निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि डॉ. अंबेडकर द्वारा दिए गए प्रसिद्ध कथन — ‘हम, सबसे पहले और अंत में भी भारतीय हैं’, ‘शिक्षित बनो’, ‘संघर्ष करो’ तथा ‘संगठित रहो’, और ‘जीवन, लंबा नहीं बल्कि बड़ा और महान होना चाहिए’ के तीन मूलमंत्र को स्वीकार करना होगा तभी देश का आर्थिक विकास संभव है। इतना ही नहीं आर्थिक विकास में चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षित बनकर आवश्यक सवालों के जवाब भी प्राप्त होंगे। अतः देश का आर्थिक विकास ही देश को महासत्ता की ओर ले जा सकता है। जिसके लिए तन-मन से संघर्ष करना होगा। एक जुट होकर एक देश, एक आवाज करनी होगी। और इसलिए देश के आर्थिक विकास के लिए अंबेडकरवाद अति आवश्यक बन जाता है।

#### संदर्भ ग्रंथ

- (१) ‘हिन्दी-मराठी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश’, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989, पृ. 27
- (२) Oxford English Dictionary, online, Oxford University Press, 2014,
- (३) ‘हिन्दी काव्य में दलित काव्यधारा’, संपादक माता प्रसाद, पृ. 240
- (४) ‘उत्पीड़न की यात्रा’, कविता संग्रह, लक्ष्मीनारायण ‘सुधाकर’, कंचन प्रकाशन, पृ. 61
- (५) ‘दलित विमर्श’, नरसिंहदास वणकर, कानपुर चिंतन प्रकाशन, 2007, पृ. 21

## Understanding the Two Hawks: A Comparative Analysis of Hughes' *Hawk Roosting* and Daruwala's *Hawk*

Saurabh Chauhan H.  
Research Scholar  
Department of English and CLS,  
Saurashtra University, Rajkot

### Abstract:

Animals and birds have always been integral metaphors in literature. Hawk is one such creature of the sky that finds a representation in many ways, *Hawk Roosting* and *Hawk* are two such poems. *Hawk Roosting* by Ted Hughes, first published in *Lupercal* in 1960, and *Hawk* by Keki Daruwala, first published in *The Keeper of the Dead* in 1982.

This paper presents a comparative analysis of *Hawk Roosting* by Ted Hughes and *Hawk* by Keki N. Daruwala, focusing on power, dominance, and existence and their reflection through the Hawk. While both poems utilize the hawk as a central symbol of control and strength, Hughes portrays it as an unyielding, narcissistic force, reflecting a bleak, tyrannical view of nature. In contrast, Daruwala's hawk, though powerful, is infused with self-awareness and introspection, acknowledging the transitory nature of power and its inherent vulnerability. Through an examination of language, imagery, tone, and structure, this paper studies, how the two poems paint the hawk, offering contrasting perspectives on power, survival, and mortality with a close reading. The study reveals how the hawk serves not only as a symbol of strength but also as a vehicle for deeper reflections on the human condition.

**Keywords:** animal, existence, hawk, nature, power.

The comparison between Ted Hughes' *Hawk Roosting* and Keki N. Daruwala's *Hawk* presents a study of the use of animal imagery in poetry, particularly in the depiction of the hawk as a symbol of power, dominance, and a creature whose perception of itself contrasts sharply with human vulnerability. Both poems use the hawk as a central metaphor, but their treatment of this metaphor reflect a much deeper understanding of nature and its relationship with power itself. While Hughes' *Hawk Roosting* is a bold expression of the hawk's self-assertion and unchallenged sovereignty, Daruwala's *Hawk* explores power, nature, and existential contemplation in progression. This paper aims to explore and compare the poetic techniques, language, imagery, tone, and structure, pointing out the reality that the metaphor of Hawk reflects in both the poems and perspectives of nature in both works to offer an understanding of how these poems paint the figure of the hawk.

**Ted Hughes** (1930-1998), an English poet and playwright, is renowned for his mastery of animal imagery, often exploring human nature through the metaphors of animals. His poetry is known for its stark imagery and psychological depth, using animals as symbols to explore the human condition. *Hawk Roosting*, written in 1960 and part of his collection *Lupercal*, is a dramatic monologue spoken from the perspective of a hawk perched high above the world. This poem is characterized by its cold, almost nihilistic, portrayal of the hawk's view of nature and power.

**Keki N. Daruwala** (b. 1937), an Indian poet, has written extensively about the complexities of power and identity, often incorporating Indian themes, mythology, and nature. Daruwala's *Hawk* (1987), found in his collection *The Keeper of the Dead*, explores the hawk's perspective on dominion and existential angst within the context of Indian sensibilities. Daruwala's work, while

also presenting the hawk as a figure of supremacy, infuses it with more introspective reflection, subtly questioning its role in the natural order.

Understanding the title of the poems becomes the first step towards their understanding: *Hawk Roosting* by Ted Hughes and *Hawk* by Keki Daruwala—it is clear that both poets employ the hawk as a symbolic figure of power, though how they do so diverge. Hughes' *Hawk Roosting* features a first-person narrative that is spoken from the perspective of the hawk itself, a perspective that conveys an overwhelming sense of self-assured authority and a chilling detachment from the natural world. The title *Hawk Roosting* conveys the bird's perched position, symbolizing both physical dominance and an unyielding authority over nature. As noted by critics such as Neil Roberts, Hughes' hawk represents an almost tyrannical force of nature, a figure whose power is absolute and unquestioned.

In contrast, Daruwala's *Hawk* offers a more subtle, reflective portrayal of the bird, suggesting not only physical power but also a deeper, philosophical meditation on authority. While Daruwala's hawk is similarly commanding, the poem engages with broader social and psychological implications of domination, making the hawk a figure that reflects not only natural force but also human psychological complexities. The simplicity of the title *Hawk* contrasts with the more dynamic *Hawk Roosting*, yet both titles highlight the centrality of the hawk as a symbol of power, albeit with differing emphases on the nature of that power.

The comparative analysis of these two works opens up an interpretation of how each poet paints, the hawk as a symbol of strength, authority, and violence. While Hughes portrays the hawk as an embodiment of cold, almost tyrannical control over the natural world, Daruwala's hawk, though equally powerful, is presented in a more complex, reflective light, displaying not only physical strength but also a meditation on the psychological and existential dimensions of power. As such, the title *Understanding the Two Hawks* promises an investigation into the ways both poets use the hawk to explore power, violence, and human nature, revealing the complex interplay of authority in their respective works.

In sum, the title encapsulates the essence of the research, signalling a comparative analysis of how Hughes and Daruwala employ the hawk as a symbol to explore themes of control, power, and the human condition. Through this investigation, the paper aims to illuminate the varied ways in which each poet crafts their representation of the hawk, revealing the nuanced differences in their philosophical and cultural approaches to the symbol of power.

In *Hawk Roosting*, the hawk is portrayed as an embodiment of absolute power. The hawk speaks with a chilling sense of omnipotence, viewing itself as a ruler of the world, a predator with no rival. The hawk's declaration, "I hold creation in my foot," suggests a godlike perception of control over both life and death. Hughes uses the hawk as a metaphor for unchallenged authority, echoing the brute force and dominion inherent in nature. The hawk does not view itself in moral or existential terms but simply as the pinnacle of the natural order. It asserts: "Nothing has changed since I began," emphasizing its timeless and unassailable position.

In contrast, Daruwala's *Hawk* similarly represents a creature of power, but it does not carry the same unreflected arrogance as Hughes' hawk. Daruwala's hawk is aware of its strength, yet there is an underlying sense of hesitation and doubt in its perspective. The hawk is aware of the fleeting nature of its dominance, suggesting that power, although temporarily absolute, is always subject to time and fate. This complexity reflects Daruwala's exploration of power as both a source of pride and an existential burden.

Both poems use the hawk to highlight themes of survival and the laws of nature. In *Hawk Roosting*, nature is not romanticized but presented as a harsh, unforgiving environment where survival is rooted in absolute control and predation. The hawk declares, "The earth's face is my way,"

---

emphasizing its unyielding dominance over the natural world. The hawk's perception of nature is utilitarian and mechanical, reflecting Hughes' often bleak view of existence, where power is earned through violence and predation.

Daruwala's *Hawk*, however, presents a more reflective approach to nature. While the hawk is still a symbol of power, there is a sense of introspection regarding its role in the ecosystem. The hawk's awareness of its vulnerability, the fragility of its existence, and the cyclical nature of life suggest a more philosophical view of nature. There is a recognition of the hawk's place within a larger, interconnected system of life and death, hinting at the transient nature of power. The hawk, while dominant, knows that it, too, will eventually fall, a theme that resonates with existential reflections on mortality.

The hawk's sense of self in *Hawk Roosting* is one of pure narcissism, viewing itself as the ultimate and sole arbiter and inheritor of existence. The hawk does not question its role or power but accepts its identity with total certainty. This self-assuredness is underscored by Hughes' commanding tone, which contributes to the hawk's portrayal as a cold, calculating creature. The hawk's identity is constructed in opposition to the world below it, which is depicted as weak, passive, and inferior: "I kill where I please because it is all mine."

On the other hand, Daruwala's hawk is more reflective about its identity. While it too embodies power, the hawk's awareness of its mortality and its position in the food chain suggests a more complex self-awareness. The hawk in Daruwala's poem acknowledges the fragility of its existence, indicating that the sense of dominance is temporary. This existential awareness complicates the hawk's identity, making it more human and relatable in its vulnerability. The hawk is not simply a conqueror; it is a creature aware of its place in the grand cycle of life. Both poems employ vivid imagery and a dramatic monologue format, yet their techniques reflect their individual styles and metaphorical outlooks.

Ted Hughes' *Hawk Roosting* is known for its stark, visceral language and intense imagery. The hawk's voice is commanding, even tyrannical, and Hughes uses metaphors that amplify the hawk's perception of its absolute dominion. Words like "I kill," "I hold," and "Nothing has changed" convey a sense of control, power, and aggression. The hawk is an all-consuming presence, dominating the landscape and imposing its will on everything below. The imagery is violent and unrelenting, much like the hawk's own worldview.

Daruwala's *Hawk*, while also rich in imagery, employs a slightly more restrained tone. The hawk is portrayed with less bombast and more introspection. There is an emphasis on the hawk's relationship with the natural world and its self-awareness of mortality. The metaphors and symbols used in Daruwala's poem are often more complex, hinting at existential concerns and the fragile nature of life. While the hawk's imagery in Hughes' poem is sharp and unyielding, Daruwala's is more layered and reflective, suggesting a deeper engagement with the philosophical implications of power.

Hughes' tone in *Hawk Roosting* is one of unchallenged authority and cold detachment. The hawk's voice is omnipotent, with no sign of doubt or introspection. The tone mirrors the hawk's narcissistic and violent worldview, where survival is synonymous with domination. The formal, declarative statements of the hawk, such as "The world is mine," create a sense of finality and arrogance.

Daruwala's *Hawk* is subtler in tone. The hawk is not as self-assured as Hughes' creation, and there is a sense of internal conflict or reflection. The poem uses more restrained language, and the tone is more natural, reflecting an awareness of mortality and the limits of power. The hawk speaks not only of its strength but also of its fragility, creating a dialogue between pride and self-doubt.

Both poems use free verse, allowing to explore the hawk's thoughts without being constrained by formal structures. In *Hawk Roosting*, the poem's structure is uniform and relentless, mirroring the

---

hawk's unyielding and mechanical worldview. The consistent stanzaic form reflects the hawk's rigid, almost tyrannical perception of the world.

In contrast, Daruwala's *Hawk* employs a more varied structure, reflecting the hawk's fluctuating self-perception. The irregularity in the stanza lengths and line breaks mirrors the uncertainties that pervade the hawk's worldview, suggesting that power and dominance are not absolute but temporary.

In conclusion, the comparative analysis of *Hawk Roosting* by Ted Hughes and *Hawk* by Keki Daruwala paint the versatility of the hawk as a symbol in literature, capturing not just the essence of power but also the inherent complexities of existence, dominance, and mortality. Hughes' hawk emerges as an embodiment of absolute, unchecked authority—an icon of brutal force that reflects the poet's vision as a harsh, indifferent, and often tyrannical domain. The hawk's unrelenting self-certainty and detached arrogance evoke associations with the *Machiavellian* ruler, whose sovereignty is unquestionable and whose control extends over all things. In this respect, Hughes' depiction of the hawk channels the darker undercurrents of existentialism, reminiscent of *Nietzsche's Übermensch*—a solitary figure unburdened by conventional morality, revelling in its power and control over the world. The hawk in *Hawk Roosting* thus exemplifies the fierce, unyielding will to power that dominates the natural world with no regard for the fragile lives it consumes.

In contrast, Daruwala's hawk serves as a more complex symbol, infused with introspection and an acute awareness of the transience of its strength. The hawk in *Hawk* is powerful, yet its dominance is framed by the inevitability of its own decline, acknowledging a fragile vulnerability beneath the surface. This self-awareness mirrors the concept of the *tragic hero* in classical literature—figures like Shakespeare's Hamlet, whose recognition of their own limitations or fate imbues them with a deeper understanding of the human condition. Daruwala's hawk speaks to a modern, post-colonial consciousness, where power, though real and momentarily supreme, is understood as subject to time's passage and the forces beyond one's control. This acknowledgment of mortality and the cyclical nature of existence imbues the hawk with a philosophical weight that contrasts sharply with the cold, mechanical assertion of power found in Hughes' poem.

By juxtaposing these two portrayals, the paper reveals how the hawk serves not merely as a symbol of raw power but also as a vessel for a more profound meditation on human vulnerability, impermanence, and self-awareness. Hughes' hawk, with its domineering presence, echoes the existential notion of the absurd, where the universe offers no inherent meaning or justice, and the struggle for power is an isolating, almost nihilistic pursuit. Daruwala, on the other hand, presents the hawk as a figure caught between strength and fragility, a creature that represents the precarious nature of power and survival, resonating with the *stoic* recognition of the inevitability of decline, as seen in the writings of Seneca or Marcus Aurelius.

Ultimately, the comparative study of these two poems reveals that the hawk, while a symbol of dominance in both works, also opens a window into contrasting philosophical reflections on the human condition. Through Hughes' bleak and tyrannical vision and Daruwala's introspective contemplation, it can be understood that the hawk is not simply a metaphor for power, but a multifaceted symbol of existence itself—capturing the tensions between strength and fragility, domination and introspection, survival and mortality. In this way, both poets invite the reader to reflect on the nature of control, the limitations of power, and the inescapable presence of death, offering rich avenues for further exploration in the realms of literature, philosophy, and existential thought.

**References:**

- Chauhan, Prashant. "Mimicking Humanity: The Use of Anthropomorphism in Ted Hughes' Nature Poetry". *QeiosJournal*. April 26, 2023. Reprint VI, DOI:10.32388/OVV5F3. Accessed on December 26, 2024.
- Das, Banani, "An Exposition of Keki Daruwalla's Poems with special reference to *Woolf* and *Hawk*". *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, Volume 6, Issue 2 April 2018, ISSN: 2320-2882 [www.ijcrt.org](http://www.ijcrt.org) Accessed on December 26, 2024.
- Gifford, T. "Ted Hughes's 'Greening' and the Environmental Humanities". Roberts, Niel., Wormald, M., Gifford, T. (eds) *Ted Hughes, Nature and Culture*. Palgrave Macmillan. 2018. [https://doi.org/10.1007/978-3-319-97574-0\\_1](https://doi.org/10.1007/978-3-319-97574-0_1) Accessed on December 26, 2024.
- Phukan, Drishti Dhekial. "Delineation of Myth: An Ecocritical Reading of Keki N Darualla's poems, *Hawk* and *Wolf*." *IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)* Volume 26, Issue 1, Series 6 (January. 2021) 01-03 e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845. [www.iosrjournals.org](http://www.iosrjournals.org) Accessed on December 26, 2024.
- Mahid, Perveen Sonia et al. "Exploring Dehumanization in Ted Hughes' Poem Hawk Roosting Through an Eco-Critical Lens." *International Journal of English and Applied Linguistics (IJEAL)* Volume 4, 2024. E-ISSN: 2787-9482 Pp. 97-105 Accessed on December 26, 2024.
- Mehrotra, Arvind Krishna. *The Oxford India Anthology of Twelve Modern Poets*. Oxford University Press. 2002. New Delhi. Pp 76-87



## हिन्दी साहित्य का इतिहास

चेतना आर. पाडवी

स्टुडन्ट, बी.एड.

चौधरी कोलेज ओफ एज्युकेशन

सेक्टर-७, गांधीनगर

### सारांश

इतिहास की जानकारी साहित्येतिहास की जानकारी को बढ़ाती है। इसलिए साहित्येतिहास को जानने से पूर्व इतिहास दर्शन को जानना अति आवश्यक है। हिन्दी साहित्य ने अपनी शुरुआत लोकभाषा कविता के माध्यम से की और गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ। हिन्दी का आरम्भिक साहित्य ८ वीं शताब्दी की अपभ्रंश भाषा में मिलता है। हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़े प्राचीन भारत की संस्कृत तक जाती हैं। परंतु मध्ययुगीन भारत के अवधी, मागधी, अधमागधी तथा मारवाडी जैसी भाषाओं कई साहित्य को हिन्दी का आरम्भिक साहित्य माना जाता है।

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति 'सिन्धु' से जुड़ी है। 'सिन्धु' 'सिंध' नदी को कहते हैं। सिन्धु नदी के आस-पास का क्षेत्र सिन्धु प्रदेश कहलाता है। संस्कृत शब्द 'सिन्धु' ईरानियों के सम्पर्क में आकर हिन्दु या हिंद हो गया। ईरानियों द्वारा उच्चारित किया गया इस हिंद शब्द में ईरानी भाषा का 'एक' प्रत्यय लगने से 'हिन्दीक' शब्द बना है। जिसका अर्थ है 'हिंद का'। यूनानी शब्द 'इंडिका' या अंग्रेजी शब्द 'इंडिया' इसी 'हिन्दीक' के ही विकसीत रूप हैं।

हिन्दी का साहित्य १००० ईसवी से प्राप्त होता है। इससे पूर्व प्राप्त साहित्य अपभ्रंश में है। इसे हिन्दी की पूर्व पीठिका माना जा सकता है। आधुनिक भाषाओं का जन्म अपभ्रंश के विभिन्न सफ़ा सु हुआ है।

### इतिहास अर्थ और परिभाषा :

इतिहास शब्द इति + ह + आस से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ – ऐसा ही हुआ है। शाब्दिक अर्थ को देखे तो पत चलता है कि इतिहास का संबंध अतीत से होत है और उसमें वास्तविक घटनाओं का सन्निवेश होता है। भारतीय पाश्चात्य विद्वानों ने इतिहास के व्यापक रूप की विवेचना की है। विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं –

- 1) हीगल : - hignal

“इतिहास केवल घटनाओं का अन्वेषक तथा संकलन मात्र नहीं है, अपितु उसके भीतर कार्य – कारण संबंध विद्यमान है।”

- 2) गणपतिचन्द्र गुप्त :-

- 3) “अतीत के किसी भी तथ्य, तत्व या प्रवृत्ति के वर्णन, विवरण, विवेचन, विश्लेषण को जो कि काल विशेष या कालक्रम की दृष्टि से किया गया इतिहास कहलाता है।”

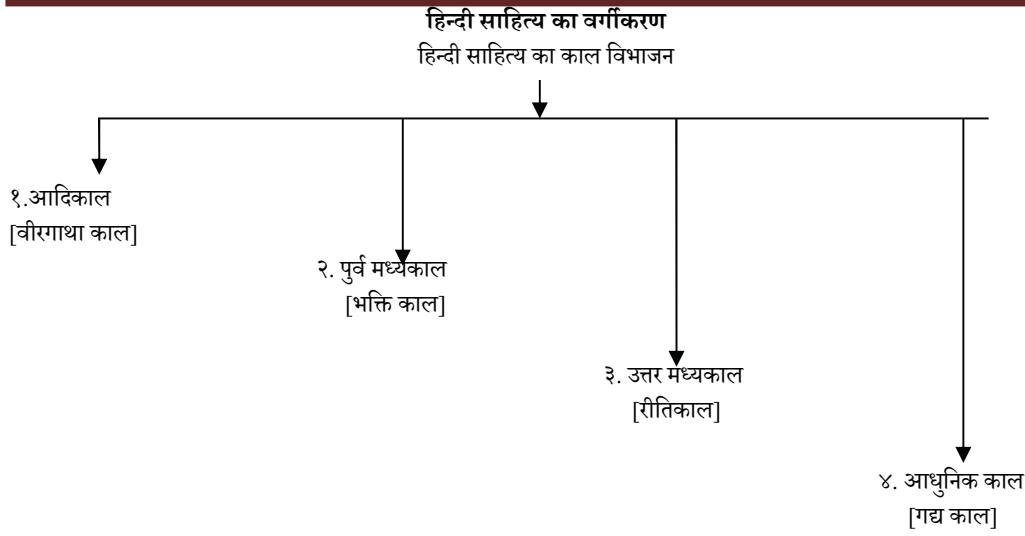
### हिन्दी साहित्य का प्रारंभ :

हिन्दी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है – गद्य, पद्य और चम्पू। जो गद्य और पद्य दोनों में हो उसे चम्पू कहते हैं, खड़ी बोली की पहली रचना कौन सी है इस विषय में विवाद है, लेकिन अधिकांश सहैत्यकार लाला श्री निवासदास द्वारा लिखे गये उपन्यास परीक्षा गुरु को हिन्दी की पहली प्रामाणिक गद्य रचना मानते हैं।

हिन्दी साहित्य का आरंभ आठवीं सताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे छोटे शासन केन्द्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत रहा करते थे।

हिन्दी साहित्य के अब तक लिखे इतिहासों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखे गए ‘हिन्दी साहित्य का इतिहास’ को सबसे प्रामाणिक तथा व्यवस्थित इतिहास माना जाता है। आचार्य शुक्ल जी ने इसे “हिन्दी शब्दसागर की भूमिका” के रूप में लिखा था जिसे बाद में स्वर्ण पुस्तक के रूप में १९२९ ई. में प्रकाशित आंतरिक कराया गया। आचार्य शुक्ल ने गहन शोध और चिन्तन के बाद हिन्दी साहित्य के पुरे इतिहास पर प्रकाश डाला है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की पुस्तक में लगभग १००० कवियों के जीवन चरित्र का विवेचन किया गया है। कवियों की संख्या की अपेक्षा उनके साहित्यिक मूल्यांकन को महत्व प्रदान किया गया है अर्थात् हिन्दी साहित्य के विकास में विशेष योगदान देने वाले कवियों को इसमें शामिल किया गया है।

**१.) आदिकाल (वीरगाथा काल) :**

1. सिद्ध साहित्य
2. नाथ साहित्य
3. जैन साहित्य
4. चारणी साहित्य
5. प्रकीर्णक साहित्य
6. अपभ्रंश काव्य
7. देश भाषा काव्य
8. आदिकाल की फुटकर रचनाएँ

**२.) पूर्व मध्यकाल (भक्ति काल) :**

1. रामभक्ति काव्यधारा (रामाश्रयी शाखा)
2. कृष्णभक्ति काव्यधारा (कृष्णश्रयी शाखा)
3. संत काव्यधारा (ज्ञानाश्रयी शाखा)
4. सूफी काव्यधारा (प्रेमाश्रयी शाखा)
5. भक्तिकाल की फुटकर रचनाएँ
6. भक्तिकाल के अन्य कवि
7. आख्यान काव्य

**३.) रीति काल (उत्तर मध्य काल) :**

1. रीतिबद्ध कवि
2. रीतिसिद्ध कवि
3. रीतिमुक्त कवि
4. रीतिकाल के अन्य कवि

**४.) आधुनिक काल (गद्यकाल)**

1. भारतेंदु युग
2. द्विवेदी युग
3. छायावादी युग

4. छायावादोत्तर युग (शुक्लोत्तर युग)

- 1) प्रगतिवाद
- 2) प्रयोगवाद
- 3) नयी कविता
- 4) नवगीत
- 5) उपन्यास
- 6) हिन्दी कहानी
- 7) हिन्दी नाटक
- 8) हिन्दी निबंध

1. आदिकाल :

आदिकाल हिन्दी साहित्य का शुरुआती चरण है। यह काल १०वीं शताब्दी से लेकर १४ वीं शताब्दी के बीच माना जाता है। आदिकाल को डो.हजारी प्रसाद ने यह नाम दिया था। आदिकाल को भाषा का सन्धिकाल कहा जाता है। इस काल में अपभ्रंश में रचनाएं हो रही थीं इस काल में मुक्तको के साथ प्रबंध काव्यो का निर्माण हुआ था। आदिकाल में दोहा, तोटक, तोमर, गाथा, रोमा-छप्पय जैसे छंदों का प्रयोग था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे 'वीरगाथा काल' और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे 'वीरकाल' नाम दिया था। आदिकाल में रासो ग्रंथों की प्रधानता रही।

2. भक्ति काल :

हिन्दी साहित्य में भक्ति काल का अपना एक अहम और महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिसकी समयावधि १३७५ से १७०० तक की मानी जाती है। जिसको जोर्ज ग्रियर्सन ने "स्वर्णकाल" श्यामसुन्दर दास ने "स्वर्णयुग" आचार्य शुक्ल ने भक्तिकाल कहा था।

भक्तिकाल में उपासना प्रवृत्ति के आधार पर सगुण एवं निगुण रूप में विभाजित किया गया है। जिन्हें क्रमशः सगुण (रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति) निर्गुण (ज्ञानमार्गी एवं प्रेममार्गी)

रामभक्ति शाखा : तुलसीदास, केशवदास, लालदास, अग्रदास, नाभा दास

कृष्णभक्ति शाखा : सुरदास, नंददास, मीराबाई, कृष्णद गोविंद स्वामी, छीतस्वामी

ज्ञानमार्गी : कबीरदास, नानक, सुंदरदास, रैदास

प्रेममार्गी : जायसी, कुतबुन, मंझन, ईश्वरदास

3. रीतिकाल :

रीतिकाल की अवधि १६४३ ईस्वी से १८४३ ईस्वी तक मानी जाती है। यह युग मुक्तक रचना का युग रहा। मुख्यतया कविता, सवैये, और दोहे इस युग में लिखे गए। इस काल के अधिकांश कवि दरबारी थे। रीतिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है। रीतिकाल के कवियों में केशवदास और चिंतामणी का नाम प्रमुख है। एहलिकिकता, शृंगारिकता, नायिकाभेद, और अलंकार प्रियता रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएं हैं। रीतिकाल के कवियों ने ज्यादातर ब्रज भाषा में रचनाएं कीं और रचनाओं पर दरबारी संस्कृति, मानवीय प्रवृत्तियां और ग्रंथों का प्रभाव था। रीतिकाल में रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त तीन तरह की काव्यधाराएं थीं।

4. आधुनिक काल :

आधुनिक काल हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण युग है। यह काल, हिन्दी साहित्य के विकास का काल है। इस काल में हिन्दी साहित्य को सभी विद्याओं का विकास हुआ है। आधुनिक काल का शुरुआती समय १८५० ईस्वी से माना जाता है। यह रीतिकाल के बाद का काल है। आधुनिक काल को हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ युग माना जा सकता है। जिसमें पद्य के साथ-साथ गद्य, कहानी, समालोचन, नाटक व पत्रकारिता का भी विकास हुआ। इस काल में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया और राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ। साथ ही रूढ़िवादी परंपरागत से मुक्ति और व्यक्ति की क्षमता, गरिमा और विचार अभिव्यक्ति की स्वलता आई। आधुनिक काल को भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, रामचंद्र शुक्ल व प्रेमचंद युग तथा अद्यतन युग जैसे नामों से भी जाना जाता है।

---

**FEMINIST PERSPECTIVE: AN ANALYSSIS OF MEENA KANDASAMY'S 'WHEN I HIT YOU',  
and SHASHI DESHPANDE'S 'THAT LONG SILENCE'.**

**LAKSHITA THAKUR**

**Assistant Professor**

**B.Ed., M.A.(English), M.A.(Education)**

**English at Shree Mahila College, Khamta.**

**ABSTRACT:**

We all discuss various forms of feminism in the modern world, including radical feminism, yet women are not accorded the same prestige or importance. Over the past fifty years, Indian women writers have expressed their disapproval of various crimes and gender inequities that have affected them. Gender refers to socially defined roles, behaviors, activities, and characteristics that are seen suitable for men and women in a certain community. Cultural, social, political, and economic factors that affect how men and women behave in social situations determine it. Gender prejudice is sustained by social, cultural, and psychological factors that are widely present in society. Dreams and hopes are not always realized, marriages are not always happy, and the idyllic environment is not always a perfect fit.

This study thoroughly examines how feminism theory is applied in Shashi Deshpande's book "That Long Silence." Its main goal is to thoroughly investigate and evaluate what feminism actually means in the real world. As a critical theory, feminism promotes equal rights for all genders in a range of societal contexts, such as the political arena, the business sector, the educational system, and the workplace. This essay seeks to clarify the implications of feminism within the framework of the book as well as its applicability in larger social situations. Techniques & Strategies: The main focus of my research paper is a feminist interpretation of "That Long Silence," written by Shashi Deshpande. Throughout the book, we see Jaya, the main character, struggle with issues in her marriage and her search for her own identity. This research paper's central issue examines Jaya's fights against societal divisions and how radical feminism manifests itself in her resistance to these limitations.

Meena Kandasamy's book "When I Hit You: or A Portrait of the Artist as a Young Wife" exposes this brutal truth. This essay also examines the concerns of contemporary Indian women, who are constantly reminded that they are nothing more than women and that they have no right to speak up against oppression, abuse, rape in marriage, and other violations of their fundamental rights.

**KEY WORDS:** FEMINISM, IDENTITY STRUGGLE, GENDER EQUALITY, PATRARCHY, CULTURAL, VIOLATION, MARRIAGE, OPPRESSION.

All of the key characters in the book—Kusum, Jaya Mukta, Vanitamami, Jeeja, Nayana, Manda, Nilima, etc.—are female. According to the study, every female character is portrayed as a victim. They are all, in one way or another, living lives of dehumanizing servitude. Men are suppressing, harassing, and dominating women. Women have always been subjugated and manipulated by men throughout their lives. In society, a woman is solely recognized in reference to the males in her life, such as her sister, mother, wife, or daughter. According to Dr. Sapna Tiwari, women in society are expected to give up their goals and aspirations. She is obligated to choose her husband's path. Jaya, the protagonist of the book, is in a similar situation. Her husband's career has forced her to relocate, taking her from a high-class environment to one with relatively lower standards. Because of some irregularities in the workplace finances, her spouse is the subject of an investigation. Against her will, she has done everything for her spouse. Another female character named Vanitamami

constantly reminds her not to speak up, even when her spouse is having extramarital affairs. Her ancestors have always taught her that man is like a shelter tree, providing her with shade and shielding her from the bad things in society. This strategy and way of thinking demonstrates how women have been subjugated by men for many years.

They are unable to imagine her without a guy. Even though her spouse is acting unfairly and in a wrong way, they still need to live their lives. Jaya's grandmother shares her belief that a woman shouldn't confront her husband about a mistake he has made. Even though Jaya has led a quiet life and never asked questions, she is nevertheless unhappy in her existence. According to Dr. Sapna Tiwari's research at IJELLH, women still do not have the freedom to express their true feelings in today's world. For a woman, there is no self-identity. Certain communities require women to change their first names as well. She forfeits the identity bestowed to her by changing her name. In the research published in the IJELLH paper, Dr. Sapna Tiwari affirms that "Jaya's character projects the plight of middle-class women and the base male psyche that has not undergone any fundamental change."

The statement made by Rashmi Gaur that "the novel records the fact that the changing social dynamics had brought about a change in the socio-economic-educational-rights of the women, but they still have to create a niche for them" is acceptable. Mohan is a traditionalist ingrained in rituals, while Jaya is essentially modern with a foundation in tradition. Their attitudes are so dissimilar from one another that they are unable to communicate with one another. While Jaya sees it as little more than hopelessness, Mohan believes that a woman's actual "strength" is demonstrated by her willingness to sit before the fire and wait for her husband to return home while eating hot meals. The primary reason they can comprehend one other is because of their disparate attitudes. This essay investigates the various facets of Not much has changed in a woman's life, even in the digital age. She continues to struggle and give up her dreams. Jaya is a trailblazing character in *That Long Silence*. Jaya raises her voice to end the lengthy quiet. She had been living a passive existence her entire life. She can no longer live such a repressive existence, though. Her goal is to become well-known in society. She believes she is an individual.

While we talk about feminism in Meena Kandasamy's novel so firstly, She is a prominent writer from Tamilnadu state, belonging to the Dalit community. In Chennai, she cultivated her craft as a novelist, poet, and translator. In a pan-Indian poetry competition, two of her poems—*Mascara* and *My Lover Speaks of Rape*—won first place. Meena Kandasamy, a dalit woman writer, has contributed numerous books and research articles to publications including *Biblio*, *Communalism*, *Combat*, and others. She dreams of a casteless India. When *I Hit You*, a book she published in 2017, contains some personal aspects. Following the translation of Periyar's opinions regarding untouchability, Meena Kandasamy took on the task of indicating Periyar's ideas regarding women's rights.

When *I Hit You* or *A Portrait of the Writer as a Young Wife* by Meena Kandasamy presents the truth about marital rape and love marriage while also portraying the true image of an Indian lady in the twenty-first century. She states in an interview that "the more strange the familiar appears, the more familiar the strange becomes." That's how the fiery feminist of old becomes a better wife. by seeing without taking action, by going through without comprehending, by capturing without passing judgment. India, a patriarchal nation ruled by men, deprives its citizens of their fundamental human rights. In addition to being denied many other rights, women were also denied the ability to make life decisions for themselves and the right to an education. Women were and still are seen as the "other" of men and should not be treated as equal human beings. Various obstacles to a woman's free growth have been put in place by patriarchal family structures, customs such as polygamy and

endogamy, child marriage, equal sharing of family property, the 'purdah' system, lifelong widowhood, etc.

Indian authors have frequently addressed gender issues in their creative works. Dalit women who are still not given a voice Meena Kandasamy is one of the current Indian writers who expresses her concerns in her works about "sexual politics" and "gender inequality." In India, women's standing has yet to break free from the brutal grip of the establishment and authority. Nature hasn't been as biased against women as individuals in this nation are.

In an exploitative society where the rule of the jungle still applies—the powerful prosper at the expense of the weaker—Indian women are the main victims. That legislation has prioritized men over women for all of recorded history. They were startled out of their apathetic stance by the deaths of dowers. "A good writer knows not to be a sensationalized story of a very real, everyday crime," as Meena Kandasamy put it. The key takeaway is not that women who are mistreated learn to leave their abusers quickly, nor is it that, despite what a naive blogger claims, "she (meena) does not just admit she made a mistake?" Maybe it conflicts with her feminist persona that a woman is never at fault for getting struck, restrained, or harassed.

Ultimately, women are just human, and a lot of men intentionally take advantage of that. With her advocacy for gender equality, community activism, and survivor status, Meena Kandasamy effectively refutes this cliched social hypocrisy. Because they are individual duals before they are women, the smartest, strongest women may be the target because they behave in perfectly reasonable, acceptable ways. A meditation on the craft of writing about pain, violence, and desire takes place in the novel. Writing, she knows, can save her life, but "how could I open up to stranger who buy the fiction performed for their benefit?" is the question she poses. In her response, she quotes Elfried Jelinek, Kamala Das, and Anne Sexton's chapter epigraphs. "Art is what causes suffering in the first place," she thought, referring to feminist writers who transcended caste, ethnicity, culture, and even linguistic barriers.

#### CONCLUSION :

Through the novel, the paper investigates a woman's role in contemporary society. The male mentality is also studied in this research. Man still views women as pieces of furniture that are kept in the home. They still want them to proceed as directed and not question anything. Male psychology requires a significant metamorphosis. They have to honor the choices and aspirations of the women. According to Dr. Sapna Tiwari, women bear some of the blame for their suffering. To defend their rights and standing in society, they must speak up and take action. According to Dr. Sapna Tiwari, the author illustrates how a woman can rebel and fight for what she believes is right when she creates the character Jaya. She is perfectly entitled to protest. Only women can alter the lives of other women. To mark her identity, she must make her own judgments and conduct her own actions. The traditional woman's position needs to shift. The idea known as feminism contends that women should have equal rights and a voice in social and political spheres. Only when women have equal rights and opportunities for advancement can a nation achieve overall progress.

India is a country where women have struggled and lived in a caste-ridden society from ancient times to the present. Meena Kandasamy is putting the woman's subaltern identity in perspective in addition to fighting against her oppression. Her writing exposes and expresses the healthy feelings, suffering, deprivation, imprisonment, shame, rage, and their harrowing struggle to survive among taboos. Meena Kandasamy challenges society's masculine dominance in her book.

This book gives the impression that we are on our own for our future selves. It's a warning that it's simple for a feminist who was formerly in an abusive marriage to do so. Just as our narrator states, "He can be kind, I know he can, I've seen how tender he is with the homeless boys in town, but with me I know he will always choose to be cruel," it is also feasible for her to try and rationalize her

abusive partner's violent behavior. Her spouse repeatedly informs her that it is her feminism, not his violent behavior, that is the issue.

**REFERENCES:**

- Kandasamy, M. (2017). *When I Hit you: SHORTLISTED FOR THE WOMEN'S PRIZE FOR FICTION 2018*. Atlantic Books.
- Deshpande, S. (1989). *That long silence*. Penguin Books India.
- Rai, U. K. (2023, June 22). *A Feminist analysis of Shashi Deshpande's That Long Silence Novel: Volume 3 Issue 2 Monsoon Edition 2023*.  
<https://literaryherm.org/index.php/ojs/article/view/76>
- Ahashan, M., & Tiwari, S. (2018). Feminist perspective in Shashi Deshpande's "That Long Silence." *SMART MOVES JOURNAL IJELLH*, 6(1), 8.  
<https://doi.org/10.24113/ijellh.v6i1.3579>
- Naik, C. P. (2022). Study of Feminism in Meena Kandasamy's When I Hit You [Journal-article]. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 10(4), 741–744.  
<https://ijcrt.org/papers/IJCRT2204433.pdf>



## ગાંધીમાર્ગના ગરવા યાત્રી : નારાયણ દેસાઈ

માયાબેન સવજીભાઈ ડાંગર  
પીએચ. ડી. વિદ્યાર્થી, ગુજરાતી વિભાગ  
ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ: અમદાવાદ

ગાંધીજીના અસ્તિત્વને ઝીલનારું અનોખું વ્યક્તિત્વ એટલે નારાયણ દેસાઈ. તેમનું બાળપણ ગાંધીજીના ખોળામાં ઉછર્યું હતું. મહાદેવભાઈ તો ગાંધીજીની સાથે રહ્યા છે. પરંતુ નારાયણ દેસાઈ તો ગાંધીજીની સાથે રમ્યા છે. તેથી નારાયણ દેસાઈનો બાપુ સાથેનો પહેલો અનુભવ એક દોસ્ત તરીકેનો હતો. નારાયણ દેસાઈને બાળવયથી માંડીને વચસ્ક સુધીના કુલ મળીને વીસેક વર્ષનો સહવાસ તેઓને ગાંધીજીનો મળ્યો હતો. મહાત્મા ગાંધીજી અને મહાદેવભાઈ વચ્ચે પરિપક્વ થયેલા, તેમના સ્નેહ અને આદર્શોને બાળપણથી પામનાર નારાયણ દેસાઈનો જન્મ દુર્ગાબહેનની કૂખે ૨૪ ડિસેમ્બર, ૧૯૨૪ના રોજ વલસાડમાં થયો હતો. માતાના સંસ્કારનો વારસો નારાયણ દેસાઈને જીવનઉપયોગી ભાથું બાંધવામાં ખૂબ ઉપયોગી બને છે. કારણ કે, શરૂઆતના દસથી અગિયાર વર્ષ તેઓએ પિતા મહાદેવભાઈ સાથે ખૂબ ઓછો સમયગાળો વિતાવ્યો હતો. પરંતુ પિતૃપ્રેમથી વંચિત નારાયણ દેસાઈ ને દુર્ગાબહેનની માતૃભક્તિએ તેમનું ઘડતર કરવામાં ક્યાંય ક્યાંય રાખી નહોતી. મહાદેવભાઈ અને દુર્ગાબહેનની બહુ મોટી ઉંમરે નારાયણ દેસાઈનો જન્મ થયો હોવાથી તેનો ઉછેર લાડકોડમાં થયો હતો. મહાદેવભાઈએ તેમના પુત્રનું નામ ‘નારાયણ’ અજામિલની કથા પરથી રાખેલું. તેઓ એવું કહેતા કે આપણે અજામિલ જેવા પાપી છીએ તો પુત્રનું નામ નારાયણ રાખવાથી વારંવાર ઈશ્વરનું સ્મરણ થાય અને જે થોડાઘણાં પાપ ધોવાય તે ધોઈ શકીએ. નારાયણ નામ લેવાથી ઈશ્વરનું સતત આહવાહન થાય તે હેતુથી આ નામ મહાદેવભાઈએ પુત્રનું રાખેલું.

નારાયણ દેસાઈ એક પ્રતિભાશાળી વ્યક્તિમત્તા હતા. દરેક ક્ષેત્રમાં તેમણે તેમની આદર્શ ભૂમિકા અદા કરી છે. નારાયણ દેસાઈ એકાદ મહિનાના થયા ત્યારે દુર્ગાબહેન તેને સાબરમતી સત્યાગ્રહ આશ્રમમાં લઈને આવે છે. નારાયણ દેસાઈના ઘડતરનો પાયો જ આ સાબરમતી આશ્રમ બને છે. નારાયણ દેસાઈનો ઉછેર વિશાળ કબીલા જેવા કુટુંબમાં થયો હતો. બાપુ નારાયણ દેસાઈ માટે દોસ્ત હતા, મહાદેવભાઈએ તો ગાંધીજી સાથે કામ કર્યું હતું પણ નારાયણ દેસાઈ તો બાપુ સાથે રમ્યા હતા. ગાંધીજીએ જેનો હાથ ઝાલ્યો હોય તે ક્યાંથી પાછા પડે તેવા નારાયણ દેસાઈ ગાંધીજીની ઓંગળી પકડીને ચાલ્યાં છે તો ક્યારે ગાંધીજીની લાકડી પણ બન્યા હતા. નારાયણ દેસાઈને માતા-પિતા તરફથી તો સંસ્કારાયા હતા સાથે જ આશ્રમમાં વિશાળ કબીલા જેવા પરિવારમાં તેને નિત્ય નવો થતો મિત્રો, સંતો, વિદ્વાનોનો સત્સંગ અદ્ભુત હતો. તેના કારણે તેઓના વ્યક્તિત્વનો નિખાર અદ્ભુત થયો હતો. નારાયણ દેસાઈ સેવાગ્રામમાં અને ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના વિનયમંદિરમાં પાંચમું ધોરણ સુધીનું ઔપચારિક શિક્ષણ મેળવે છે. ત્યારબાદ તેઓ મારવાડી વિદ્યાલયના એક દિવસના શાળાપ્રવેશના દિવસને બાદ કરતાં ક્યારેય શાળાએ ગયા નહોતા. તેમણે કોઈ ડિગ્રીલક્ષી શિક્ષણ લીધું નહોતું, તેઓ પરીક્ષાની જિંદગીમાં ક્યારેય ફસાયા નહોતા તેથી જ તેઓ કદાચ જિંદગીની પરીક્ષામાં સાચા અર્થમાં ઉત્તીર્ણ થયા હતા. દેશના અત્યંત પ્રભાવક વાતાવરણમાં જન્મેલાં નારાયણ દેસાઈનું ઘડતર સાબરમતી આશ્રમમાં શરૂઆતના ૧ થી ૧૨ વર્ષ વીતેલું. ત્યારબાદ સેવાગ્રામ આશ્રમમાં ૧૩ થી ૨૪ વર્ષની ઊંમર સુધી તેમનું ઘડતર થયું. આ સમયગાળા દરમિયાન તેઓ ગાંધીજી અને મહાદેવભાઈ સાથે જોડાઈ કામ કરતા હતા. મહાદેવભાઈ ટાઈપિસ્ટ તરીકે નારાયણ દેસાઈ તેમના કાર્યાલયમાં કામ કરતા હતા.

નારાયણ દેસાઈ ગાંધીજીનાં માનસપુત્ર સમા મહાદેવભાઈ અને દુર્ગાબહેનના એકના એક દીકરા હતા. નારાયણ દેસાઈ અને ઉત્તરાબહેનના લગ્ન બાદ તેમને ત્રણ સંતાનો થયા. તેમાં એક દીકરી અને બે દીકરા હતા. તેમાં મોટી દીકરી સંઘમિત્રા (ઘરનું

નામ ઉમા) દાકતર છે. મોટા દીકરા નચિકેતભાઈ અમદાવાદમાં ‘બિઝનેસ ઈન્ડિયામાં’ પત્રકાર છે. નાનો દીકરો અફલાતૂનભાઈ બનારસમાં ‘સમાજવાદી જનતા પરિષદ’ની રાષ્ટ્રીય કારોબારીના સભ્ય છે.

નારાયણભાઈ બહુમુખી વ્યક્તિત્વ ધરાવનારા વ્યક્તિ હતા. સેવા, સાહિત્ય, શિક્ષણ કે એવા કોઈ અમુક એક ક્ષેત્રમાં એમને મર્યાદિત બાંધી ના શકાય. નારાયણ દેસાઈની પ્રતિભા બહુવિધ રીતે ખીલેલી હતી. તેમનું વ્યક્તિત્વ વિશાળ સ્તર સુધી વિસ્તરેલું હતું. વલસાડથી વિશ્વ સુધી તેમનું કાર્યક્ષેત્ર વિસ્તરેલું હતું. ભૂદાનયાત્રા, શાંતિસેનાની સ્થાપના, સર્વોદય કાર્યકર વેડછી ગ્રામશાળા વગેરે ક્ષેત્રોમાં તેઓએ અનન્ય ઉચ્ચકોટિનું કાર્ય હતું. ક્વેક્સથી લઈ યુદ્ધવિરોધી આંદોલન, અહિંસક તાલીમ વગેરે અનેક કાર્યક્રમો, સંમેલનો, પ્રસંગોને કારણે તેઓ વિશ્વભરમાં ફર્યા અને પોતાને તેમજ સમાજને સમૃદ્ધ કરતાં રહ્યા. તેમાં તેની ઉદારતા અને માણસાઈના ગુણોનો સાક્ષાત્કાર અવશ્ય થતો. નારાયણ દેસાઈ ગાંધી-વિનોબા-જયપ્રકાશ સાથે સતત કામ કરીને ઘડાયા, મંજાયા હતા. નારાયણ દેસાઈએ ઈ. સ. ૨૦૦૭ થી ઈ. સ. ૨૦૦૮ સુધી ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના પ્રમુખનું બિન હરીફ નેતૃત્વ કર્યું હતું. આ સમયગાળા દરમિયાન તેઓએ ગુજરાતી ભાષા અને સાહિત્યને લોકાભિમુખ કરવામાં સક્રિય ભૂમિકા ભજવી હતી. આ સમય દરમિયાન તેમણે ગાંધીજીની માતૃભાષા પ્રત્યેની જે નિસ્ખત હતી. તે જ નિસ્ખતથી જીવનના નવમાં દાયકામાં પણ તેઓ સતત પ્રયત્નશીલ રહી કામ કર્યું હતું. નિશાળે નહીં ગયેલા નારાયણ દેસાઈ સ્વરાજ્યની પ્રાપ્તિ માટે ગાંધીજીએ સ્થાપેલી અને ગાંધીજી પોતે જેમના પ્રથમ કુલપતિ હતા. તે ગૂજરાત વિદ્યાપીઠનાં દસમા કુલપતિ તરીકે નારાયણ દેસાઈ વરણી પામ્યા હતા. તેઓએ ઈ. સ. ૨૦૦૭ થી ઈ. સ. ૨૦૧૫ સુધી ગુજરાત વિદ્યાપીઠના કુલપતિ તરીકે રહીને ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના મૂળ ધ્યેયોને આગળ વધારવા માટે માર્ગદર્શન પૂરું પાડ્યું હતું. ઈ. સ. ૨૦૦૨નાં ગોધરાકાંડ બાદની અકળામણ અને હતાશાના પ્રાયશ્ચિતરૂપે અહિંસા અને શાંતિ માટે નારાયણ દેસાઈએ ઈ. સ. ૨૦૦૪ પછીનું જીવન તેમણે ‘ગાંધીકથા’ કહેવામાં ગાળ્યું હતું. સૂતરના તાંતણે દેશને એક સૂત્રથી જોનારા બાપુના મૂલ્યો ‘ગાંધીકથા’ ના માધ્યમથી લોકો સુધી પહોંચાડવા તેમણે ૧૧૬ જેટલી ગાંધીકથાઓ દેશ-વિદેશમાં કરી હતી. ગાંધીવિચારને આજીવન આત્મસાત કરી જીવનનાં અંત સુધી તેઓ ગાંધીમાર્ગે કાર્યશીલ રહ્યા હતા.

નારાયણ દેસાઈની કર્મયાત્રાની સાથે તેમની શબ્દયાત્રાનો પ્રવાહ પણ નિરંતર વહેતો રહ્યો હતો. તેઓએ આઠ વર્ષ સુધી ‘ભૂમિપુત્ર’ ના સ્થાપક અને સંપાદક રહ્યા હતા. હિન્દીમાં ‘યકીન’, ‘સર્વોદયજગત’ તથા અંગ્રેજીમાં ‘વિઝલ’ના સંપાદન પ્રકાશનમાં તેમણે અમૂલ્ય સહયોગ આપ્યો હતો. નારાયણ દેસાઈ લઘ્યપ્રતિષ્ઠ સાહિત્યકાર હતા. ગુજરાતી, હિંદી, અંગ્રેજી એમ જુદી જુદી ભાષામાં નાનામોટા પચાસેક ગ્રંથોની સંપદા તેમણે આપી. આમાં કેટલાક જીવનચરિત્રાત્મક પ્રકારના ગ્રંથો, કેટલાક નાટકો, નિબંધો, વિવેચનગ્રંથો, કેટલાક સંપાદન ગ્રંથો, કેટલાક અનુવાદગ્રંથો, કેટલાક વિચારપ્રધાન ચિંતનાત્મક પ્રકારના ગ્રંથો છે.

નારાયણ દેસાઈએ ‘અગ્નિકુંડમાં ઊગેલું ગુલાબ’ (૧૯૮૨) જીવનચરિત્ર ગ્રંથમાં સ્વાતંત્ર્યસેનાની, લોકસેવક અને ગાંધીજીના અંગતમંત્રી એવા મહાદેવભાઈ દેસાઈના વૈયક્તિક તેમજ વ્યાપક જીવનને આંબી લેતી વિલક્ષણ કથા આલેખાઈ છે. પિતૃતર્પણરૂપે પુત્ર નારાયણ દેસાઈના હાથે લખાયું હોવાથી એ એક વિશિષ્ટ વ્યક્તિની જીવનકથા બને છે. નારાયણ દેસાઈએ ચારસોથી અધિક પૃષ્ઠોમાં ૪૪ પ્રકરણોમાં વિસ્તરેલું આ દળદાર જીવનવૃત્તાંત સ્મૃતિ, પ્રસ્તુતિ, પ્રીતિ, દ્યુતિ અને આહુતિ આ પાંચેય ખંડોમાં ચરિત્રનાયક મહાદેવભાઈના જીવનના અનેક પાસાંઓ અક્ષરફળરૂપે પ્રગટાવ્યા છે. તેમજ ‘મારું જીવન એ જ મારી વાણી’ ભાગ ૧ થી ૪ (૨૦૦૩) નામે દળદાર ગ્રંથો તેમની પાસેથી પ્રાપ્ત થયા હતા. એ ઘટના ગુજરાતી સાહિત્ય માટે વિરલ અને ગૌરવપ્રદ બની રહે છે. આ જીવનચરિત્ર સમગ્ર ભારતીય સાહિત્યમાં મહાત્મા ગાંધીનું શકવર્તી મહાચરિત્ર તરીકે નામના ધરાવે તેવી સમર્થ કૃતિ છે. નારાયણ દેસાઈની વર્ષોની મહેનતના ફળને અંતે પ્રાપ્ત થયેલું ગાંધીજીનું બૃહદ જીવનચરિત્ર ચાર ભાગમાં આપ્યું છે. ૨૨૦૦ પૃષ્ઠોમાં વિસ્તરેલ આ ચરિત્ર જીવનચરિત્ર સાધના, સત્યાગ્રહ, સત્યપથ અને સ્વાર્પણ જેવા ચાર ખંડોમાં વિભાજિત છે. ગુજરાતી સાહિત્ય અને વિશ્વસાહિત્યમાં એક અમૂલ્ય ચરિત્રગ્રંથની ગરજ પૂરી પાડે તેવો ગ્રંથ બને છે.

નારાયણ દેસાઈ લિખિત ‘સંત સેવતાં સુકૃત વાધે’ (૧૯૬૭) અને ‘મને કેમ વીસરે રે?’ (૧૯૮૬) ચરિત્રનિબંધના પુસ્તકો ગુજરાતી સાહિત્યમાં આગવું સ્થાન ધરાવે છે. નારાયણ દેસાઈનું ચરિત્રનિબંધનું પુસ્તક ‘સંત સેવતાં સુકૃત વાધે’ (૧૯૬૭)વાંચતા તરત જ આ લેખનમાં ગાંધીમુદ્રા અને ગાંધીચેતના પ્રગટ થતી જોવા મળે છે. અત્યંત રસાળ શૈલીમાં લખાયેલા ‘સંત સેવતાં સુકૃત વાધે’ સ્મરણપુસ્તકમાં નારાયણ દેસાઈએ ગાંધીજી અને તેમના અંતેવાસીઓ સાથેના અત્તરના પૂમડાં જેવા બાવીસસંસ્મરણોની મૂડી આ પુસ્તકમાં આલેખી છે. લેખકના ચિત્ત ઉપર જે ચરિત્રોની અમિટ છાપ પડી છે એવા દેશ-વિદેશના રહ્યાવ્યક્તિઓનાં ચરિત્રનિબંધો ‘મને કેમ વીસરે રે?’ (૧૯૮૬) પુસ્તકમાં આલેખાયા છે. આ પુસ્તકમાં સમાવિષ્ટ ચરિત્રોમાં મોટાભાગના ચરિત્રો ગાંધીજીના અંતેવાસી છે. તો કેટલાંક ગાંધીજી, ગાંધીમૂલ્યોથી પ્રભાવિત થઈને ગાંધીના માર્ગ ચાલવા મથનારાઓ છે. આ ચરિત્રોનું ચરિત્રાંકન કરવાનો અનન્ય પ્રયાસ આ પુસ્તકમાં થયો છે.

નારાયણ દેસાઈએ ‘કસ્તૂરબા’ (૨૦૧૩) અને ‘જયપ્રકાશ’ (૨૦૧૪)નામના બે જીવનચરિત્રાત્મક નાટકો લખ્યા છે. નારાયણ દેસાઈ દ્વારા દ્વિઅંકી નાટક ‘કસ્તૂરબા’ રચવામાં આવ્યું છે. ‘કસ્તૂરબા’ નાટકમાં પ્રથમ અંકમાં ૩૦ દૃશ્યો છે. અને દ્વિતીય અંકમાં ૧૬ દૃશ્યો સમાવવામાં આવ્યા છે. આ નાટકમાં કસ્તૂરબાના જીવનપ્રસંગોને નાટ્યરૂપે ઉતારવામાં આવ્યા છે. તેમાંથી કસ્તૂરબાના વ્યક્તિત્વની છબી પ્રગટ થતી જોવા મળે છે. આ નાટક અદિતી દેસાઈ દ્વારા દિગ્દર્શિત પણ કરવામાં આવ્યું છે. સાંપ્રત સમયમાં જયપ્રકાશ નારાયણનું મહત્વનું પ્રદાન વિસરાતું જાય છે, તેવું નારાયણ દેસાઈને લાગતા તેઓએ જયપ્રકાશ નારાયણના વિચારો વધારે પ્રસ્તુત બને તે માટે તેઓએ ‘જયપ્રકાશ’ નાટક પ્રગટ કરવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે. આ નાટકમાં જયપ્રકાશ નારાયણના વિચારો, જીવનપ્રસંગો, તેમની કાર્યસિદ્ધિની ઓળખ અનેક દૃશ્યોમાં પ્રગટતી જોવા મળે છે. મંચનક્ષમતાની દૃષ્ટિએ આ નાટકને સંપૂર્ણ રીતે ભજવવું થોડું મુશ્કેલભર્યું છે. પણ નાટકમાં આલેખિત અમુક દૃશ્યો ભજવી શકાય તેવા છે. આ દ્વિઅંકી નાટક છે. પ્રથમ અંકમાં ૧૭ અને બીજા અંકમાં ૮ દૃશ્યો સમાવવામાં આવ્યા છે. આ ઉપરાંત નારાયણ દેસાઈએકેટલાક શેરીનાટકો, નૃત્યનાટિકા તેમજ છાયાનાટક પણ તેઓએ લખ્યા છે. તેમાં ‘વિશ્વાત્મા મહાત્મા’ (૧૯૭૧) નામની નૃત્યનાટિકા લખી છે. આ ઉપરાંત ‘ગાંધી ક્યાંક હશે ભારતમાં’ (૧૯૮૪) નામનું છાયાનાટક, ઉપરાંત બીજા બે શેરીનાટકો પણ તેઓએ લખ્યા છે. જેમાં ‘બે હજાર ને એકાવન’ (૧૯૮૬) લોકનાટ્ય છે. આ નાટકમાં અણુઊર્જા વિશે વાત કરવામાં આવી છે. તેમજ ‘ઘરના છોકરા ઘંટી ચાટે’ (૧૯૮૩) એ શેરીનાટક છે.

નારાયણ દેસાઈએ ઈ. સ. ૨૦૦૨ના કોમી રમખાણ બાદ તેના પ્રાયશ્ચિતરૂપે ગાંધીકથા કરવાનો નિશ્ચય કરે છે. ગાંધીજીના વિચાર દરેક લોકો સુધી પહોંચાડવા તેઓએ ગુજરાતમાં, ગુજરાત બહાર અને વિદેશમાં તેઓએ ૧૧૬ જેટલી ગાંધીકથાઓ કરી હતી. ગાંધીકથામાં નારાયણ દેસાઈએ ગાંધીજીના જીવનના જીવનપ્રસંગોને ગીતો દ્વારા ઉપસાવવાનો પ્રયાસ કર્યો છે. નારાયણ દેસાઈ લિખિત આ ગીતો ‘ગાંધીકથા ગીતો’ પુસ્તિકા રૂપે પ્રગટ થયા છે. આ ગીતો ગાઈને પણ સામાન્યજનના મનમાં ગાંધીવિચાર પ્રગટાવવાનો પુરુષાર્થ નારાયણ દેસાઈએ તેમના જીવનની ઢળતી ઉંમરે પણ શરૂ રાખ્યો હતો. વિવિધ ભાષાઓના સારા જાણકાર, કુશળ અનુવાદક એવા નારાયણ દેસાઈએ અને ઉત્તર દેસાઈએ ઊડિયા કૃતિનો ગુજરાતીમાં ‘માટીનો માનવી’ જેવી તેમજ હિંદી કૃતિનોગુજરાતીમાં ‘તમસ’ના નામે અનુવાદ કર્યો છે. તેમજ રવિન્દ્રનાથ ટાગોરના કેટલાક બંગાળી ગીતોનો અનુવાદ ‘રવિ છબિ’ નામે કર્યો છે.

નારાયણ દેસાઈએ અનેક પુસ્તકોનું સંપાદનકાર્ય પણ કર્યું છે. નારાયણ દેસાઈએ કરેલાં સંપાદન ગ્રંથોમાં મુખ્યત્વે ‘જયપ્રકાશ’ (૧૯૮૧) નામનો સંપાદનગ્રંથ કાન્તિ શાહ સાથે તૈયાર કર્યો છે. ‘જયપ્રકાશ’ નામનો આ બૃહદ ગ્રંથ જયપ્રકાશ નારાયણના જીવનવ્યક્તિત્વના વિવિધ પાસાંને પ્રગટ કરતો બૃહદ ગ્રંથ છે. આ ગ્રંથના પુનર્મુદ્રણ સમયે આ ગ્રંથને યથાવત બૃહદ સ્વરૂપે આપવાને બદલે આ ગ્રંથને ત્રણ મુખ્ય ભાગમાં વિભાજિત કરી ત્રણ સ્વતંત્ર પુસ્તક રૂપે પ્રગટ કરવામાં આવ્યા હતા. તેમાં (૧) જયપ્રકાશ: અમારી નજરે (૨) જયપ્રકાશ જીવનયાત્રા (૩) જયપ્રકાશ: વિચારયાત્રા. આ ઉપરાંત નારાયણ દેસાઈએ

‘વેડછીનો વડલો’ (૧૯૮૪) અને ‘જયપ્રકાશ-અમારી નજરે’(૧૯૮૧) તેમજ ‘અમે જોયેલા-જાણેલા જયપ્રકાશ(૨૦૦૧) જેવા ગ્રંથોનું સંપાદન નારાયણ દેસાઈએ કર્યું છે.

નારાયણ દેસાઈ ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના પ્રમુખ બન્યા તે સમયગાળા દરમિયાન તેઓએ ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના અધિવેશનમાં પ્રમુખ તરીકેના બે પ્રવચનો અને તે સમયગાળા દરમિયાન ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના સામયિક પત્ર ‘પરબ’માં પ્રમુખીય પત્રો અને નારાયણ દેસાઈકૃત લેખોને સમાવતું એકમાત્ર પુસ્તક ‘ધણું જીવો ગુજરાતી’ માં કેટલાંક વિવેચનલક્ષી લેખો સમાવેશ પામ્યાં છે. પ્રસ્તુત પુસ્તકમાં સમાવિષ્ટ લેખોમાં નારાયણ દેસાઈને ‘ગિરા ગુર્જરીને વિશ્વગુર્જરી’ બનાવવાની જે ખેવના હતી, તે અંગેના તેમના વિચારો અને તેમની ગુજરાતી ભાષાને બચાવવા માટેની ચિંતા આ પુસ્તકમાં પ્રગટ થતી જોવા મળે છે.

નારાયણ દેસાઈના પ્રકીર્ણ સાહિત્યમાં ગાંધીવિચારને પ્રગટ કરતાં સાહિત્યમાં ગાંધીવિચારો જનવાણી થઈ ગયા છે?, BLISSWITHITTOBEYOUNGWITHGANDHI, MYGANDHI, સૌના ગાંધી શ્રેણી-૧,૨, ‘ગાંધીની શક્તિનું મૂળ એકાદશ વ્રત’, ‘સર્વોદય વિચાર’, ‘A HANDBOOK FOR SHANTI SAINIKS’, ‘સર્વોદય શું છે?’, ‘શાંતિસેના પરિચય’, ‘TOWARDS AN ON VIOLENT REVOLUTION’, ‘A HANDBOOK FOR SATYAGRAH IS’, ‘અહિંસક પ્રતિકારની પદ્ધતિઓ’, ‘પાવન પ્રસંગો’, ‘ભૂદાન આરોહણ’, ‘મા ધરતીને ખોળે’, ‘ટૅક બનામ લોક’, ‘સોનાર બાંગ્લા’જેવા અનેક પુસ્તકોમાં અનેકવિધ વિષયોને આવરી લેતા વિષયોમાં નારાયણ દેસાઈએ સાહિત્યસર્જન કર્યું છે.

નારાયણ દેસાઈએ તેમના જીવનકાળ દરમિયાન કરેલી અઢળક પ્રવૃત્તિઓ અને વિપુલ પ્રમાણમાં સાહિત્યસર્જન કર્યું છે. આ બદલ તેમને અનેક પુરસ્કારોથી નવાજવામાં આવ્યા હતા. ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી પુરસ્કાર, દર્શક પ્રતિષ્ઠાન પુરસ્કાર, ભારતીય સાહિત્ય અકાદમી પુરસ્કાર, કાકા કાલેલકર પુરસ્કાર, રણજીતરામ સુવર્ણચંદ્રક, નર્મદ સુવર્ણચંદ્રક, સ્વામી સચ્ચિદાનંદ સન્માન, ઉમા-સ્નેહરશ્મિ પુરસ્કાર, ગુજરાત વિશ્વકોશ ટ્રસ્ટનો સવ્યસાથી સારસ્વત પુરસ્કાર, ભારતીય જ્ઞાનપીઠ દ્વારા અપાતો મૂર્તિદેવી પુરસ્કાર, રાષ્ટ્રીય અને આંતરરાષ્ટ્રીય સ્તરે શાંતિના પ્રયાસો માટે અને રચનાત્મક કાર્યો માટે નાગરદાસ જોશી પુરસ્કાર, કોમી એખલાસ માટે જમનાલાલ બજાજ એવોર્ડ અને હાર્મની એવોર્ડ, સહિષ્ણુતા અને અહિંસાનો અથાગ પ્રચાર કરવા યુનેસ્કો દ્વારા ‘યુનેસ્કો મદનજીતસિંઘ પુરસ્કાર’, ‘ફ્રેન્ડસ ઓફ બાંગ્લાદેશ લિબરેશન વોર ઓનર’ તેમજ સચુકત રાષ્ટ્રનો શાંતિ પુરસ્કાર જેવા અનેક પુરસ્કારો નારાયણ દેસાઈને અર્પણ કરવામાં આવ્યો હતા.

નેવું વર્ષની પાકટ વયે, ભરી ભરી જિંદગી જીવીને અનેક કામો કરીને કોઈ વ્યક્તિ વિદાય લે તે અજુગતું કે અણધાર્યું તો ના જ કહેવાય. પરંતુ છતાં એક વ્યક્તિ જેણે પોતાના સમગ્ર જીવન દરમિયાન પોતાના પ્રેરણાસ્ત્રોત એવા ગાંધીને ધ્રુવતારક સમા રાખીને ગાંધીના અનેકવિધ કામો કર્યા હોય ત્યારે સમાજને તેની વિશેષ ખોટ પડે છે, એક ખાલીપો અનુભવાય છે. ૧૫/૦૩/૨૦૧૫ને રવિવારે એમની વહાલુડી વેડછીની ધરતી પર વહેલી સવારે નારાયણ દેસાઈ ચિરનિદ્રામાં પોઢી ગયા અને એમણે અંતિમ શ્વાસ લીધા.

#### સંદર્ભગ્રંથ :-

- સંત સેવતાં સુકૃત વાષે - નારાયણ દેસાઈ (૨૦૦૭). અમદાવાદ: ગુર્જર ગ્રંથરત્ન કાર્યાલય.
- અગ્નિકુંડમાં ઊગેલું ગુલાબ - નારાયણ દેસાઈ (૨૦૦૭). અમદાવાદ: શ્રી મહાદેવ દેસાઈ જન્મશતાબ્દી સમિતિ.
- મારું જીવન એ જ મારી વાણી (પ્રથમખંડ:સાધના)- નારાયણ દેસાઈ (2003). અમદાવાદ: નવજીવન મુદ્રણાલય.
- મા ધરતીને ખોળે - નારાયણદેસાઈ, (૧૯૫૬). વડોદરા: યજ્ઞ પ્રકાશન.
- મને કેમ વીસરે રે? - નારાયણદેસાઈ, ( ૨૦૦૭ ). અમદાવાદ: ગુર્જર ગ્રંથરત્ન કાર્યાલય.

## ગુજરાતી નવલકથા સાહિત્ય

સેજલ મકવાણા  
રીસર્ચ સ્કોલર, ગુજરાતી,  
સુરેન્દ્રનગર યુનિવર્સિટી, વઢવાણ

ગુજરાતી સાહિત્યમાં સાહિત્યકારોએ સાહિત્યને અલગ અલગ સ્વરૂપો આપ્યા જેમાં કે પદ્ય અને ગદ્ય જેમાં પદ્ય સાહિત્યમાં રાગ ,લઈ, તાલ,પ્રકૃતિ વર્ણન વગેરેનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો જ્યારે ગદ્યમાં પાત્રો જીવનશૈલી ના રંગો દર્શાવવામાં આવતા આમ ગદ્યમાંથી નવલકથાનું ઉદ્ભવ થયો.

નવલકથા શબ્દ મૂળ ‘Novel’ પરથી ઉતરી આવ્યો ઈ.સ ની તેરમી સદીમાં ઇટાલીમાં નવલકથા સાહિત્ય સ્વરૂપનું આરંભ થયો. નવલકથા એટલે ગજવામાં રહી શકે તેવી રંગભૂમિ જેમાં કથા, સ્વરૂપપાત્ર ,લેખન, સ્થળ ,કાળ વાતાવરણ સંવાદ તત્વ વગેરે નવલકથાની ભાષા ગદ્ય શૈલીની નિરૂપણ રીતે જીવન દર્શન વગેરેનો સમાવેશ કરવામાં આવે છે. દરેક લક્ષણોને ધ્યાનમાં રાખીને ઘટક તત્વોની વિગતે ચર્ચા કરવામાં આવે છે .તેને નવલકથા કહેવામાં આવે છે.

‘નવલકથાનો આત્મા કથાવસ્તુમાં રહેલો હોય છે’

નવલકથા જીવનમાં બનતા બનાવો ઇતિહાસ માંથી વિષયવસ્તુને પસંદગી કરીને લખવામાં આવે છે ગુજરાતી સાહિત્ય માં નવલકથાનો ઉદ્ભવ સુધારક યુગમાં ઈ.સ. ૧૮૬૬ નંદશંકર તુર્જીશંકર મહેતાએ સૌપ્રથમ નવલકથા ગુજરાતના છેલ્લા રાજપૂત રાજા કરણસિંહ વાઘેલા જે ‘ કરણધેલો’ નામે ઓળખાયા તેમની સુપ્રસિદ્ધ નવલકથા જે પ્રથમ ગુજરાતી સાહિત્યની પ્રથમ મૌલિક નવલકથા બની.

ગુજરાતી સાહિત્યમાં ભાષાંતર થયેલ નવલકથા ૧૮૬૨ માં લખાય હતી જે ‘હિન્દુસ્તાનમધ્ય નું ઝૂંપડું’ સૌરભસામુસાર્કે ફ્રેન્ચ કથાના અંગ્રેજી અનુવાદ ‘An Indian cottage’પરથી અનુવાદ કર્યો હતો ત્યાર પછી ૧૮૬૮ મા ‘સાસુવહુ ની લડાઈ’ મહિપતરામ નીલકંઠ ઈ. સ ૧૮૮૭ સરસ્વતીચંદ્ર ભાગ ચાર જે સૌથી મોટી મહાન નવલ ગોવર્ધનરામ ત્રિપાઠી દ્વારા લખવામાં આવી. ઝવેરચંદ મેઘાણી રચિત સોરઠ તારા વહેતા પાણી જે સોરઠી બોલીમાં સાંભળનારને વાંચનારને રસમગ્ન કરતી નવલકથા લખી માનવી માનવ થાય તો ઘણું માનવીની ભવાઈ જાનપદી નવલકથા ૧૯૪૧માં પન્નાલાલ પટેલે રચિત ઉમાશંકર જોશી રચિત ‘પારકા જણ્યા’ ‘રઘુવીર ચૌધરી રચિત ‘અમૃતા’ આધુનિક યુગના રંગમાં રંગાયેલી નવલકથા ચંદ્રકાંતબક્ષી, ચિનુ મોદી ,લાભશંકર ઠાકર, વગેરે સાહિત્યકારોએ ગુજરાતી સાહિત્યને સર્વ શ્રેષ્ઠ નવલકથાઓ આપી જેમાં ઇતિહાસની સાથે સમાજ જીવન અને વ્યક્તિ જીવનના દરેક પસાઓને સાહિત્યકારોએ એક નવા ઓપ આપીને પોતાની ભાષામાં સાહિત્યની રચના કરી . જેના દ્વારા આજની પેઢી ને સત્ય અને હકીકતો થી વાકેફ કરવામાં આવ્યા છે. ઘણી બધી નવલકથાઓ આપણા જીવનને બદલવામાં અને સાચા માર્ગ તરફ દોરી જાય છે આપણને નવલકથા દ્વારા જીવનના દરેક રંગોનો અનુભવ થાય છે .આમ સાહિત્યકારોએ ગુજરાતી સાહિત્યમાં સર્વશ્રેષ્ઠ નવલકથાઓની રચના થય

ગુજરાતી સાહિત્યની નવલકથાઓ માનવ જીવનના ઇતિહાસ, પ્રકૃતિ, પરંપરા રીતરિવાજો ,ભાષા ,પહેરવેશ રહેણીકેણી માન્યતાઓ વગેરે પર પ્રભાવ પાડતી જોવા મળે છે. ગુજરાતી સાહિત્યમાં ઘણી બધી નવલકથાઓ હોય છે જે માનવ જીવનને કેન્દ્રમાં રાખીને પ્રકૃતિ સાથે ભાષા માનવીની રેણી કેણી વગેરે દર્શાવવામાં આવી છે. ઇતિહાસ ને લગતી સૌપ્રથમ નવલકથા કરણધેલો જે ગુજરાતનો છેલ્લો રાજપૂત રાજા કરણસિંહ વાઘેલા અને તેના મંત્રી માધવ ‘પેટના બળ્યા એ દેશ બાળવાની હકીકત પ્રસિદ્ધ કરી’. ચમત્કારો ની ભરમાર ની વાતો . રાજા કર્ણદેવ વાઘેલા અને અન્ય વ્યક્તિઓ રાજપાટ મુસ્લિમો સાથે વેર અલાઉદ્દીન ખીલજીનો ગુજરાત પર આક્રમણ આવી ઉત્તમ નવલકથા નંદશંકર આપી છે. મહિપતરામ નીલકંઠ રચિત

સાસુવહુ ની લડાઈ સોઘરા જેસંગ વનરાજ ચાવડો વગેરે ઉમદા નવલકથાઓ. અનંતરાય ત્રિકમલાલ રચિત રાણકદેવી જેમાં જૂનાગઢના વિજેતા જયસિંહ સોલંકીની સામે રાણકદેવીની મક્કમતા અને તેના પુત્રની હત્યા પછી તેના મનોબળનો આકર્ષક ચિતાર આ નવલકથામાં જોવા મળે છે. કનૈયાલાલ મુનશી રચિત પાટણની પ્રભુતા ,ગુજરાતનો નાથ ,પૃથ્વીવલ્લભ વગેરે ઐતિહાસિક નવલકથા .રાષ્ટ્રીય શાયર ઝવેરચંદ મેઘાણી રચિત સત્યની શોધ ,રાગ ગંગાજળિયો, સોરઠ તારા વહેતા પાણી વગેરે .યુનીલાલ મડિયા રચિત વ્યાજનો વારસ ,લીલુલી ધરતી, કુમકુમ અને આશકા .ધૂમકેતુ રચિત નવલકથા ચોલાદેવી ,અવંતીનાથ ,જયસિંહ સિધ્ધરાજ જેવી સામાજિક નવલકથાઓ આપી . પન્નાલાલ પટેલ રચિત માનવીની ભવાઈ ,મળેલા જીવ, વળામણા .ગોરધનરામ ત્રિપાઠી રચિત સરસ્વતીચંદ્ર ભાગ એક થી ચાર સૌપ્રથમ ચાર ભાગમાં વિસ્તરેલ નવલકથા રઘુવીર ચૌધરી રચિત આધુનિક નવલકથા અમૃતા. લાભશંકર ઠાકર રચિત ચપક ચાલીસા, કદી નહીં છોડું, પીવરી. સ્ત્રી લેખિકાઓ રચિત નવલકથાઓ ધીરુબેન પટેલ ઓંધળી ગલી, વડવાનલ ,શિમળાના ફૂલ. કુંદનિકા કાપડિયા રચિત સાત પગલાં આકાશમાં નારીવાદી કથા વગેરે નોંધપાત્ર નવલકથાઓ મળે છે .આમ ગુજરાતી સાહિત્યમાં યુગ પ્રમાણે આપણને ઘણી બધી નવલકથાઓ જોવા મળે છે. જે ઇતિહાસની સાક્ષી પૂરે છે અને માનવીના જીવન ની હકીકતો નવલકથાઓ દ્વારા પ્રચલિત બને છે.

ગુજરાતી સાહિત્યની ઉત્તમ નવલકથાઓ આપણને દરેક યુગમાં જોવા મળે છે. જેમાં ગુજરાતના ઇતિહાસ ને ઉજાગર કરતી નવલકથા કરણધેલો સિદ્ધારાજ જયસિંહ ગુજરાતના પ્રસિદ્ધ પુરુષ ના ઇતિહાસ ને ઉજાગર કરાવવામાં આવી છે સોરઠની ધરતીની નવલકથા સોરઠી બોલીમાં સોરઠ તારા વહેતા પાણી નારી રત્ન ને ઉજાગર કરતી નવલકથા રાણકદેવી ચાલુક્ય યુગની વિશેષતા બતાવતી નવલકથાઓ ચલાદેવી જયસિંહ નું જીવન ઘડતર કરનાર માતા મીનળદેવી પૃથ્વીરાજ ચૌહાણ ને ખતમ કરનાર સહુદીન ધોરીના આક્રમણને પાછું ઠેલવના નાયકાદેવી વગેરે નારીઓના ઇતિહાસને ઉજાગર કરનાર ઐતિહાસિક નવલકથાઓ જેમાં પતિ પાછળ સતી થવું કરણધેલામાં માધવ ની પત્ની દ્વારા ઇતિહાસ ના એક રિવાજને દર્શાવે છે. જાનપદી નવલકથા માનવીની ભવાઈ જેમાં છપ્પનિયા દુષ્કાળની સમસ્ત માહિતી આપણને જાણવા મળે છે .માનવી માનવ થાય ને તો પણ ઘણું. મેલુ છુ ધરતીને ખોળે મોંઘી માટીનો મોલ સમસ્ત પ્રજા વલખા મારતી જોવા મળે છે .જે આપણને દુષ્કાળની પરિસ્થિતિ કેવી હશે તેનાથી વાકેફ કરાવે છે. સરસ્વતીચંદ્ર જેમાં કુમુદ સુંદરી ની જીવન વ્યથા સામાજિક રાજકીય અને ધાર્મિક અનેક ભાષાઓનું દર્શન કરાવતી મહાનવલકથા જેમાં ધનાઢ્ય વેપારી શિક્ષિત યુવતી અશિક્ષિત પતિ વગેરેની ભરમારમાં પીસાતી એક નાયકા ની નવલકથા. અમૃતા જે શિક્ષિત નારી હોવા છતાં આધુનિકતાના રંગોમાં ગૂંચવાય છે. સમયની સાથે પરિવર્તિત પામતી એક અદ્ભુત કથા. સમસ્ત જગતની ઘટનાઓ સાથે સંકળાયેલી નવલકથાઓ જેમાં આઝાદી બ્રિટિશ શાસન મુસ્લિમ સલ્તનત રાજાઓ મહારાજાઓ વજીરો સામાન્ય જનતા જમીનદારો મરાઠાઓ વિશ્વના સમસ્ત જન જીવનની ઝાંખી નવલકથામાં જોવા મળે છે. જેમાં જન્મથી લઈને મૃત્યુ, શાસન,પ્રેમ ,વેર ઝેર, અંધશ્રદ્ધા, વહેમો, કુરીવાજો, કુટેવો ,વાતાવરણ, ભાષા ,રીતરિવાજો, તહેવારો, પારિવારિક ક્લેશ, વેપાર, ગરીબી ,બેરોજગારી, વગેરે આ નવલકથાઓમાં જોવા મળે છે. આ નવલકથાઓ દ્વારા દરેક વ્યક્તિને જીવનમાં કંઈક નવું જાણવાની ઉત્સુકતા રહે છે બનેલી ઘટનાઓ દ્વારા વ્યક્તિને સંદેશ પ્રાપ્ત થાય છે દરેક યુગની નવલકથામાં નવા સાર જોવા મળે છે સ્ત્રીને લાચાર અને અપમાનિત કરતી જોવા મળે છે શિક્ષણથી વંચિત અને પરંપરા રીતે રિવાજો રુઢિવાદી વ્યક્તિ જીવન દર્શાવવામાં આવ્યું છે.

‘કરણધેલો’ નવલકથામાં રાજા કર્ણદેવની શાસન વ્યવસ્થા તેમના જીવનની વાસ્તવિકતા ની માહિતી અને પર સ્ત્રીને વશ કરવાના કારણે રાજપાટ છિન્નભિન્ન થઈ જવું વગેરે દર્શાવવામાં આવ્યો છે .આ નવલકથા માં સ્ત્રી શિક્ષણ અને વ્યક્તિ શિક્ષણ પર્યાપ્ત માત્રામાં જોવા મળે છે જો સ્ત્રી શિક્ષણ અને વ્યક્તિ શિક્ષણ હોત તો કેશવ ની પત્ની પતિ પાછળ સતી ન થઈ હોત .અને માધવ પોતાના રાજ્યમાં મુસલમાનો ને ન લાવ્યો હોત. આ નવલકથામાં રુઢિવાદી પરંપરાઓ અને અંધવિશ્વાસ માન્યતાઓ અવિરત રીતે જોવા મળે છે. ‘માનવી ભવાની ભવાઈ’. નવલકથામાં કાળુ રાજુ નો એકબીજા પ્રત્યેનો પ્રેમ છપ્પનિયો દુષ્કાળ શેઠ. જમીનદારો .પેઢીઓની છેતરપિંડી અંધવિશ્વાસ મેળવવડાવો પાણી માટે વલખા મારતી સમસ્ત પ્રજા ભૂખમરો. ગંદી ગાળો અને દીકરાની ઘેલછા દર્શાવતો સમાજ વગેરે જોવા મળે છે .વ્યક્તિ શિક્ષણની નહિવત્તાના કારણો આ નવલકથામાં જોવા મળે છે,



‘સરસ્વતીચંદ્ર’ નવલકથામાં કુમુદ સુંદરી અને સરસ્વતીચંદ્ર એકબીજાના પ્રેમમાં ભવવીભોર છે પણ કુમુદ ના લગ્ન એક અશિક્ષિત પુરુષ સાથે થઈ જાય છે .જે કુમુદ સુંદરી ને ક્યારેય સમજી નથી શકતો. ખૂબ જ શિક્ષિત અને ચરિત્રવાન છોકરી હોવા છતાં પણ તેને વારંવાર અપમાનિત કરવામાં આવે છે રૂઢિવાદી લોકજીવન દર્શાવવામાં આવ્યો છે શિક્ષિત હોવા છતાં પણ પોતાના પતિ પ્રમાદધન જે અશિક્ષિત અને જડ પુરુષ સાથે પોતાનું જીવન વ્યતિત કરવા તૈયાર થઈ જાય છે જ્યારે સરસ્વતીચંદ્ર શિક્ષિત અને ધનાડય હોવા છતાં પણ કુમુદસુંદરી ના વિયોગમાં ભટકે છે. ‘અમૃતા’ આધુનિક જીવનના રંગમાં રંગાયેલી યુવતી અને પોતાના જીવનમાં શિક્ષણને સૌથી વધારે મહત્વ આપીને પોતાને સૌભાગ્યશાળી મને છે અનિકેત અને ઉદય જેવા મિત્રો અને પછી લગ્ન કરીને પતિ તરીકે સ્વીકારતી સ્ત્રી .શિક્ષિત હોવા છતાં પણ જગતના અનેક અનુભવો ને માણે છે જગતના રંગોનો આહલાદક અનુભવ કરતી અમૃતા બે પુરુષોમાંથી એકને પોતાના ભાવી ભરથાર બનાવવાની અપેક્ષા રાખતી અમૃતા તેની જિંદગીના નિર્ણયો માં ગૂંચળામણ અનુભવે છે.

દરેક નવલકથામાં ક્યાંક ને ક્યાંક આપણને ઈતિહાસને માણવાની નવલકથાને સમજવાની અને નવલકથાને સાંભળવાની ઉત્સુકતા રહેતી હોય છે. દરેક નવલકથા ગુજરાતી સાહિત્યની સર્વશ્રેષ્ઠ નવલકથાઓ છે .જેમાં સ્ત્રી શિક્ષણ અને વ્યક્તિ શિક્ષણને સમજાવ્યું છે.

#### સંદર્ભ ગ્રંથ

૧. નવલકથા સ્વરૂપ ડો.પ્રવીણ દરજી
૨. ગુજરાતી નવલકથા. પોપ્પુલર પ્રકાશન
૩. સાહિત્ય ચર્ચા. અનંતરાય રાવળ
૪. ગુજરાતી કથા વિશ્વ. બાબુ દાલપુરા નરશવેદ



## શિક્ષકોની સાંવેગિક બુદ્ધિ:પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોના લિંગ, અનુભવ અને શાળાના પ્રકારના આધાર પર એક અભ્યાસ

Gadhavi Varsha Chandrashing  
Research Scholar, Education,  
Surendranagar University, Wadhwan

### ❖ પ્રસ્તાવના

સંવેગને આપણે અંગ્રેજી શબ્દ **emotion**ના પર્યાય તરીકે વાપરીએ છીએ. તેનો અર્થ થાય છે શુદ્ધ કરવું કે ઉથલપાથલ કરવું. લીનસે સંવેગની વ્યાખ્યા આપતા કહે છે કે સંવેગ એ આત્યંતિક ક્રિયાશીલતાની અવસ્થા છે. પ્રવર્તમાન સમયમાં શિક્ષણનું મહત્વ વધવા લાગ્યું છે. 21મી સદીએ જ્ઞાન અને ટેકનોલોજીની સદી ગણાય છે. આજના સમયે અભ્યાસાર્થે આવતા વિદ્યાર્થીઓની કેટલીક જરૂરીયાતો હોય છે. આ વિદ્યાર્થીઓનો વિકાસ થાય તે જરૂરી છે અને તેના માટે શિક્ષકોએ સભાન રહેવું જોઈએ. મનોવૈજ્ઞાનિકો જણાવે છે કે સફળતા નક્કી કરવાના પરિબળોમાં બુદ્ધિઆંકનો હિસ્સો માત્ર 20% છે અને સફળતા માટે અન્ય પરિબળોનો 80% ફાળો છે. આ અન્ય પરિબળો પૈકીનું એક પરિબળ સાંવેગિક બુદ્ધિ છે. માનવી દિવસ દરમિયાન સતત કોઈને કોઈ પ્રકારની લાગણી કે સંવેદનો અનુભવતો હોય છે. ચિંતા, ભય, આનંદ, ઉત્સાહ, નિરાશા વગેરે જેવા અનેક સંવેદનો વ્યક્તિ અનુભવતી હોય છે. આ સંવેદનો વ્યક્તિના કાર્ય કે અને તેના અન્ય સાથેના સંબંધ પર અસર કરતા હોય છે. આમ વ્યક્તિના કોઈ કાર્ય કે અન્ય સાથેના સંબંધમાં સફળતા કે નિષ્ફળતાનો આધાર વ્યક્તિ કયા પ્રકારના સંવેગો અનુભવે છે તેના પર રહેલો છે. આથી વ્યક્તિએ પોતાના સંવેગ ઓળખી આ સંવેગો પોતાની કાર્યક્ષમતા પર કઈ રીતે અસર કરે છે તે તથા નકારાત્મક સંવેગોનું નિયંત્રણ કરી હકારાત્મક સંવેગોને યોગ્ય રીતે પ્રદર્શિત કરવાની આવડત કે ક્ષમતા કેળવવી જોઈએ. વ્યક્તિની આ પ્રકારની આવડત કે ક્ષમતાને પ્રવર્તમાન સમયમાં મનોવૈજ્ઞાનિકોસાંવેગિક બુદ્ધિ નામ આપે છે. પ્રવર્તમાન સમયમાં સામાજિક બુદ્ધિને વ્યક્તિની સફળતા માટે ખૂબ જ મહત્વની ગણવામાં આવે છે. શિક્ષણના સંદર્ભમાં વિચારીએ તો શિક્ષક ઘરેથી શાળાએ જાય ત્યારે તેકુટુંબ સાથે સંકળાયેલી લાગણીઓ લઈને જ શાળાએ જાય છે. આ લાગણીઓ સાથે તેના શિક્ષણના કાર્ય પર ઓછા વત્તા પ્રમાણમાં અસર કરે છે. એ જ રીતે શાળાકીય પરિબળ કે પરિસ્થિતિ સાથે સંકળાયેલ લાગણીપર ઓછા વત્તા પ્રમાણમાં અસર કરે છે. આ જ બાબત શિક્ષણના વ્યવસાયના સંદર્ભમાં એટલી જ સાચી છે શિક્ષક તેની આ લાગણી અને સંવેગો તેના શૈક્ષણિક વ્યવસાય પર કેવી અસર કરે છે તે જાણવા સંશોધકે પ્રયત્ન કર્યો છે.

### ❖ સાંવેગિક બુદ્ધિ સંકલ્પના વિકાસની ઐતિહાસિક ભૂમિકા

પ્રવર્તમાન સમયમાં સાંવેગિક બુદ્ધિ સંકલ્પના મનોવૈજ્ઞાનિકો, શિક્ષણશાસ્ત્રીઓ અને સામાન્ય લોકો માટે રસનો મુખ્ય વિષય અમેરિકન મનોવૈજ્ઞાનિક ડેનિયલ ગોલમેનના પુસ્તક ઈમોશનલ ઈન્ટેલિજન્સ (1995)ના પ્રકાશન પછી બન્યો. પરંતુ આ સંકલ્પના ઘડતરના મૂળ 19મી અને 20મી સદીના સંશોધકોના સંશોધનોના પરિણામોમાં રહેલા છે.

### ❖ સાંવેગિકબુદ્ધિની સંકલ્પના

સંવેગો એ આપણા જીવન તંદુરસ્ત જીવન માટે અનિવાર્ય છે. કોઈપણ ઉદ્દીપન, ઘટના પરિસ્થિતિ કે અન્ય વ્યક્તિની વર્તણૂક પ્રત્યે વ્યક્તિ ચોક્કસ રીતે વિચારે છે. તે જે રીતે વિચારે તે પ્રકારે તે ચોક્કસ પ્રકારના સંવેગો અનુભવે છે. આ સંવેગો મુજબ તેમાં કેટલાક શારીરિક તેમજ માનસિક અથવા આંતરિક કે બાહ્ય ફેરફાર થાય છે. સાંવેગિક બુદ્ધિ એ આ સંવેગોની ઓળખ, નિયંત્રણ અને સંવેગોનો સંબંધોના વિકાસ માટે ઉપયોગ કરવા બાબતની ક્ષમતા છે.

ડેનિયલ ગોલમેન(1998) ગોલમેન આ વ્યાખ્યામાં “સાંવેગિક બુદ્ધિને આપણા પોતાના અને અન્યના સંવેગોને ઓળખવા માટેની, આપણને પ્રેરિત કરવા માટેની અને આપણામાં તથા આપણા સંબંધોમાં સંવેગોને યોગ્ય રીતે નિયંત્રિત કરવા માટેની ક્ષમતા તરીકે વર્ણવે છે. ”

મેથ્યુ અનેઅન્ય(2002)નામતે“સાંવેગિક બુદ્ધિ એ સંવેગોને ઓળખવા માટેની,સંવેગોને વ્યક્ત કરવા માટેની, સંવેગોને સમજવા માટેની તથા પોતાનામાં અને અન્યમાં હકારાત્મક અને નકારાત્મક બંને પ્રકારના સંવેગોનું નિયંત્રણ કરવાની શક્તિ છે. ”

❖ હેતુઓ

- (1) શિક્ષકોની જાતીયતા આધારિતશિક્ષકોની સાંવગિક બુદ્ધિ જાણવી.
- (2) શિક્ષણનાઅનુભવનાઆધારેશિક્ષકોનીસાંવગિક બુદ્ધિ જાણવી.
- (3) શાળાના પ્રકારના આધારે શિક્ષકોની સાંવગિક બુદ્ધિ જાણવી.

❖ અભ્યાસની પદ્ધતિ

પ્રસ્તુત અભ્યાસ માટે સંશોધકે વર્ણનાત્મક સંશોધન પૈકી સર્વેક્ષણ પદ્ધતિ પસંદ કરેલ હતી. અને પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં સર્વેક્ષણ પદ્ધતિનો ઉપયોગ થયો હતો.

❖ વ્યાપવિશ્વ

પ્રસ્તુતઅભ્યાસમાટેનુંવ્યાપવિશ્વ તરીકે ગાંધીધામ શહેરની ગુજરાતી માધ્યમની સરકારી અને ખાનગી પ્રાથમિક શાળાઓ પસંદ કરવામાં આવી હતી.

❖ નમૂનો

પ્રસ્તુત સંશોધનમાં માહિતી એકત્રિત કરવા માટે ગાંધીધામ શહેરની પસંદગી કરવામાં આવી હતી. સહેતુક નમૂના પધ્ધતિથી ગાંધીધામ શહેરને પસંદ કરવામાં આવ્યો હતો. જેમાંથી સ્તરીકૃત રીતે નમૂના પધ્ધતિને આધારે પસંદગી કરવામાં આવી હતી. આમ કુલ 100 જેટલા શિક્ષકોની પસંદગી કરવામાં આવી હતી.

❖ અભ્યાસનાયલો

સારણીનંબર 1

ક્રમ નંબર	ચલનું નામ	ચલનો પ્રકાર	ચલની કક્ષા
1	જાતિયતા	સ્વતંત્ર	➤ શિક્ષક ➤ શિક્ષિકા
2	શિક્ષણનો અનુભવ	સ્વતંત્ર	➤ 10 વર્ષકેતેથીઓછું ➤ 10 વર્ષકેતેથીવધુ
3	શાળાનો પ્રકાર	સ્વતંત્ર	➤ સરકારી ➤ ખાનગી
3	શિક્ષકોએ સાંવેગીક બુદ્ધિ પર મેળવેલા પ્રાપ્તિંક	પરતંત્ર ચલ	➤ સાંવેગીક બુદ્ધિ

❖ ઉપકરણ

વર્તમાન અભ્યાસમાં સંશોધકે માહિતી એકત્ર કરવાના સાધન તરીકેપ્રશ્નાવલીનો ઉપયોગ કર્યો છે. આ પ્રશ્નાવલીદોંગા(1997)એડેનિયલ ગોલમેનને ટાંકતા સાંવેગિક બુદ્ધિના આપેલા ઘટકોને ધ્યાનમાં રાખીને તૈયાર કર્યું હતાં. જેમાં નીચે મુજબના ઘટકોને અનુલક્ષીને વિધાનો મૂકવામાં આવ્યાં હતાં. (1) સ્વજાગૃતિ(2) મનોદશાનું વ્યવસ્થાપન (3) સ્વ-પ્રેરણા (4) આવેશ- નિયંત્રણ(5)લોક કૌશલ્યો. આમ પાંચ ઘટકોને આધારે સાંવેગિક બુદ્ધિ માપદંડની રચના કરવામાં આવી હતી. આ

માપદંડ ત્રિભિંદુ પ્રકારનો તૈયાર કરવામાં આવ્યો હતો; જેમાં સંમત, તટસ્થ, અસંમત એમ ત્રિભિંદુમાં ઉત્તરદાતાઓએ પ્રતિચાર આપવાનો હતો.

#### ❖ ઉત્કલ્પનાઓ

**Ho<sub>1</sub>** પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો અને શિક્ષિકાઓની સાંવેગીક બુદ્ધિમાપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય.

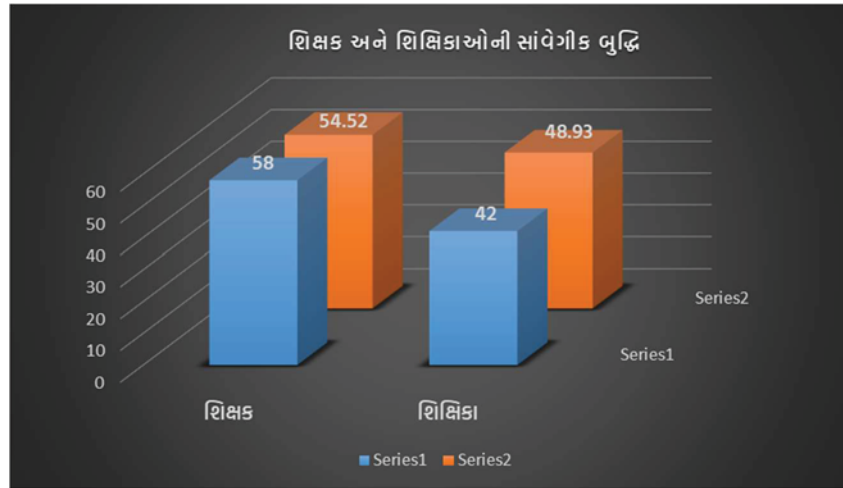
**Ho<sub>2</sub>** 10 વર્ષ કે તેથી ઓછું અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ અને 10 વર્ષ કે તેથી વધુ અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ ધરાવતા પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય.

**Ho<sub>3</sub>** સરકારી અને ખાનગી શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય.

#### સારણી નંબર 2

શિક્ષકો અને શિક્ષિકાઓની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓની સાર્થકતાનો તફાવત દર્શાવતી સારણી

ચલ	સંખ્યા	મધ્યક	પ્રમાણ વિચલન	પ્રમાણભૂલ	t - ગુણોત્તર
શિક્ષક	58	54.52	17.52	2.30	1.29
શિક્ષિકા	42	48.93	23.46		



શિક્ષકો અને શિક્ષિકાઓની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓની સાર્થકતાનો

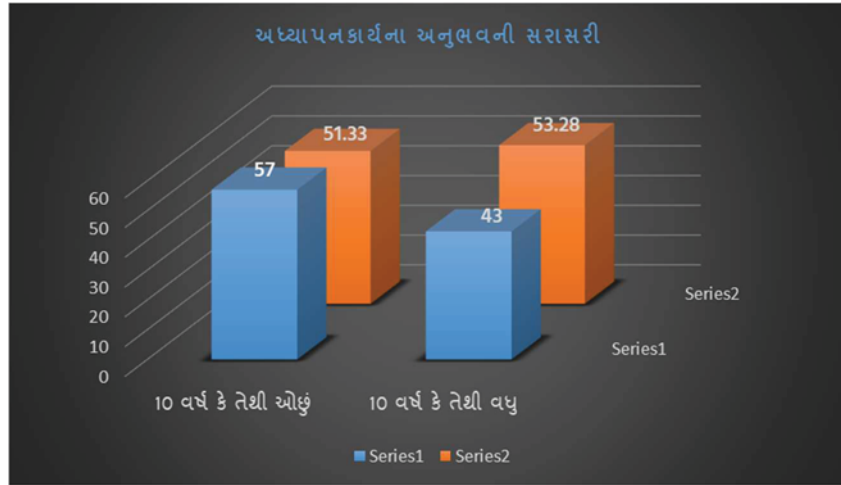
#### આલેખ ક્રમાંક 1

ઉપરોક્ત સારણી 2 અને આલેખ ક્રમાંક 1 નું અવલોકન કરતાં જોવા મળે છે કે શિક્ષક અને શિક્ષિકાના સાંવેગીકબુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશપ્રાપ્તિઓનો મધ્યક 54.52 અને 48.93 મળ્યો છે. જેનું t -મૂલ્ય 1.29 પ્રાપ્ત થયું છે. 0.05 અને 0.01 કક્ષાએ પ્રાપ્ત t મૂલ્ય સારણિયન મૂલ્ય કરતાં ઓછું છે. આથી શૂન્ય ઉત્કલ્પના પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકો અને શિક્ષિકાઓની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય નો અસ્વીકાર થતો નથી. આથી કહી શકાય કે શિક્ષક તથા શિક્ષિકાઓની સાંવેગીક બુદ્ધિ સમાન છે.

સારણી નંબર 3

10 વર્ષ કે તેથી ઓછું અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ અને 10 વર્ષ કે તેથી વધુ અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ ધરાવતા પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓની સાર્થકતાનો તફાવત દર્શાવતી સારણી

અનુભવ	સંખ્યા	મધ્યક	પ્રમાણ વિચલન	પ્રમાણભૂલ	t - ગુણોત્તર
10 વર્ષ કે તેથી ઓછું	57	51. 33	19. 11	2. 53	0. 45
10 વર્ષ કે તેથી વધુ	43	53. 28	21. 98		



10 વર્ષ કે તેથી ઓછું અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ અને 10 વર્ષ કે તેથી વધુ અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ ધરાવતા પ્રાથમિક

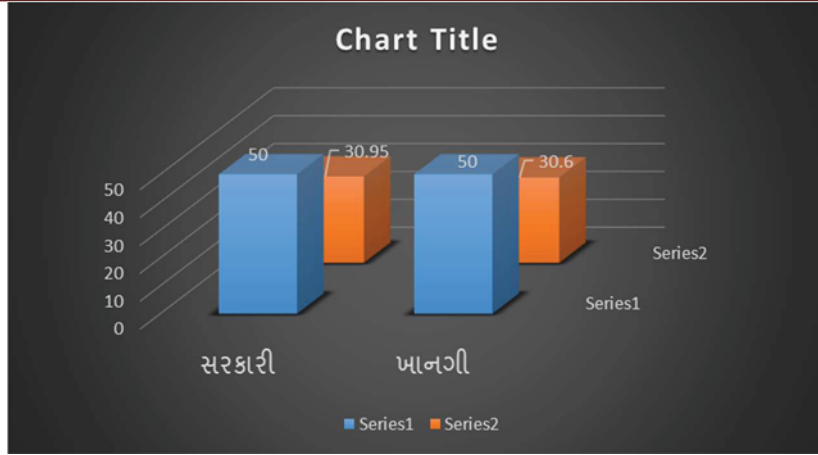
શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓની સાર્થકતાનો આલેખ ક્રમાંક 2

ઉપરોક્ત સારણી 2 અને આલેખ ક્રમાંક 2 નું અવલોકન કરતાં જોવા મળે છે કે શિક્ષક અને શિક્ષિકાની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓનો મધ્યક 51. 33 અને 53. 28 મળ્યો છે. જેનું t -મૂલ્ય 0. 45 પ્રાપ્ત થયું છે. 0. 05 અને 0. 01 કક્ષાએ પ્રાપ્ત t મૂલ્ય સારણિયન મૂલ્ય કરતાં ઓછું છે. આથી શૂન્ય ઉત્કલ્પના 10 વર્ષ કે તેથી ઓછું અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ અને 10 વર્ષ કે તેથી વધુ અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ ધરાવતા પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય. નો અસ્વીકાર થતો નથી. આથી કહી શકાય કે 10 વર્ષ કે તેથી ઓછું અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ અને 10 વર્ષ કે તેથી વધુ અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ ધરાવતા પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિસમાન છે.

સારણી નંબર 4

સરકારી અને ખાનગી શાળાના શિક્ષકોની સામવેદિક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓની સાર્થકતાનો તફાવત દર્શાવતી સારણી

શાળાનો પ્રકાર	સંખ્યા	મધ્યક	પ્રમાણ વિચલન	પ્રમાણભૂલ	t - ગુણોત્તર
સરકારી	50	30. 95	2. 10	0. 35	0. 72
ખાનગી	50	30. 6	2. 70		



સરકારી અને ખાનગીપ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓ પ્રાપ્તિઓની

### સાર્થકતાનોઆલેખ ક્રમાંક 3

ઉપરોક્ત સારણીનંબર 4 અને આલેખ ક્રમાંક 3નું અવલોકન કરતાં જોવા મળે છે કે શિક્ષક અને શિક્ષિકાના સાંવેગીક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓનો મધ્યક 30. 95 અને 30. 6 મળ્યો છે. જેનું t-મૂલ્ય 0. 72 પ્રાપ્ત થયું છે. 0. 05 અને 0. 01 કક્ષાએ પ્રાપ્ત t- મૂલ્ય સારણિયન મૂલ્ય કરતાં ઓછું છે. આથી શૂન્ય ઉત્કલ્પના સરકારી અને ખાનગી શાળાના શિક્ષકોની સામવેદિક બુદ્ધિ માપદંડ પરના સરેરાશ પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય નો અસ્વીકાર થતો નથી. આથી કહી શકાય કે સરકારી શાળાના શિક્ષક તથાખાનગીશાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિ સમાન છે.

#### ❖ તારણો

- પ્રાથમિકશાળાનાશિક્ષકોઅનેશિક્ષિકાઓનીસાંવેગીકબુદ્ધિસમાન છે.
- 10 વર્ષ કે તેથી ઓછું અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ અને 10 વર્ષ કે તેથી વધુ અધ્યાપન કાર્યનો અનુભવ ધરાવતા પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિસમાન છે.
- સરકારી અને ખાનગી પ્રાથમિક શાળાના શિક્ષકોની સાંવેગીક બુદ્ધિસમાન છે.

#### ❖ સંદર્ભ સૂચિ

- Goleman Danil(1998)Working With Emotional Intelligence. New York:BantamBook.
- Matthews, G. , M. Zeidner& R. Roberts. (2002). Emotional intelligence: Science and myth. London : The MIT Press
- ઉચાટ, ડી. એ. (2009). શિક્ષણ અને સામાજિક વિજ્ઞાનોમાં સંશોધનનું પદ્ધતિશાસ્ત્ર. રાજકોટ: સાહિત્ય મુદ્રણાલય
- ઉચાટ, ડી. એ. શિક્ષણ અને સામાજિક વિજ્ઞાનોમાં સંશોધનનું પદ્ધતિશાસ્ત્ર (દ્વિતીય આવૃત્તિ). રાજકોટ: પારસ પ્રકાશન
- દેસાઈ, કે. જી. અને આર. પી. શાહ અને અન્ય (1992). શૈક્ષણિક પરિભાષા અને વિભાવના. ગાંધીધામ: યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ
- દોંગા, એન. એસ. (1995). અધ્યાપન મનોવિજ્ઞાન રાજકોટ:નિજિજન સાયકો સેન્ટર
- પટેલ, આર. એસ. (2012). સંશોધનની પાયાની સંકલ્પનાઓ (દ્વિતીયઆવૃત્તિ) અમદાવાદ: જય પબ્લિકેશન
- પારેખ, બી. યુ. (1994). શિક્ષણમાં આંકડાશાસ્ત્ર. અમદાવાદ: યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ

## સ્વ-નિર્ભર ભારત માટે મહિલાઓનું સશક્તિકરણ: સામાજિક-રાજકીય વિકાસ પહેલમાં સક્રિય ભાગીદારીને પ્રોત્સાહન

Namrataben Laxmanbhai Detroja  
Research Scholar,  
Surendranagar University, Wadhwan

### • પ્રસ્તાવના

ભારતીય સમાજમાં મહિલાઓની આદર્શતાનો એટલા ઉચ્ચ સ્તરે પ્રતિબિંબિત કરવામાં આવેલ છે કે જેનાથી એક વિચિત્ર વિરોધાભાસ ઊભો થાય છે. કૌટુંબિક અને સાર્વત્રિક જીવનમાં બહેનોનું સ્થાન શું હોઈ શકે ? આવો પ્રશ્ન જ મોટા ભાગે અસ્થાને ગણવામાં આવે છે. કેમકે પરંપરાગત વ્યવસ્થામાં એક તરફ ‘સ્વ-કેન્દ્રિત અભિગમ’ તો બીજી તરફ ‘સ્વ-ત્યાગ’ નો અભિગમ બંને પૈકી ‘ત્યાગના મહિમા’ ને નારી જીવન સાથે સંવેદનશીલતાથી જોડવામાં આવેલ છે. શ્રીમતી બાસુએ મહિલાઓની મિલકત અધિકારના સંદર્ભમાં તેમના એક ગ્રંથમાં સહજપણે સ્પષ્ટ રીતે નોંધેલું છે કે ભારતીય સમાજમાં શિક્ષિત-અર્ધશિક્ષિત મહિલાઓ પૈકી મોટાભાગની મહિલાઓ નૈતિક મૂલ્યોથી બદ્ધ છે. સામાજિક જાગૃતિની વાહક છે. રાજકીય વલણોથી પરિચિત છે. પરંતુ મુખ્યત્વે કરીને ‘પિતૃસમાજ કૌટુંબિક માળખામાં’ ઉછેર થયો હોવાને કારણે ભારતની મહિલાઓ કુટુંબ તરફની લાગણી અને વફાદારીનો વિચાર કરીને ટૂંકાગાળાના ધોરણોને અગ્રતા આપવા માટે લાંબાગાળાના ભૌતિક સ્વાર્થને જતો કરે છે.

મૂળભૂત રીતે ભારતીય સમાજમાં મહિલા અધિકારીતાના પ્રશ્નને કાનૂન અને ભાવનાપૂર્ણ સામાજિક વ્યવસ્થાના દ્વંદ્વાત્મક સંઘર્ષ તરીકે જોવામાં આવે છે. જેમ-જેમ ભારતીય સમાજમાં લોકશાહી પરિવારનું ચલણ વધતુ ગયું તેમ-તેમ શિક્ષણના પ્રચારથી વૈચારિક જાગૃતિના બીજ રોપાયા આ બીજાકુંડનો એક ભાગ સહજ રીતે બહેનોના માનસમાં તેમના હકક માટેની ભાવના પ્રદિપ્ત કરે છે. તો એ જ ભારતીય સમાજમાં નિરંતર રીતે શિક્ષણધર્મી સંસ્કૃતિ વગેરે દ્વારા બહેનોના ત્યાગપૂર્ણ કર્તવ્ય અને ભાવનાયુક્ત જીવનમાં બહેનોને સહજ રીતે કુટુંબ વત્સલ બનાવીને સમાજ મિલકતથી દૂર રાખવા પ્રેરે છે.

### • મહિલા સશક્તિકરણ

આધુનિક નારીનાં અંતરનો આ અવાજ છે. આજનો યુગ નવનિર્માણ યુગ છે. જે નારીના સહયોગ વિના શક્ય નથી. છીપના બંધનમાંથી મોતીનું બહાર આવવું એ કુદરતી છે. તેવી જ રીતે સ્ત્રીમાં રહેલી અમાપ શક્તિને એ જાહેર જીવનમાં લાવે એ સહજ છે.

‘સ્ત્રી સશક્તિકરણ’ શબ્દ આજકાલ દરેક જગ્યાએ ચર્ચાતો હોઈ મહિલા કલ્યાણ કે મહિલા ઉત્કર્ષ જેવા શબ્દને સ્થાને મહિલા સશક્તિકરણ ને મહત્વ મળતું જાય છે. અહીં સવાલ એ છે કે સ્ત્રીઓનું સશક્તિકરણ કરવા માટે વૈચારિક રીતે આપણી પાસે એવું ક્યું ભાથુ છે કે જે નવી પેઢીને આપી શકાય. આ વાત એટલા માટે કહેવી પડે છે કે સ્ત્રીને સશક્ત કરવાની જરૂર નથી અને સશક્ત છે જ પરંતુ સમાજની માનસિકતા બદલવાની જરૂર છે. આજે આપણે જોઈ શકીએ છીએ કે જીવનનું કોઈપણ ક્ષેત્ર એવું નથી જ્યાં સ્ત્રી સફળ ન થઈ હોય.

‘મહિલા સશક્તિકરણ એટલે સ્ત્રીઓનું આત્મસન્માન, આત્મ નિર્ભરતા અને આત્મવિશ્વાસનું સ્તર ઉન્નત બનાવતા પ્રયાસો’

‘સમાજ કે વ્યક્તિ પોતાની કામગીરીથી બહારની દિશામાં જવાબદાર અને તેને પ્રાપ્ત કરવા માટે પ્રયત્નશીલ બને તેને સશક્તિકરણ કહે છે.’

ભારતમાં 2001ના વર્ષને ‘મહિલા સશક્તિકરણ વર્ષ’ તરીકે જાહેર કરવામાં આવ્યું હતું.

સશક્તીકરણ વિશ્વાસ અને ક્ષમતા તરીકે પણ રજૂ કરી શકાય છે. અને તેના દ્વારા જ સમાજમાં અસરકારક રીતે કાર્ય કરી શકાય છે. મહિલા સશક્તિકરણનું મુખ્ય ધ્યેય મહિલાઓને સંપૂર્ણ રીતે રાજકીય અને સામાજિક નિર્ણય લેવાની પ્રક્રિયામાં સ્થાનિક, પ્રાદેશિક અને રાષ્ટ્રીય સ્તર પર તૈયાર કરવી તે છે.

મહિલાઓ માટે રાજકીય કે કુટુંબક્ષેત્રમાં સશક્તિકરણનો દ્રષ્ટિકોણ જેટલો સરળ લાગે છે. તેટલો સરળ હોતો નથી. પરંતુ મહિલા સશક્તિકરણ માટે આજે કાયદા, નીતિઓ અને આનુષંગિક ટેકનોલોજી તેમને આ સક્ષમતા પૂરી પાડવા માટે બધી જ સગવડોનું વાતાવરણ પુરૂ પાડે છે. આજે ગ્રામીણ ક્ષેત્રોમાં પણ માહિતી સંચાર ટેકનોલોજી અસરકારકરીતે આ વાતાવરણ પુરૂ પાડવા માટે સરકાર, અર્ધસરકારી કે સ્વૈચ્છિક સંસ્થાઓના નેટવર્ક દ્વારા સક્ષમ બન્યું છે.

વિશ્વબેંક 2001 ના અહેવાલ મુજબ ભારતમાં મહિલાઓની ભૂમિકા એક જટિલ સમસ્યા છે. મહિલા સશક્તિકરણમાં ઘણી બધી બાબતોને સામેલ કરી શકાય, જેમ કે ધંધાકીય તક, સામાજિક સમાનતા અને વ્યક્તિગત હક્કો વગેરેમાં મહિલાઓ તેમના માનવ અધિકારોથી વંચિત રહે છે. તે પણ તેમની પરંપરાઓને આભારી છે. ગ્રામીણ વિસ્તારોમાં મહિલાઓને એક સશક્ત અને આર્થિક નિયોજનના સાધન તરીકે જોવામાં આવતી નથી. તે ફક્ત ધરકામ અને સસ્તી મજૂરી પૂરતાં મર્યાદિત રહે છે. જ્યાં સુધી તેમને સારું કામ અને આવક માટેની તકો ન મળે ત્યાં સુધી તેમનો અવાજ બંધ રહે છે.

‘ગ્રામીણ ભારતમાં મહિલાઓના વિકાસ માટે આર્થિક આઝાદી બહુ અગત્યની છે.’

વિશ્વબેંકે સામાજિક વિકાસ કાર્યક્રમોમાં મહિલા સશક્તિકરણને ચાવીરૂપ માનવાનું સૂચન કર્યું છે. ભારત જેવા વધુ વસ્તી ધરાવતા વિકાસશીલ દેશોમાં સંપોષિત વિકાસની દ્રષ્ટિએ મહિલાઓ માટે શિક્ષણની સાથે ટેકનોલોજીની ખૂબ જ જરૂરિયાત છે. વૈશ્વિક માહિતી દ્વારા સમાજના વિકાસમાં સ્થાનાંતરિત જુથો, વિશેષ કરીને મહિલાઓના વિકાસ માટે માહિતી ટેકનોલોજીને પ્રોત્સાહન આપવામાં આવ્યું છે. જ્યારે આઈસીટી જાતિયસમાનતા માટે એકલી કંઈ કરી શકે નહીં. પણ તે સામાજિક પરિવર્તનો લાવવામાં અને જૂથોને સુદૃઢ બનાવવા માટે તેની ભૂમિકા ખૂબ જ અગત્યની સાબિત થઈ શકે તેમ છે. આઈસીટીના ઉપયોગ માં મહિલાઓની ભાગીદારી એક કર્મચારી, મજૂર, ઉદ્યોગ સાહસિક, વ્યવસ્થાપક અને નીતિનિયામકના સ્વરૂપે જોવા મળી શકે તેમ છે.

ગાંધીજીના શબ્દોમાં આપણી સ્ત્રીઓ કદી અબળા નહોતી અને નથી. સ્ત્રીને અબળા કહેવી એ એની બદનક્ષી છે. સ્વાતંત્ર્યની લડતમાં કેટલીય સ્ત્રીઓએ ભોગ આપ્યો પરંતુ આઝાદીની લડતમાં શહીદી વહોરનાર કે કઠોર કારાવાસ ભોગવનારાઓમાં ક્યારેય આપણે ક્રાંતિકારી યુવતિઓને યાદ કરીએ છીએ? ના નથી જ કરતા, જેઓ આ આઝાદીની લડતમાં હસતા મોં એ સજા સ્વીકારી હતી. 18 ડિસે. 1939 શાંતિસુદા ઘોષ અને સુનીતા ચૌધરીનવમા ધોરણની કુમળીવયની યુવતિઓએ સ્ટીવેન્સના બંગલે જઈ શાળાની ચર્ચા કરવી છે તેમ કહી તેને બહાર બોલાવ્યો અને ગાર્ડસ બહાર આવે તે પહેલા રિવોલ્વરથી તેને ગોળી મારી દીધી. આ બંનેને આજીવન કારાવાસની સજા થઈ પ્રથમ મહિલા ક્રાંતિકારી હોવાનું ગૌરવ 21 વર્ષની પ્રીતિલતાને ફાળે જાય છે. જેણે 24 સપ્ટેમ્બર, 1932ના રોજ પોતાના સાથીઓ સાથે મળી અંગ્રેજોની રંગીન મહેફિલમાં જબરજસ્ત બોમ્બ વિસ્ફોટ કર્યા હતા. મેડમ કામાએ 1907માં સ્ટુટગાર્ડમાં આંતરરાષ્ટ્રીય સમાજવાદી સંમેલનમાં રાષ્ટ્રીય ધ્વજ ફરકાવ્યો અને ત્યારથી તેઓ ‘ક્રાંતિ પ્રસૂતા’ તરીકે ઓળખાયા. આવી તો અનેક સ્ત્રીઓએ પોતાની શક્તિનો પરચો આઝાદી સમયે પણ દર્શાવ્યો હતો. પરંતુ આપણે માત્ર પુરૂષોની શહીદીને જ યાદ કરી સ્વાતંત્ર્યદિનની ઉજવણી કરીએ છીએ. સ્ત્રીઓને યાદ કરતા નથી એ કડૂશતા નથી?

સ્ત્રીઓની ધાર્મિક, સામાજિક અને રાષ્ટ્રીય સેવાથી તો ઇતિહાસ પણ ધબકે છે. અનસૂયા, ગાર્ગી, અહલ્યા, સીતા, મૈત્રેયી, દમયંતી, તારામતી બધી જ નારીઓ ક્યારેય પાછળ રહી નથી. છતાંય પરિવારને પણ સંભાળેલો. સ્વ. ઈન્દિરા ગાંધી પંદર વર્ષ સુધી ભારતના વડાપ્રધાન પદે ટકી રહેલા. તમિલનાડુમાં જયલલિતા, બિહારમાં રાબડીદેવી, ઉત્તરમાં માયાવતી, મધ્યમાં ઉમાભારતી, રાજસ્થાનમાં વસુંધરા રાજે અને દિલ્હીમાં શીલા દિક્ષિત એક સાથે પાંચ મહિલા પ્રધાન રહી ચૂકી હતી. પ્રતિભા પાટીલ જે આપણા પ્રથમ મહિલા રાષ્ટ્રપતિ છે. આપણા માટે ગૌરવની વાતે એ છે કે ચાંદ પર જવામાં પણ સ્ત્રીઓ પાછળ નથી.



ભારતની કલ્પના ચાવલા કે સુનિતા વિલિયમ્સની સાહસિકતા ક્યાં આપણાથી અજાણી છે. સ્ત્રીમાં અમાપ શક્તિ છે. આ શક્તિ તે વિકસાવે છે દરેક ક્ષેત્રમાં સ્ત્રીઓ વિકાસ પંથે આગેકૂચ કરી રહી છે. અને સિતારા સમાન ચમકી રહી છે. ફક્ત ભારતમાં જ એટલા નારીરત્નો છે કે જેના ફક્ત નામ જ લખીએ તો એક લેખ બની જાય. આજની નારી એ અન્યાય, અત્યાચાર, અજ્ઞાન, અસમાનતા, અપમાન અને અનીતિની સઘળી જંજીરો તોડી નાખી છે. કવિએ કહ્યું છે કે,

*નારીના હોય તો સંસાર હોય ના, જગતમાં લાગણી હેત અને પ્યાર હોય ના,  
ઓ માનવી, તારી શી છે હસ્તી? નારી વિના આ દુનિયા એક નિર્જન વસ્તી.*

મહિલા સશક્તિકરણ કેવી રીતે થાય તે નવેસરથી કહેવું હોય તો કહીએ કે શાસ્ત્રવચનોને સમાજે વિસારે પાડવાં. સ્ત્રીને શિક્ષણ આપવું. તેને દાસી મટીને વ્યક્તિત્વ સંમાર્જન કરવા જાગૃત કરવી. તેની સામે થતા અન્યાયનો વિરોધ કરવા સંગઠિત કરવી. સમાજના મોભીઓએ સ્ત્રીનાં ખંડદર્શન છોડીને તેના વ્યક્તિત્વનો વિચાર કરીને માનવી તરીકે તેને પુરૂષ સમાન સ્થાપવામાં અગ્રેસર થવું. આ સિવાય ઘણું હોઈ શકે. પણ આરંભ આટલાથી થાય તો ઘણું!

● મહિલા સશક્તિકરણ અંગેના વિચારો

સતી સાવિત્રી સીતા અને દમયંતીને સદ્ગુણના પ્રતિક અને પર્યાય તરીકે જોવા અને વર્ણવવાના સઘન અને સતત પ્રયાસો થયા છે. તો શિક્ષણની વિભાવનાથી જેમનાં માનસમાં હક્ક અને હિસ્સાની ભાવના પ્રબળ બની છે તેવા વર્ગમાં આ જ પાત્રોને ભારતના પિતૃપ્રધાન, પિતૃસમાજ કુટુંબ પરંપરામાં ‘સોહામણા શોષણયુક્ત’ પાત્રો તરીકે ઓળખવાનો પણ પ્રયત્ન થયો છે. અલબત્ત એક તબક્કે આવો વર્ગ પ્રમાણમાં અલ્પસંખ્યક હતો. પરંતુ હળવે-હળવે આ માનસિકતા, સમજ અને માન્યતાને અનુમોદન આપતો વર્ગ વધતો રહ્યો છે.

આપણી સામાન્ય સમજ એવી છે કે સ્વાતંત્ર્ય પછી જ ખાસ કરીને શિક્ષણના પ્રચાર, પ્રસાર પછી જ મહિલાઓના ભૌતિક સ્થાન અને દરજ્જા અંગેની ભાવના પ્રબળ બની છે. અને તે કારણે જ તેને માન્યતા મળી છે. પરંતુ વાસ્તવિકતા એ નથી. મહિલાઓના અધિકાર ખાસ કરીને મહિલાઓના મલ્કિતના અધિકાર અંગેનો વિવાદ પણ ઐતિહાસિક મૂળ ધરાવે છે.

ભારત દેશમાં બંગાળ એક એવો પ્રાંત રહ્યો છે જેમાં સંસ્કૃત, ઈતિહાસ અને કળા માટેનો આદરભાવ અને જાગૃતિ વિશેષ જોવા મળે છે. ભારતીય સમાજમાં બહેનોના સ્વાર્પણ, ત્યાગ અને અધિકારિતાના સંઘર્ષ અને વિવાદને પણ બંગાળમાંથી જ મહત્તમ સમર્થન મળેલું છે.

સ્વતંત્રતા પૂર્વેના ભારતના તત્કાલીન બંગાળના પ્રાંતમાં બે વિશિષ્ટ નારી રત્નો થયા જેમના વચ્ચે ત્યાગ અને અધિકારીતાના મુદ્દે ઘણો જ પ્રબળ વિવાદ જાહેરમાં થયેલો હોય તેવા ઉલ્લેખો મળે છે. અનુરૂપા દેવી (ઈ.સ. 1882 થી 1958) અને સરલા બાળા સરકાર (ઈ.સ. 1857 થી 1961) વચ્ચે 1954માં કલકત્તાથી પ્રસિદ્ધ ‘આનંદ બજાર પત્રીકા’ માં હિંદુ કોડ બીલના અનુસંધાને આ વિવાદને વાચા આપવામાં આવી હતી.

અનુરૂપ દેવીનો અભિપ્રાય એવો હતો કે પુરૂષો જ કુળના મુખ્ય ધારકો અને રથિકો છે, બહેનો સમયાંતરે એક કુળ છોડીને બીજું કુળ સ્વીકારે છે. માટે ઈચ્છનીય એ છે કે સંયમીની સુરક્ષાનો અધિકાર પુરૂષોનો જ હોય આ ઉપરાંત તેઓએ એવો તર્ક પણ રજૂ કર્યો હતો કે ‘સામાજિક માળખામાં મિલ્કતોના પ્રશ્ને ભાઈઓમાં જ ભાગલા પડતા હોય છે. તેમાં જો બહેનોને પણ હિસ્સેદાર ગણવામાં આવશે તો આ ‘ભાગલા’ની તીવ્રતા વધશે. વળી, મિલ્કતોના સંચાલન માટે આપણી પરંપરામાં બહેનોનું ઘડતર નથી, ઉછેર નથી. તાલીમ નથી. તેમાં પણ મિલ્કતની જાળવણી એ પુરૂષોનો જ વિષય છે. અને તેમ બની રહે તે વ્યાજબી છે.

તેના પ્રતિવાદમાં સરલાબાળા સરકારે ઉગ્ર રજૂઆત કરી હતી. તેઓનું માનવું એમ હતું કે એ મહિલાઓને આર્થિક કે મિલ્કત સ્વરૂપના અધિકારથી વંચિત રાખવામાં આવે છે કે નહીં તેવી બહેનોમાં જાણ્યે અજાણ્યે ‘ગુલામી’ ની માનસિકતા નિર્માણ થયેલી છે. તેઓના મતે આવા અધિકારોથી વંચિત બહેનો ‘ઓશીયાળા’ બને છે. એક પ્રકારની નાનપ અનુભવે છે. અને જો આવા અધિકાર આપવામાં નહિ આવે તો મિલ્કત સંચાલનના શિક્ષણ તાલીમથી બહેનો હંમેશા વંચિત રહેશે. કેટલાક કુટુંબોમાં

મહિલાઓને હિસ્સો મળવા છતાં મૂળભૂત પરંપરાના કારણે તેઓ તે હિસ્સાને માસિક ભથ્થુ સમજીને જ રહ્યા તેના નક્કર વિધાયકવિનિયોગ અંગે તેઓ હંમેશા અલિપ્ત રહ્યાં છે. જો તેમને આ પ્રકારના અધિકારથી સુસજ્જ કરવામાં આવે તો જ તેમનામાં આ સંબંધી જવાબદારી ઉમેરાશે.

આમ, સરલાદેવી સરકારે આજથી 50 વર્ષ અગાઉ તેમની જાતને ઉદારમતવાદી નાગરિક, અધિકારીતાના સમર્થક તરીકે ઘોષિત કરી પ્રતિબિંબિત કરી તેમના અનુસંધાને સુધાયકવર્ત્તિએ ઈ.સ. 1933માં રાજારામમોહનરાય શતાબ્દી વ્યાખ્યાનમાળામાં પણ સ્પષ્ટ રીતે જણાવેલું હતું કે રાજા રામમોહનરાયે પણ તે કાળમાં સ્ત્રીઓનાં મિલકત ઉપરના અધિકારને સમર્થન આપ્યું હતું. બહેનોનાં પ્રાકૃતિક ક્ષમતાના અધિકારનું જો સહજ અને સ્વસ્થ વિસ્તરણ કરવું હોય તો વારસાઈ હક્કને મહત્વ આપવું જોઈએ કે જે કુલ ક્ષમતામાં મહત્વની ભૂમિકા ભજવે છે.

આમ, બંને મહિલાઓએ સમાજમાં એકંદર મહિલાઓના થતા રહેલા શોષણથી મુક્ત કરવા માટે શાસનના હસ્તક્ષેપ થકી કાનૂની માળખાકીય પદ્ધતિ દ્વારા જાગૃતિ અને ન્યાય માટેના પ્રયત્નો કર્યા હતા. આ તબક્કામાં અલબત્ત અનુરૂપાદેવીએ સતત તર્કબદ્ધ રીતે પરંપરાગત માન્યતાને અનુમોદન આપતા તેમના વિચારો સ્પષ્ટ રીતે રજૂ કરતાં રહેલા હતા.

બીજા તરફ એન્ટોની બર્ટન અને મૃણાલીની શરણના વિધાનો પણ સ્પષ્ટ માન્યતા ધરાવતા હતા કે વીસમી સદીના પ્રારંભથી શૈક્ષણિક જાગૃતિના પરિપાકરૂપે બહેનો તેમની શોષિત માનસિકતાથી મુક્ત રહી અધિકારીતા કેળવવા વિશેષ સાવધાન બનતા હોય તેમ જોવા મળતું હતું.

#### • વૈશ્વિકીકરણના સંદર્ભમાં સશક્તિકરણ એક અધ્યયન

વૈશ્વિકીકરણનો વાયરો જે ઝડપથી ફેલાતો રહ્યો છે અને સમાજ જેમ-જેમ આ વાયરાથી ગ્રસ્ત થતો જાય છે. તેમ-તેમ સહુને લાગે છે કે હવે મહિલા ઉન્નતિનો કાળ આવી ગયો છે. એક તબક્કે વિશ્વ સાહિત્યમાં મહિલાઓ પડદાં પાછળ ઢંકાઈ ગઈ હતી. અશ્વ બની ગઈ હતી જે આજે સમાજના રંગમંચ ઉપર સ્પષ્ટ રીતે દેખા દે છે અને તેથી તે અર્થમાં મહિલાઓના મહત્વનો સર્વત્ર સ્વીકાર થયો છે. વિશ્વબેંકનો કોઈ અહેવાલ હોય કે માનવ વિકાસ અહેવાલ હોય નારીત્વને સ્પર્શતા પાસાઓ અને પ્રશ્નોનો ઉલ્લેખ હવે સ્પષ્ટ પણેજોવા મળે છે. મહિલાઓ અંગેના સમકાલિન સૈધ્ધાંતિક પ્રશ્નોના સંદર્ભમાં એક ટિપ્પણી કરતા ચાર્લ્સ અને નિરંજના જેવી વિદુષી લેખિકાઓ એમ જણાવે છે કે (1994) આકસ્મિક રીતે પણ હવે મહિલાઓ સર્વત્ર દૃશ્યમાન છે. જાહેર જીવનના વિવિધ સ્વરૂપોમાં અને વિવિધ તબક્કે મહિલાઓ આજે પ્રકાશ પાથરી રહી છે. આ ઘટનાચક્રોથી અભિભૂત થઈને સહુ કોઈ એમ સમજે છે અને સ્વીકારે છે કે મહિલાઓ સ્વતંત્ર થઈ છે. પરંતુ આ પ્રશ્નનો જવાબ આપણી પાસે નથી.

વૈશ્વિક સ્તરે રાજકીય અર્થતંત્રમાં અને તેના દ્વારા એકંદર સમાજ જીવનમાં મહિલાઓને સ્પર્શતા પ્રશ્નો અને તે માટેના અભિગમને લગતા અભ્યાસો ઈ.સ. 1980 થી 90 ના દાયકામાં વિશદ તરીકે થયેલ જોવા મળે છે. નારી શક્તિનું ઉત્પાદકીય પ્રદાન શું છે. કઈ રીતે તેને મુલવી શકાય તે અંગેના વિશેષ અભ્યાસો થયેલ જોવા મળે છે. સીંધ કેલીઝ વીટાનેન (1987) દ્વારા એશિયાઈ રાષ્ટ્રોમાં મહિલા અને ઘર એકમોને લગતા શ્રેણીબદ્ધ અભ્યાસો થયા જેમાં ઘર અને ઘર બહાર સમાજ જીવનમાં ઉત્પાદન અને પુનરોત્પાદન સંદર્ભે નારી ભૂમિકાને ધ્યાનમાં લઈને ‘ઘર-એકમમાં મહિલાઓની ભૂમિકા વિશેષ કેન્દ્રિત બનેલ છે.

જુદાં-જુદાં દેશોમાં આર્થિક સંદર્ભમાં માળખાકીય સમતુલાના જે કાર્યક્રમો અમલમાં આવેલ છે તેની અસરો ક્રમશઃ મહિલાઓના દરજ્જા અને ભૂમિકા પર જોવા મળે છે. આ સંદર્ભમાં વિકાસને લગતા પ્રશ્નો સાથે નારી જીવનને જોડતા ઘણા અભ્યાસો થયા જેના કારણે મહિલા સશક્તિકરણના વિવિધ આયામોનો વિશ્વને ખ્યાલ આવ્યો છે. અને તઅનુરૂપ કાર્યક્રમો માટેનો માર્ગ મોકળો થયેલો છે. માનવ જીવન માટે લઘુમય જરૂરિયાતોના અભિગમને સાંકળી લેતા વૃદ્ધિના મોડેલમાં નારીત્વને જ પડકાર છે તેનો અભ્યાસ ખૂબ જ ઉડાણથી નુસાબુમ (1999) દ્વારા કરવામાં આવેલો છે. વિવિધ પદ્ધતિઓ પૈકી મૂડીવાદી અભિગમના વિરોધમાં જે કઈ સાહિત્ય ઉપલબ્ધ છે. તેમા પણ ‘નારીત્વ’ ની ભૂમિકાને સ્પર્શતા પ્રશ્નોને વિરોધી અભિગમમાં મહત્વનું સ્થાન આપવામાં આવેલ છે. મહિલાઓ અને પર્યાવરણને સાંકળીને પણ તાજેતરના દોઢ દાયકાના અભ્યાસોએ વિશ્વનું ધ્યાન કેન્દ્રિત કર્યું છે. જયોતિધોષ દ્વારા 1994 અને 2002માં જે અભ્યાસો કરવામાં આવેલા છે તેમાં વિશેષ કરીને ભારતીય સમાજમાં નારીશક્તિના

એકંદર શોષણ અને શ્રમબજારમાં વૈશ્વિકરણના મહોલમાં ઘર અને ઘર બહાર જે પદ્ધતિથી પ્રત્યક્ષ અને પરોક્ષ બંને રીતે શોષણ થાય છે તેનો ચિતાર આપવામાં આવેલો છે. એલ્સન, મોશ્ટ (1989), અફશર અને ડેનીસ (1991), દેશમુખ અને રણર્ટીબે (2000) દ્વારા જે અભ્યાસો હાથ ધરવામાં આવેલા છે. તેમાં વિશ્વ સમસ્તમાં એશીયાઈ દેશોમાં છેલ્લા દોઢ દાયકામાં ભારતમાં શાસન કરવામાં વિકાસલક્ષી અને કલ્યાણલક્ષી ખર્ચની નીતિમાં થયેલા ફેરફારોમાં જે કાપ મૂકવામાં આવેલો છે તેની વાસ્તવિક અસરો ઘર બહારના કામ, કામના કલાકો, કામને થયેલી અગ્રતાને કારણે વિકાસથી દૂર રહેવું. અપૂરતા પોષણમાં વૃદ્ધિ સ્વરૂપે જોવામાં આવેલ છે.

શિક્ષણના વધેલા પ્રસાર અને ભૂખને કારણે વ્યવસાયિક કારકિર્દી માટેની ભૂખ બહેનોમાં વધતી જાય છે. પરિણામે કેવળ ગૃહિણીની ભૂમિકા તેને રૂચતી નથી અને આવી વૃત્તિવાળા બહેનોની સંખ્યા વધતી જાય છે. ખાસ કરીને આ વૃત્તિની માંગ અને સ્વરૂપ ઝડપથી વધે છે. બદલે છે તેના કારણે શ્રમસાધનના મૂલ્યના ભાગરૂપે બહેનો પણ સ્થળાંતર ઈચ્છે છે. ઈલેક્ટ્રોનિક્સ અને કોમ્પ્યુટર ક્ષેત્રે બહેનોએ ભારતની ધરતી છોડીને પરદેશમાં ખાસ કરીને સિલિકોન વેલીમાં જે પ્રભુત્વ પ્રસ્થાપિત કરેલ છે. તે અંગેના ખાસ અભ્યાસો થયા છે. આ સમગ્ર પ્રક્રિયા બાહ્ય રીતે જોઈએ તો ભૌતિક સ્વરૂપની વિકાસનુમ્ન પ્રક્રિયા છે. આની સીધી અસર સુક્ષ્મ સ્વરૂપે બહેનોના વ્યક્તિત્વ ઘડતરની પ્રક્રિયા ઉપર થઈ છે. અને તે સંદર્ભે ભૌતિક દરજ્જામાં થયેલ વૃદ્ધિના કારણે સામાજિક સમતુલામાં ઊભા થયેલા વિક્ષેપો પણ મહિલા સશક્તિકરણની દિશાના પ્રયત્નો માટે એક પડકાર છે. ખાસ કરીને એશિયાઈ દેશો ભારત જેવા દેશમાં કે જ્યાં સામાજિક સંસ્થાઓ, લગ્ન, કુટુંબ અને બાળ ઉછેરના વિચારને હજુ મહત્વ છે અને જેને ‘નારી વિકાસ’ ના ભાગરૂપે ગણવામાં આવે છે તેવા સમાજમાં ‘મહિલા-સશક્તિકરણ’ માટેના ભૌતિક આયામો-સાધનો વૈશ્વિકરણના મહોલમાં જેમ વિસ્તરતા જાય છે તેમ-તેમ કુલ સમતુલાના પ્રશ્નો પણ ઊભા થતા જાય છે.

મહિલાઓની અધિકારીતા અને માનસિકતાના સંદર્ભે આજે પણ કાનુની અધિકાર પ્રાપ્યતા છતાં પણ કેટલાક વિવાદો ખાસ કરીને નૈતિકતાના મુદ્દે ઊભા કરવામાં આવે છે. પરંતુ આ મુદ્દા અંગેની આજની ચર્ચાઓ ભૂતકાળમાં પણ એક યા બીજા સ્વરૂપે સ્પષ્ટ કેન્દ્રમાં રહી હતી.

મહિલાઓની અધિકારીતા અંગેનો એક વિવાદ એ પ્રકારનો છે કે સંગઠનાત્મક પ્રવૃત્તિઓના કારણે જ બહેનોના અધિકાર અંગેની ભાવનાને પોષણ મળેલું છે. આ સંદર્ભમાં એક ઐતિહાસિક ઘટના સંદર્ભને ચકાસવાથી તે બાબત સ્પષ્ટ થશે જ્યારે બ્રિટિશ સરકારે બી.એન. રાઉના અધ્યક્ષપદે હિંદુ કુટુંબના વિભિન્ન અંગોને ધ્યાનમાં લઈને હિંદુ લો સમિતિની રચના કરવામાં આવી હતી કે જેની ભલામણોના સ્વરૂપે જ આજનો આપણો હિંદુ કોડ અમલમાં આવેલ છે. આ સમયે ‘અખિલ ભારતીય મહિલા સમિતિ’ પણ મહિલાઓની જાગૃતિ બાબત કાર્યરત હતી. બીજા તરફ રાષ્ટ્રપિતા સ્વ. મહાત્મા ગાંધીજીના નેતૃત્વ અને માર્ગદર્શન હેઠળ સમગ્ર રાષ્ટ્રમાં ‘નાગરિક સહકાર આંદોલન’ ચાલી રહેલ હતું. તેવા સમયે મહિલાઓના દરજ્જા અંગે સ્વ.શ્રી ગાંધીજીએ ઈ.સ. 1929ના એક સમયના ‘યંગ ઈન્ડિયા’માં સ્પષ્ટ પણે એવો અભિપ્રાય આપેલ હતો કે મહિલાઓએ તેમના કાનુની દરજ્જાના પ્રશ્નમાં સમય અને શક્તિનો ખર્ચ ન કરવો જોઈએ. અને તેના બદલે તેના કરતા વધુ ભારે અને અગત્યના પ્રશ્નો તરફ ધ્યાન કેન્દ્રિત કરવું જોઈએ. આ અનુસંધાને ગાંધીજીના જ ચુસ્ત સમર્થક મહિલા આગેવાન રાજકુમારી અમૃતકૌર પણ તેમનો અભિપ્રાય નિર્ભિકપણે આપેલ હતો કે ગાંધીજીના આ વિચાર સાથે હું સંમત નથી અને કારણ કે અખિલ હિંદ મહિલા સમિતિના ભારે પ્રયત્નોથી ‘હિંદુ લો સમિતિ’ ની રચના થઈ છે તો તે અંગેની તમામ પ્રક્રિયાઓમાં મહિલાઓએ પૂર્ણ સહકાર આપવો જોઈએ. વિલાસીની દેવી રોહતાઈ જેવી મહિલાઓએ તો એમ પણ ઉચ્ચારેલું છે કે મહિલાઓની સમાન દરજ્જા માટેની લડાઈ સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામ કરતા વધુ મહત્વની નહીં તો પણ તેટલા જ મહત્વની જરૂર છે.

મહિલા અધિકારીતા અંગેની ઐતિહાસિક ભૂમિકાનો ખ્યાલ એ ઉપરથી પણ જાણી શકાય કે તે સમયના કલકત્તાથી પ્રસિદ્ધ થતા વિખ્યાત રાષ્ટ્રીય દૈનિક ‘ધ સ્ટેટસપેન’ માં ઈ.સ. 1930થી 1940ના પ્રારંભિક તબક્કામાં ‘ધ વિમેન્સ ફોરમ’ નામની કટાર પણ શરૂ કરવામાં આવી હતી. તે સમયના સુવિખ્યાત મહિલા કાર્યકર કિષ્ના હઠીસીંઘ કે મંજરીદેવીનાલખાણને બારીકાઈથી

અભ્યાસ કરવામાં આવે તો તેમાં તે સમયે ‘આધુનિક યુવતી’ની પરિભાષા અંગે બૃહદ અને ગુઢ કલ્પનાને સ્પષ્ટ સમજાવવામાં આવી હતી.

તત્કાલીન સમાજ ઊછળળી, ધમંડી અને પાશ્ચાત્ય કચરાનું અનુકરણ કરનાર તરીકે ઓળખાવતો હતો તે સમાજને પડકારતા કિન્ના હઠીસિંધે જણાવેલું કે ‘મહિલાઓ આધુનિક થઈ છે.’ તેના અર્થ પશ્ચિમનું આંધળું અનુકરણ કરે છે. અભિમાની થઈ છે તેવો ન કરતા તેમ સમજવું જોઈએ કે હવે આ બહેનો તેમની કૌટુંબિક, સામાજિક અને નૈતિક જવાબદારી પ્રત્યે વધુ સભાન થઈ છે અને તે જવાબદારીના પાલન માટે અને જરૂરી અધિકાર માટેની તેની માંગણીઓ બૌદ્ધિક છે. ન્યાયિક છે તેમાં મૂળભૂત ભારતીયતાનો કોઈ જ ભંગ થતો નથી. પરિશ્રમી યુવતિઓ સહજ આનંદ-પ્રમાદ ની અભિપ્તિ બતાવે તો તેમાં કોઈ સરૂપી કે નૈતિકતાનો ભંગ નથી પરંતુ તે માનવસહજ પ્રેરણા જ છે જેના માટે તે સર્વ રીતે યોગ્ય છે લાયક છે.

મંજરીદેવીએ જરા જુદા જ સંદર્ભમાં પણ સ્પષ્ટપણે ‘ધ સ્ટેટસપેન’ માં તે સમયે લખેલું હતું કે ‘નારીત્વ’ ના મૂળ વિચારમાં કેવળ આર્થિક કે રાજકીય શોષણના પ્રતિકારનો તર્ક નથી. પરંતુ તેથી પણ આગળ નારીત્વ માટેની લડત જે ભૂમિકા સ્વરૂપે પુરૂષ કાર્યરત છે તે સઘળી ભૂમિકા એટલે કે પિતા, ભાઈ અને પતિ સામેની લડત છે. વિશ્વમાં જ્યારે તુર્કી, ચીન, જાપાન, ઈજિપ્ત કે ઈરાન જેવા દેશોમાં પણ મહિલાઓમાં વ્યાપક પરિવર્તનો આવેલ છે. ત્યારે ભારતની બહેનોને તે દિશામાં કટિબદ્ધ થાય. આ માટે રાષ્ટ્રીય નવરચનાના કાર્યમાં ઉમદા સહયોગ આપવાની અને જરૂર પડે સંઘર્ષ કરવા તે કટિબદ્ધ છે. તે જ તેની ક્ષમતા પ્રતિબદ્ધતા અને પરિપક્વતાનું પ્રતિક છે.

ઐતિહાસિક સંદર્ભે મહિલા અધિકારીતાના પ્રશ્નને જો તપાસવામાં આવે તો સહજ કહેવામાં આવે છે. સમજાવવામાં આવે છે તેમ આ પ્રશ્ન પરંપરાગત અને આધુનિક વિચાર શૈલી વચ્ચેનો સંઘર્ષ હતો તેમ નહિ. પરંતુ ખરેખર રાષ્ટ્રવાદી આધુનિક વિચારધારા અને વિભિન્ન રાષ્ટ્રવાદની આધુનિક વિચારધારા વચ્ચેનો સંઘર્ષ હતો. બંનેમાં બહેનોની માનસિક ગુલામીને દુર રાખીને બહેનો જ શ્રેષ્ઠતાની અધિકારી છે તે તત્વને સમજાવવાનો પ્રયાસ જોવા મળેલો છે.

સ્ત્રીશક્તિ વિજયતે એક તરફ વિશ્વમાં મહિલાઓની બોલબાલા છે તો બીજી બાજુ સ્ત્રીભૂષણહત્યાનો ધંધો પૂરબહારમાં ચાલી રહ્યો છે. ભારતીય સમાજની એ કમનસીબી છે કે બાળકી જન્મતાં પહેલાં જ તેને મારી નાંખવાની પ્રથા ચાલે છે. સંયુક્ત રાષ્ટ્ર વિકાસ કાર્યક્રમના રિપોર્ટ મુજબ મુંબઈમાં 1994 માં ભૂષણહત્યાના 40,000 કિસ્સા બહાર આવ્યા. તામિલનાડુના છ જિલ્લામાં 1995માં 3178 કિસ્સા બહાર આવ્યા. આ સિવાય 1999માં એક અનુમાનના આધારે માત્ર અમદાવાદમાં દર વર્ષે સ્ત્રીભૂષણ હત્યાના 10,000 કિસ્સા જોવા મળ્યા. રાજસ્થાનનાં પશ્ચિમના જિલ્લામાં કન્યાઓની હત્યા થતી જોવા મળે છે. 10,000 વસ્તીવાળાં ગામમાં માંડ 50 છોકરી જોવા મળે છે. 1998માં દેઓરા ગામ ચર્ચાનો વિષય બનેલું જ્યાં 115 વર્ષોમાં પહેલીવાર કોઈ છોકરીનાં લગ્ન થયાં. કેમકે આ પહેલા છ પેઢીઓથી છોકરીઓને જન્મની સાથે ‘દૂધપીતી’ કરી દેવામાં આવતી. યુનિસેફ મુજબ દુનિયામાં પુરૂષ મહિલાની સરખામણીએ 100 : 105 છે. જ્યારે ભારતમાં 100:93 છે. 2005 માં ભારતમાં 1000 પુરૂષોએ 933 સ્ત્રીઓ હતી. જુદા-જુદા 14 રાજ્યોમાં 144 જિલ્લામાં 6 વર્ષની ઉંમરના બાળકો સામે 900 જ બાળકી હતી. કુરુક્ષેત્રમાં માત્ર 770, ફતેહગઢ (પંજાબ) માં 754 પંજાબમાં 1000 પુરૂષોએ 793 સ્ત્રીઓ, હરિયાણામાં 820, ચંડીગઢમાં 945, દિલ્હીમાં 865 અને આપણા ગુજરાતમાં 8478 સ્ત્રીઓ નોંધાઈ અને જો કોઈ સ્ત્રી બાળકીને જન્મ આપે તો તેની અવગણના થાય તેની પર અત્યાચાર થાય.

#### સંદર્ભસૂચિ

1. SLBC રિપોર્ટ, SLBC વિભાગ, દેના બેંક ઓફિસ, અમદાવાદ.
2. જાતિ વિકાસ સૂચકાંકો, ગુજરાત બ્યુરો ઓફ ઈકોનોમિક્સ એન્ડ સ્ટેટિસ્ટિક્સ, ગાંધીનગર.
3. યોજના - નારીશક્તિ અંગેના વિશેષાંકો
4. ગુજરાત દિપોત્સવી અંક - 2007
5. સામાજિક આર્થિક સમીક્ષા, ગુજરાત, 2007-2009 અર્થશાસ્ત્ર અને આંકડાશાસ્ત્રની કચેરી, ગાંધીનગર

## A study of effect of sports specific training on physiological and performance related reaction time of male cricket players

Prof. Dr. Kirit Roy

Dept. of Physical Education, Social Science and Humanities  
Surendranagar University

### INTRODUCTION

A sound training programme for overall part and structural strength improvement, supplemented with sports - specific exercises like strength training, plyometric training and combination of trainings with specific skill movement training will contribute to improved sports performance. Because the performance of the cricketers is often of utmost importance to the outcome of a cricket match, more efficient of and additional sport - specific training methods were sought to develop a new toiling programme to maximize gains in their range of motion, physical, physiological and psychological parameters. The training programs were developed with strength training, plyometric training and their combination of training which are used existing the training programs of cricket are available in nowadays. They were used as guidelines to prepare the sports specific training programme as reference, coupled with skill movements that have become trends and practices in cricket. Cricket is a game that would appear to require little muscular strength. Viewed from a distance, cricket is such a seemingly gentle pursuit that the notion of strength training and exercises would seem to have a limited application. However, as with many sports that involve relatively lengthy periods of low activity punctuated by intervals of extreme muscular focus, cricket is deceptively difficult and it as presents significant physical training challenges for the athlete, especially at an elite level.

Cricket training is not exclusively an anaerobic focus. players are often either stationed in the field or at bat for a number of hours at a time. Cricket, as both a traditional English summer sport as well as a competition played year-round in warm, humid regions such as India, Australia, and the West Indies, places the demands of the environment on the players. Enhanced aerobic fitness and a strong cardiovascular system assist the players in dealing with the fatigue and impact on their attentiveness in the course of a long match (Fags, 2009)<sup>i</sup>. Sports performance is affected by several factors. The contribution of each factor remains unknown, but is dynamic. In order for the coach to have sportsmen realize a greater portion of their genetic potential, sport-specific training is needed. A sound 7 resistance programme for overall body part and structural strength improvement, supplemented with sport -specific exercises will contribute to improved sports performance (Kreamer, 1985)<sup>ii</sup>. Sports specific training includes the conditioning program with practice field and weight room (gym) workouts.

**Reaction time** is the elapsed time between the presentation of a sensory stimulus and the subsequent behavioral response. Reaction Time is often used in experimental psychology to measure the duration of mental operations, an area of research known as mental chronometry. In psychometric psychology it is considered to be an index of speed of processing. That is, it indicates how fast the thinker can execute the mental operations needed by the task at hand. In turn, speed of processing is considered as an index of processing efficiency. The behavioral response is typically a button press but can also be an eye movement, a vocal response, or some observable behavior.

### REVIEW OF RELATED LITERATURE

**Calder et al. (1996)**<sup>iii</sup> conducted a study on comparison of whole and split weight training routines in young women. Young women were subjected to three weight training regimes:

(a) a whole routine (W) which did four upper (five sets of 6-10 RM) and three lower body (five sets 10-12 RM) weight training exercises in two single sessions per week, (b) a split session routine (S) which did the upper body exercises two days a week and the lower body exercises on two other days of the week, and (c) a control group which did no training. Both W and S groups changed similarly over 20 weeks of training in terms of 1 RM, arm curl, bench press, and leg press. Both the groups improved the arm and trunk lean mass similarly. Whole-body lean tissue mass increased and whole-body percent fat decreased with training in both groups. Young untrained women respond to weight training in terms of strength increase and lean body mass changes irrespective of the exercise training schedule.

**Paula et al. (1998)<sup>iv</sup>** assessed whether resistance training modified the changes in joint range of motion developed through flexibility training. Young adult Ss (M = 26; F = 15) were allocated to one of four groups: i) resistance training, ii) flexibility training, iii) resistance and flexibility training, and iv) no training. There was no change in either muscle strength or flexibility in the control group. Muscle strength improved in both resistance-training groups. Flexibility improved in both flexibility training groups but it was unchanged in the resistance training group. Resistance training did not affect gains developed through flexibility training.

**Vossen J F et al. (2000)<sup>v</sup>** conducted a study on Comparison of Dynamic Push-Up Training and Plyometric Push-Up Training on Upper-Body Power and Strength. The purpose of this study was to compare dynamic pushup (DPU) and plyometric push-up (PPU) training programs on 2 criterion measures: (a) the distance achieved on a sitting, 2-handed medicine ball put, and (b) the maximum weight for 1 repetition of a sitting, 2-handed chest press. Thirty-five healthy women completed 18 training sessions over a 6-week period, with training time and repetitions matched for the DRJ (n = 5 17) and PPU (n = 5 18) groups. Dynamic push-ups were completed from the knees, using a 2-second-up-2-second-down cadence. Plyometric push-ups were also completed from the knees, with the subjects allowing themselves to fall forward onto their hands and then propelling themselves upward and back to the starting position, with 1 push-up completed every 4 seconds. The PPU group experienced significantly greater improvements than the DPU group on the medicine ball put (p = 0.03). There was no significant difference between groups for the chest press, although the PPU group experienced greater increases.

**Ebben William P. (2002)<sup>vi</sup>** conducted a brief review on complex training. The effectiveness of plyometric training is well supported by research. Complex training has gained popularity as a training strategy combining weight training and plyometric training. Anecdotal reports recommend training in this fashion in order to improve muscular power and athletic performance. Recently, several studies have examined complex training. Despite the fact that questions remain about the potential effectiveness and implementation of this type of training, results of recent studies are useful in guiding practitioners in the development and implementation of combined training programs. In some cases, research suggests that complex training has an effect on upper body power and the results of acute and chronic complex training include improved jumping performance. Improved performance may require three to four minutes rest between the weight training and plyometrics sets and the use of heavy weight training loads.

**Kubachka, E. M (1966)<sup>vii</sup>** conducted the study to find out the effects of plyometric, strength training, and body weight exercises on the power, strength, and endurance capacities of the trunk muscles were examined. Training sessions occurred twice per week for five weeks (a total of 10 training sessions). Plyometrics use two physiological properties of muscle, the stretch reflex and storage of elastic energy. When a rapid lengthening of a muscle occurs just prior to rapid shortening, a more powerful contraction result. Plyometrics significantly increased power (8.6%) and strength (45.9%). Strength training increased power (7.3%) and strength (82.5%). Body weight increased



strength only (21.9%). Both plyometrics and strength training were as effective as each other. This study showed the rapid and substantial gains that can be made when plyometric or strength training is confined to a restricted set of muscles. No influence should be made that these improvements will be transferred to any other activity.

**Flint and Berger RA (1962)<sup>viii</sup>** stated that the passive- range of-motion (ROM) and callisthenic-type exercise programs are popular in rehabilitative settings and have been reported to alleviate the symptoms of LBP. Unfortunately, such programs do not provide progressive resistance for the lumbar musculature and thus are limited in their ability to increase lumbar strength. Few studies have attempted to increase the strength of the lumbar extensor muscles through progressive-resistance training. This study showed significant increases in trunk extension strength as a result of progressive-resistance training.

#### METHOD

The purpose of the study was to select male cricket players from private cricket clubs in Ahmedabad district. 120 cricket players were selected at random and their age ranged between 18 and 24 years. The subjects were segregated into four groups, by adapting random procedure. All four groups served as experimental groups for 12 weeks.

Group	
1	Sports specific lower body plyometric training and upper body strength training (SSLPST)
2	Sports specific upper body plyometric training and lower body strength training (SSUPLST)
3	Sports specific plyometric training and strength training (SSPST)
4	Specific plyometric training, strength training with skill movement training (CSSPSSMT)

#### TEST ADMINISTRATION:

**CHRONOSCOPE VISUAL REACTION TIME TEST:** To measure the visual reaction time of the subject. The instrument consists of a wooden board with a screen in the middle. On one side of the screen (The subject's side), there was one red light and two press keys. The keys were connected to the light. If the key is pressed while the light is burning, the circuit will automatically break and the light will go off. On the other side, (ie) the tester's side, there were a series of keys which served to switch on the red light on the subject side. As soon as the subjects see the red light burning the subject has to press the key on his left side as quickly as he can. The tester recorded the time displayed on the screen. This experiment was repeated about 20 times. The average reaction time for the twenty trials was calculated. (Barrow H M et al., 1989)

#### ANALYSIS AND INTERPRETATIONS OF DATA

The significance of the means of the obtained test results were tested at 0.05 level of confidence. The 't' test was applied. The collected data have been processed by using Analysis of covariance (ANCOVA) to determine

#### COMPUTATION OF 't' - RATIO OF SSLPST, SSUPLST, SSPST AND CSSPSSMT ON VISUAL REACTION TIME (SCORES IN BILLISECONDS)

Group	Pre-test mean	Post-test mean	Mean	SEM	't'-ratio
Sports specific lower body plyometric training and upper body strength training (SSLPST)	251.01	226.71	243.85	1.92	12.63*
Sports specific upper body plyometric training and lower body strength training (SSUPLST)	257.70	232.57	245.13	2.61	9.63*



training and lower body strength training (SSUPLST)					
Sports specific plyometric training and strength training (SSPST)	250.76	218.76	32.00	1.43	22.32
Specific plyometric training, strength training with skill movement training (CSSPSSMT)	250.44	217.17	3SL27	1.16	28.64*

Significant at 0.05 level of confidence (1, 29) 2.05

Table 4.34 reveals the computation of 't' ratios of experimental groups on visual reaction time. The obtained 't' ratios of SSPUST, SSUPLST, SSPST and CSSPSSMT were 12.63, 9.63, 22.32 and 28.64 respectively. Since these values were found to be higher than the required table value of 2.05 for the degrees of freedom 1 and 29, it was significant at 0.05 level of confidence.

From these results it was inferred that, twelve weeks practice of SSPUST, SSUPLST, SSPST and CSSPSSMT had produced a significant improvement on visual reaction time of male cricket players. The graphical representation of pre and posttest means of SSPUST, SSUPLST, SSPST and CSSPSSMT on visual reaction time was presented in figure 4.23.

#### ANALYSIS OF VARIANCE ON PRE, POST AND ADJUSTED POST TEST MEANS AMONG SSPUST, SSUPLST, SSPST AND CSSPSSMT ON VISUAL REACTION TIME (SCORES IN MILLISECONDS)

	SSLPUS T Ex. G -I	SSUPLS T Ex. G -II	SSPS T Ex. G-III	SSPSSM T Ex. G — IV	Sources of variance	Sum of square	df	Mean square	F
PRE- TEST	251.01	257.70	250.76	250.44	B/S	1095.24	3	365.08	0.36
					W/S	1175802	116	1013.70	
POST- TEST	226.71	232.57	218.76	217.17	B/S	4638.68	3	1546.23	2.35
					W/S	7627832	116	657.57	
ADJUSTED POST TEST	227.85	228.53	220.09	218.75	B/S	233L5	3	777.20	14.84
					W/S	6037J1	115	52.50	

\*Significant at 0.05 level of confidence (3 and 116) 2.68

The 'F' ratios of pretest, post test and adjusted posttest means of Sports specific lower body plyometric training and upper body strength training (SSLPUST), sports specific upper body plyometric training and lower body strength training (SSUPLST), sports specific plyometric training and strength training (SSPST) and combination of sports specific plyometric training, strength training and skill movement training (CSSPSSMT) on visual reaction time.

The obtained F ratio for the pretest means of SSPUST, SSUPLST, SSPST and CSSPSSMT on speed was 0.61. Since the F - value was less than the required table value 2.68 for the degrees of freedom 3 and 116, it was not significant at 0.05 level of confidence. Further, the obtained F ratio for the posttest means of SSPUST, SSUPLST, SSPST and CSSPSSMT on visual reaction time was 8.68. Since the F - value was higher than the required table value of 2.68 for the degrees of freedom 3 and 116, it was significant at 0.05 level of confidence.

The obtained F ratio for the adjusted posttest means of SSPUST, SSUPLST, SSPST and CSSPSSMT groups on visual reaction time was 14.8. Since the F - value was higher than the required table value of 2.68 for the degrees of freedom 3 and 115, it was significant at 0.05 level of confidence. Whenever the F value among the adjusted posttest means of SSPUST, SSUPLST, SSPST and CSSPSSMT groups was found to be significant, in order to find out which of the training group improved the visual reaction time better than other training groups the Scheffe's post hoc test was applied.

#### References:

- <sup>i</sup> **Fags (2009)**, Cricket-Strength-Training-and-Exercises, [Online], available at: <http://www.fags.org/sports-science/Ce-Do/Cricket-Strength-Training-and-Exercises.html> accessed: 22.11.09.
- <sup>ii</sup> **Kreamer, W.J. (1985)**. Sport Performance and Specificity of Training. National Strength and Conditioning Association Journal, 7: 65-66.
- <sup>iii</sup> **Calder, A. W., Chilibeck, P. D., Webber, C. E., & Sale, D. G. (1996)** Comparison of whole and split weight training routines in young women. Canadian Journal of Applied Physiology, 19, 185-199.
- <sup>iv</sup> **Paula, K. C., Carvalho, A. C., Azevedo, T. M., & Nobrega, A. C. (1998)**. Interaction between resistance and flexibility training in healthy young adults. Medicine and Science in Sports and Exercise, 30(5), Supplement abstract 1135.
- <sup>v</sup> **Vossen Jeffery F., John F. Kramer, Darren G. Burke, and Deborah P. Vossen (2000)**, Comparison of Dynamic Push-Up Training and Plyometric Push-Up Training on Upper-Body Power and Strength, Journal of Strength and Conditioning Research, 14(3), 248-253.
- <sup>vi</sup> **Ebben William P. (2002)**, complex training: a brief review, Journal of Sports Science and Medicine (2002), 1, 42-46 <http://www.jssm.org>.
- <sup>vii</sup> **Kubacka, E. M., & Stevens, W. C. (1966)**. The effects of plyometric training and strength training on the muscular capacities of the trunk. Medicine and Science in Sports and Exercise, 28(5), supplement abstract 1145.
- <sup>viii</sup> **Flint and Berger RA (1962)** Comparison of static and dynamic strength increases. Research Quarterly. 33:329-333.

ગુજરાત રાજ્યના અમદાવાદ જિલ્લાના માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓનો સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા અને માનસિક સ્વાસ્થ્યને અભ્યાસ

દર્શના યાવડા  
રીસર્ચ સ્કોલર, શિક્ષણશાસ્ત્ર,  
મોનાર્ક યુનિવર્સિટી, અમદાવાદ

**આમુખ :-**

ઈમોશનલ ઇન્ટેલિજન્સ ( EI ) જેને ઈમોશનલ ક્વોશન્ટ ( EQ) તરીકે પણ ઓળખવામાં આવે છે.એમાં લાગણીઓને સમજવાની, ઉપયોગ કરવાની,મેનેજ કરવાની અને હેન્ડલ કરવાની ક્ષમતા છે.વિચાર અને વર્તનને માર્ગદર્શન આપવા માટે ભાવનાત્મક માહિતીનો ઉપયોગ, વિવિધ લાગણીઓ વચ્ચે સમજણ,લેબલિંગ અને વાતાવરણને અનુકૂળ કરવા લાગણીઓને સમાયોજિત કરવાનો થાય છે. ‘આ શબ્દ સૌ પ્રથમ 1964 માં દેખાયો જે 1995 માં મનોવિજ્ઞાની અને વિજ્ઞાન પત્રકાર ડેનિયલ ગોલમેન દ્વારા લખાયેલ ઈમોશનલ પુસ્તકમાં લોકપ્રિય થયો.

ઈમોશનલ ઇન્ટેલિજન્સ એ આપણી પોતાની લાગણીઓને ઓળખવાની ક્ષમતા છે.મનોવૈજ્ઞાનિક સંશોધન પ્રમાણમાં નવું ક્ષેત્ર છે. EI ની વ્યાખ્યા સતત બદલાતી રહે છે.વ્યક્તિએ રોજ નવું શીખવું,એ અનિવાર્ય બની ગયું છે. ઈ.સ.1940 માં ડેવિડ વેચરલરે બુદ્ધિશાળી વર્તન પર બીન બૌદ્ધિક પરિબળોના પ્રભાવનું વર્ણન કરતાં નોંધેલું કે ‘ જ્યાં સુધી આપણે આ પરિબળોને પર્યાપ્ત વર્ણવી ના શકીએ, ત્યાં સુધી બુદ્ધિના આ મોડલ પૂર્ણ થઈ શકે નહિ.’ ઈ.સ.1983 માં હોર્વર્ડ ગાર્ડનરે જણાવેલ મત મુજબ આંતર વ્યક્તિત્વ બુદ્ધિ,પોતાને સમજવાની ક્ષમતા ( ધ થિયરી ઓફ મલ્ટીપલ ઇન્ટેલિજન્સ) નો સમાવેશ થાય છે.

**KEY WORDS :-** ઈમોશનલ ઇન્ટેલિજન્સ, ક્ષમતા, માધ્યમિક

**( 1) પ્રસ્તાવના :-**

માનવ મનોજગતમાં સંવેગો એટલાં વ્યાપક છે કે આપણી જાણકારી વગર પણ તે આપણાં પ્રત્યક્ષીકરણ વલણો, પૂર્વગ્રહો, વિચારો, અભિરુચિઓ અને શિક્ષણને પ્રભાવિત કરી શકે છે.વાણી અને ચહેરાના હાવભાવ દ્વારા લોકો એકબીજા સાથે વાતચીત કરી શકે છે.વાણીમાં વિવિધ લાગણીઓની ભૂમિકા સમજવી એ અગત્યની છે.

મનોભાર માટેનો અંગ્રેજી શબ્દ ‘stress’ પ્રાકૃતિક વિજ્ઞાન નો શબ્દ છે. ઈજનેરીમાં સ્ટ્રેસ શબ્દનો અર્થ થાય છે ‘ભૌતિક પદાર્થ પર લગાડેલ બાહ્ય બળ’ જેને કારણે તાણ- તનાવ ઉત્પન્ન થાય છે અને પદાર્થની રચના બદલાય છે ઘણા મનોવૈજ્ઞાનિકોએ આ ‘stress’ શબ્દની વ્યાખ્યાને એવી રીતે અપનાવી કે મનોભાર એ કોઈ એવી બાહ્ય ઘટના કે ઉદ્દીપક છે જેની અસરને કારણે તાણ અને શ્રમ ઉત્પન્ન થાય છે.

ઉપરોક્ત તમામ પરિસ્થિતિઓની સૌથી વધારે અસર બાળકો અને વિદ્યાર્થીઓ પર થતી હોય છે. વર્તમાન સમય એ સ્પર્ધાનો યુગ છે. દરેક માતા પિતા પોતાનું સંતાન ઉત્તમ જ સાબિત થાય તેવી ઈચ્છા રાખે છે અને બાળકો પણ પોતાના માતા પિતાની ઈચ્છાઓની પૂર્તિ માટે પ્રયત્ન કરે છે. પરંતુ આ પ્રયત્નમાં નિષ્ફળ જવાને કારણે માનસિક તાણ પેદા થાય છે. આ માનસિક તાણને કારણે વિદ્યાર્થીઓ પોતાની સામવેગિકતા ગુમાવે છે. તેઓ લાગણી હિન બનતા જાય છે. જેની અસર તેઓના વર્તન અને શૈક્ષણિક સિદ્ધિ પર થતી જોવા મળે છે. વિદ્યાર્થીઓની સમવેગિક બુદ્ધિ અને માનસિક સ્વાસ્થ્યના સંદર્ભમાં તેમની શૈક્ષણિક સિદ્ધિ કેવી હશે તે જાણવાના હેતુસર પ્રસ્તુત સંશોધન માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓ ની સામવેદિક બુદ્ધિના સંદર્ભમાં અભ્યાસ કરવા માટે હાથ ધરવામાં આવ્યું હતું.

રોજિંદા જીવનમાં લાગણીઓ ઓળખવાનું કાર્ય ઘણી રીતે ઉપયોગી છે.વાણીની લાગણીની ઓળખની પ્રક્રિયામાં ભાષણ ડેટાબેઝ હોવું આવશ્યક છે.માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિ ક્ષમતાને ઘણાં પરિબળો ભાગ ભજવતાં હોય છે.સાંવેગિક

બુદ્ધિ ક્ષમતા એ વાણીથી વાણી ઓળખવાની પ્રક્રિયામાં મદદરૂપ બની રહે છે. વ્યક્તિ દ્વારા બોલવામાં આવતી વાણી પર લાગણીઓ સ્પષ્ટ અસર કરતી જોવા મળે છે. સાંવેગિક બુદ્ધિ ક્ષમતાનો અભ્યાસ કરતાં એવું ફલિત થાય છે કે અગાઉ થયેલાં અભ્યાસોમાં ઉચ્ચસાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા અને સકારાત્મક કાર્યસ્થળ પ્રદર્શન વચ્ચે સહસંબંધ છે. મનોવૈજ્ઞાનિકો વચ્ચે આ મુદ્દાપર કોઈ સામાન્ય સર્વ સંમતિ જોવા મળતી નથી. ઓછી સાંવેગિક બુદ્ધિ ધરાવતી વ્યક્તિ તેની લાગણીઓ માટે જવાબદારી લેતી નથી. પરંતુ તેના માટે બીજી વ્યક્તિને દોષિત ઠેરવે છે. જેનામાં સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તાનું પ્રમાણ ઓછું હોય છે, તેવી વ્યક્તિ જે અનુભવે છે તે અન્યને કહી શકતી નથી. જેથી એ બીજાને દોષ આપે છે. તાજેતરમાં થયેલાં સંશોધનો મુજબ સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તાની ઓળખ પર ધ્યાન કેન્દ્રિત કર્યું છે. જે દ્રશ્ય અને શ્રાવ્ય અમૌખિક સંકેતોના અવલોકનો પર આધારિત ભાવનાત્મક સ્થિતિનો ખ્યાલ આપે છે. વધુમાં ન્યૂરોલોજિકલ અભ્યાસો એ સાબિત કર્યું છે કે ભાવનાત્મક બુદ્ધિના ન્યૂરો મિકેનીઝમ્સને દર્શાવવાનો પ્રયાસ કર્યો છે.

### (2) અભ્યાસનો ઉદ્દેશ :-

કોઈ પણ કાર્યને પરિપૂર્ણ કરવા માટે સંકલ્પ સાથે લક્ષ્ય નિર્ધારિત કરીને આગળ વધવાથી સફળતા પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. એ સફળતા પ્રાપ્ત કરવા માટે કોઈ પણ કાર્ય કરવા પાછળના કારણને હેતુ કહી શકાય. એટલે કે કોઈ પણ કાર્ય કરવા પાછળ કોઈ ચોક્કસ પ્રકારનો હેતુ - ઉદ્દેશ રહેલો હોય છે. એ સિવાય સફળતા પ્રાપ્ત કરવી અશક્ય છે. હેતુ-ઉદ્દેશનું વ્યવસ્થિત પરિવર્તન યોગ્ય દિશામાં કાર્ય કરવાથી સફળતા પ્રાપ્ત કરી શકાય છે.

- માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તાનો અભ્યાસ કરવા પાછળ નીચે જણાવેલ ઉદ્દેશો રહેલાં છે.
- માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તાનો અભ્યાસ કરવો.
- વિદ્યાર્થીઓમાં રહેલી સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા- ક્ષમતા નક્કી કરવી.
- માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા જાતિના સંદર્ભમાં રહીને તેનો અભ્યાસ કરવો.
- સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા વિદ્યાર્થીઓના શૈક્ષણિક અભ્યાસને ધ્યાનમાં રાખીને તેનો અભ્યાસ કરવો.
- વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા પર વિદ્યાર્થીઓના કુટુંબના સંદર્ભમાં તેનો અભ્યાસ કરવો.

### (3) અભ્યાસમાં સમાવિષ્ટ ચલો :-

મનોવૈજ્ઞાનિકોના મત મુજબ ચલમાં વિવિધ મૂલ્યો હોઈ શકે છે. જે ચલી શકે છે, તેને ચલ કહે છે. ચલ એ એવો ગુણ ધર્મ છે કે જેને મૂલ્યો આપી શકાય છે. સંશોધનના સંદર્ભમાં ચલના પાંચ પ્રકાર છે.

1. સ્વતંત્ર ચલ.
2. પરતંત્ર ચલ.
3. પરિવર્તક ચલ.
4. અંકુશિત ચલ.
5. આંતરવર્તી ચલ.

ક્રમ નં	ચલ નું નામ	ચલ નો પ્રકાર	ચલ ની કક્ષાઓ
૧	જાતિ	સ્વતંત્ર	છોકરાઓ છોકરીઓ
૨	વિસ્તાર	સ્વતંત્ર	શહેર ગામ
૩	સાંવેગિક બુદ્ધિ	સ્વતંત્ર	ઉચ્ચ નિમ્ન
૪	શૈક્ષણિક સિદ્ધિ	સ્વતંત્ર	ઉચ્ચ નિમ્ન

(4) અભ્યાસની ઉત્કલ્પનાઓ :-

સાંવેગિક બુધ્ધિ ના સંદર્ભમાં ઉત્કલ્પનાઓ એ ભાવિ સંશોધન માટે દિશા સૂચક છે આપણા સંશોધનના અંતમાં આપણને કેવા પ્રકારના તારણો પ્રાપ્ત થશે તે બાબતનો આપણે દિશા સૂચક માર્ગ બની રહે છે કારણો અંગેના આ વિધાનો ઉપકલ્પનાનું મહત્વ સમજાવતા આગાહી સૂચક કામ ચલાવવું વિધાનો છે

સારું વિજ્ઞાન વૈજ્ઞાનિક પદ્ધતિનો સચોટ ઉપયોગ કરવા પર આધાર રાખે છે અને વૈજ્ઞાનિક પદ્ધતિ સારી રીતે રચાયેલી પૂર્વધારણાઓ પર આધાર રાખે છે પૂર્વધારણા એ અગાઉના સંશોધન પર આધારિત ચોક્કસ આગાહી છે જે પ્રયોગોમાં ચકાસી શકાય છે.

માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓનીસાંવેગિક બુધ્ધિ પર કરાયેલા અભ્યાસની ઉત્કલ્પનાઓ નીચે મુજબ છે

1. વિદ્યાર્થીઓનીસાંવેગિક બુધ્ધિ માપદંડના સરાસરી પ્રાપ્તિઓ પર તેમની જાતિની કોઈ સાર્થક અસર નહીં હોય.
2. વિદ્યાર્થીઓનીસાંવેગિક બુધ્ધિ માપદંડના સરાસરી પ્રાપ્તિઓ પર તેમના ધોરણની કોઈ અસર નહીં હોય.
3. માધ્યમિક શાળાઓના વિદ્યાર્થીઓનીસાંવેગિક બુધ્ધિમત્તા છોકરા અને છોકરીઓની બુધ્ધિમત્તા પરના પ્રાપ્તિઓની સરાસરી વચ્ચે કોઈ સાર્થક તફાવત નહીં હોય.
4. શૈક્ષણિક સિદ્ધિ ધરાવતા શહેરી અને ગ્રામ્ય વિસ્તારના વિદ્યાર્થીઓનીસાંવેગિક બુધ્ધિમત્તા પરના પ્રાપ્તિઓની સરાસરી વચ્ચે કોઈ ખાસ તફાવત નહીં હોય.
5. નિમ્ન શૈક્ષણિક સિદ્ધિ ધરાવતા ગ્રામ્ય અને શહેરી વિસ્તારના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિકબુધ્ધિમત્તા પરના પ્રાપ્તિઓની સરાસરી વચ્ચે કોઈ સાર્થક તફાવત નહીં હોય.
6. માતા પિતા શૈક્ષણિક લેખક ધરાવતા હોય તેવા વિદ્યાર્થીઓ ની સાંવેગિકબુધ્ધિ માપદંડના સરાસરી પ્રાપ્તિઓ પર તેમની જાતિની કોઈ સાર્થક અસર નહીં હોય.
7. સામાજિક/આર્થિક સ્થિતિની મધ્યમ કક્ષા અને નિમ્ન કક્ષા ધરાવતાં વિદ્યાર્થીઓનીસાંવેગિક બુધ્ધિ માપદંડના સરાસરી પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે કોઈ સાર્થક તફાવત નહીં હોય.
8. ઉચ્ચ શૈક્ષણિક સિદ્ધિ ધરાવતા ગ્રામ્ય અને શહેરી વિસ્તારના વિદ્યાર્થીઓની સામવેદિક બુધ્ધિ માતા પર પ્રાપ્તિઓની સરાસરી વચ્ચે કોઈ સાર્થક તફાવત નહીં હોય.
9. સામાજિક/આર્થિક સ્થિતિની ઉચ્ચકક્ષા અને નિમ્ન કક્ષા ધરાવતા વિદ્યાર્થીઓની સામવેદિક બુધ્ધિ માપદંડના સરાસરી પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે કોઈ સાર્થક તફાવત નહીં હોય.
10. માધ્યમિક શાળાઓના ઉચ્ચ શૈક્ષણિક સિદ્ધિ ધરાવતા છોકરાઓ અને છોકરીઓના પ્રાપ્તિઓની સરાસરી વચ્ચે કોઈ સાર્થક તફાવત નહીં હોય.
11. માધ્યમિક શાળાઓના નિમ્ન શૈક્ષણિક સિદ્ધિ ધરાવતા છોકરાઓ અને છોકરીઓના પ્રાપ્તિઓની સરાસરી વચ્ચે કોઈ સાર્થક તફાવત નહીં હોય.
12. માધ્યમિક શાળાઓના ઉચ્ચ શૈક્ષણિક સિદ્ધિ ધરાવતા શહેરી અને ગ્રામ્ય વિસ્તારના વિદ્યાર્થીઓના સામવેગિક બુધ્ધિ માપદંડના પ્રાપ્તિઓની સરાસરી વચ્ચે કોઈ સાર્થક તફાવત નહીં હોય.

(5) અભ્યાસની મર્યાદાઓ :-

કોઈપણ સંશોધન કરતા એનું જે મહત્વ હોય છે એ જ રીતે સંશોધનની પણ મર્યાદાઓ રહેલી હોય છે એટલા જ માટે કોઈપણ સંશોધન કરતાં એની મર્યાદાઓ જાણવી એટલી જ જરૂરી બની રહે છે જોન બેસ્ટ અને જેવી કહન 1998 જણાવે છે કે --

‘The recognition helps to focus attention on valid objects and helps to minimize the dangerous of over generation.’

પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં ગુજરાત રાજ્યની અમદાવાદ જિલ્લાની ગુજરાતી માધ્યમની માધ્યમિક શાળામાં અભ્યાસ કરતા વિદ્યાર્થીઓનું સમાવેશ કરવામાં આવેલ છે અન્ય માધ્યમના વિદ્યાર્થીઓનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો નથી.

**(6) વ્યાપ વિશ્વ અને નમૂનો :-**

સામાન્ય રીતે સંશોધક પોતાનું સંશોધન જે સમષ્ટિ કે સમૂહને લાગુ પાડવા માંગે છે તેને વ્યાપ વિશ્વ તરીકે ઓળખવામાં આવે છે. પરંતુ જ્યાં સુધી વ્યાપ વિશ્વની સાચી વ્યાખ્યા સ્પષ્ટ ન થાય ત્યાં સુધી કયા અને કેવા પાત્રો પસંદ કરવા તે અંગેની સ્પષ્ટતા થતી નથી તેથી અભ્યાસક માટે વ્યાપ વિશ્વની વ્યાખ્યા સ્પષ્ટ કરવી અનિવાર્ય છે. કે. પી. પાડિના મત અનુસાર, ‘વ્યાપ વિશ્વ એટલે સામાન્ય અર્થમાં કોઈપણ શું વ્યાખ્યાયિત કરાયેલા વર્ગના લોકો, બનાવો કે વસ્તુઓના બધા જ સભ્યો’

પ્રસ્તુત અભ્યાસનું વ્યાપ વિશ્વ અમદાવાદ જિલ્લાની ગુજરાતી માધ્યમની સરકારી અર્ધસરકારી અને ખાનગી માધ્યમિક શાળાઓમાં અભ્યાસ કરતા વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસની વસ્તી તરીકે ગણવામાં આવેલ છે.

સંશોધકે આ અભ્યાસ માટે રેન્ડમ સેમ્પલિંગ પદ્ધતિ પસંદ કરીને વિદ્યાર્થીઓની સામવેદિક બુદ્ધિ મતાનું મૂલ્યાંકન કરેલ છે. જેના માટે સર્વેક્ષણ પદ્ધતિનો ઉપયોગ કરેલ છે.

પ્રસ્તુત અભ્યાસ માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સામવેદિક બુદ્ધિ અને શૈક્ષણિક સિદ્ધિના સંદર્ભમાં માપન કરવાનું હોવાથી પ્રસ્તુત સંજોગ સંશોધન ક્ષેત્ર શૈક્ષણિક મનોવૈજ્ઞાનિક, શૈક્ષણિક માપન અને મૂલ્યાંકનનું છે.

**(7) અભ્યાસ માટેના સાધનો :-**

પ્રસ્તુત અભ્યાસની માહિતી એકત્ર કરવા માટે નીચેના સાધનોનો ઉપયોગ કરવામાં આવેલ છે.

માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તાના માપન માટે ડો. આર. એસ. પટેલ દ્વારા રચિત ‘સાંવેગિક બુદ્ધિ માપન કસોટી’ નો ઉપયોગ કરવામાં આવેલ છે. જેમાં વિદ્યાર્થીઓને 30 પ્રશ્નોની પ્રશ્નાવલી આપવામાં આવેલી હતી. જે પ્રશ્નોના ઉત્તરો દ્વારા તેમની સાંવેગિક બુદ્ધિનું માપન શક્ય બન્યું હતું.

**(8) માહિતીનું પૃથ્થકરણ અને અર્થઘટન :-**

માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિ અને શૈક્ષણિક સિદ્ધિ પરની અસર તપાસવાની હોવાથી, પ્રસ્તુત અભ્યાસ સંશોધનની સર્વેક્ષણ પદ્ધતિથી હાથ ધરવામાં આવ્યો હતો. આ પદ્ધતિમાં વિદ્યાર્થીઓને સાંવેગિક બુદ્ધિ માટે માપદંડ કસોટી આપવામાં આવેલ હતી અને તેના ઉત્તરોની ચકાસણી કર્યા બાદ તેમણે મેળવેલ ગુણ પ્રમાણે તેમની સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા ચકાસવી શક્ય બની હતી.

વર્તમાન અભ્યાસમાં માહિતીનું પૃથ્થકરણ અને અર્થઘટન નીચે જણાવેલ પદ્ધતિ મુજબ કરવામાં આવેલું હતું જેમાં આવૃત્તિ વિતરણ, સરાસરી, પ્રમાણિત વિચલન અને ક્રાંતિક ગુણોત્તરની ગણતરી કરવામાં આવેલ હતી. વિદ્યાર્થીઓની અંદર રહેલ સાંવેગિક બુદ્ધિના મૂલ્યાંકન માટે જુદા જુદા પ્રશ્નોના ઉત્તરો મેળવી તેનો અભ્યાસ કરવામાં આવ્યો હતો. જેના લીધે સામાજિક, આર્થિક અને શૈક્ષણિક સિદ્ધિનો તાગ મેળવી, વિદ્યાર્થીઓમાં રહેલ સાંવેગિક બુદ્ધિને સમજવામાં સહાયતા મળી રહે છે. માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિમત્તા માટે જૂથ પાડીને વિશ્લેષણ કરતાં તફાવત ઉજાગર થાય છે. શૈક્ષણિક રીતે જેનો સ્કોર ઉંચો હોય છે તેની સાંવેગિક બુદ્ધિ સામાન્ય સ્કોર ધરાવતાં વિદ્યાર્થીઓ કરતા ઊંચી હોય છે.

**(9) અભ્યાસના તારણો :-**

(1) સાંવેગિક બુદ્ધિ પર વિસ્તારની અસર જોવા મળી હતી. એટલે કે ગ્રામ્ય અને શહેરી વિસ્તારના વિદ્યાર્થીઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત જોવા મળ્યો હતો.

(2) ગ્રામ્ય વિસ્તાર અને શહેરી વિસ્તારના નિમ્ન સિદ્ધિ ધરાવતાં વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિ માપદંડ કસોટી પરના સરાસરી પ્રાપ્તિઓ પર સાર્થક તફાવત જોવા મળ્યો હતો.

(3) ગ્રામ્ય વિસ્તાર અને શહેરી વિસ્તારના ઉચ્ચ સિદ્ધિ ધરાવતાં વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક માપદંડ કસોટી પરના સરાસરી પ્રાપ્તિઓ પર સાર્થક તફાવત જોવા મળ્યો હતો.

(4) ગ્રામ્ય વિસ્તારના વિદ્યાર્થીઓ કરતા શહેરી વિસ્તારના વિદ્યાર્થીઓમાં સાંવેગિક બુદ્ધિમાં તફાવત જોવા મળ્યો હતો.

(5) માધ્યમિક શાળામાં ધોરણ 9 અને ધોરણ 10 ના વિદ્યાર્થીઓ વચ્ચે સાંવેગિક બુદ્ધિમાં તફાવત જોવા મળ્યો ન હતો.

(6) અનુદાનિત અને બિન અનુદાનિત શાળાઓના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિના પ્રાપ્તિઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત જોવા મળ્યો હતો. આમ સરકારી શાળાઓના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિ ખાનગી શાળાઓના વિદ્યાર્થીઓની બુદ્ધિની તુલનામાં ઓછી જોવા મળી હતી.

## (10) નિષ્કર્ષ :-

દરેક સંશોધન કાર્ય ભવિષ્યના સંશોધનો માટે નવી દિશા સૂચવે છે. વર્તમાન અભ્યાસ એ માધ્યમિક શાળાઓના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિ તપાસવાનો નમ્ર પ્રયાસ છે. આ અભ્યાસમાં અભ્યાસકે સંશોધનની સમગ્ર યોજનાની વિગતો રજૂ કરેલ છે. જેમાં અભ્યાસનો ઉદ્દેશ, તેમાં સમાવિષ્ટ ચલો, અભ્યાસની ઉત્કલ્પનાઓ, તેની મર્યાદાઓ, સંશોધન અંગેની પદ્ધતિ, માહિતીનું પુષ્કરણ અને અર્થઘટનનો સમાવેશ કરેલ છે.

## સંદર્ભસૂચિ :-

- માલહે આર. ચેતરિયા, ( ૨૦૧૨) ; સાંવેગિક બુદ્ધિ. અમદાવાદ : અમોલ પ્રકાશન., પૃ. ૧૦.
- એજન, પૃ. ૧૦
- C.V. Good, (1946); **Dictionary of education**, New york : McGraw Hill Book comp. Inc, P.240.
- કૃષ્ણકાંત ગો. દેસાઈ (૨૦૦૧), મનોવૈજ્ઞાનિક પરિભાષા અને વિભાવના. અમદાવાદ યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ, પાના નં. ૧૫
- R. P. Raneja (1995). **Dictionary of Education**. New Delhi: Anmol Publication page.no.16
- એચ.જી. દેસાઈ અને કે.જી. દેસાઈ (1997), સંશોધન પદ્ધતિઓ અને પ્રવિધિઓ, (છઠ્ઠી આવૃત્તિ, અમદાવાદ : યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ) પાના નંબર 275
- Danie Goleman (1996), **Emotional intelligence** (A Bantam Book, New York) P. 1
- દિલીપ સાહુ (2013). ઉચ્ચતર માધ્યમિક શાળાઓના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિ કક્ષાનો કેટલાક ચલોના સંદર્ભમાં અભ્યાસ, અપ્રકાશિત મહાશોધ નિબંધ, ગુજરાત યુનિવર્સિટી, અમદાવાદ.
- ખુશુ પી. પટેલ (2010). ગુજરાત રાજ્યની માધ્યમિક શાળાઓ માટે સાંવેગિક બુદ્ધિ માપદંડની રચના અને પ્રમાણિકરણ, અપ્રકાશિત મહાશોધ નિબંધ, ગણપત યુનિવર્સિટી, ખેરવા.
- કાજલ એમ. ધામેલીયા (2010) ઉચ્ચતર માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિ નો કેટલાક ચલોના સંદર્ભમાં અભ્યાસ, અપ્રકાશિત મહાશોધ નિબંધ, કડી સર્વ વિદ્યાલય, ગાંધીનગર.
- સંગાડા મીના કે., દાહોદ જિલ્લાના સરકારી છાત્રાલયોના વિદ્યાર્થીઓના માનસિક સ્વાસ્થ્ય અને અનુકૂળનનો અભ્યાસ, અપ્રકાશિત લઘુ શોધ નિબંધ, ગુજરાત યુનિવર્સિટી અમદાવાદ: 2012
- ધૃતેશ રાવ, મોડાસા તાલુકાના ધોરણ -9 ના વિદ્યાર્થીઓના માનસિક સ્વાસ્થ્યનો અભ્યાસ. અપ્રકાશિત લઘુ શોધ નિબંધ, ગુજરાતી યુનિવર્સિટી, અમદાવાદ: 2007
- અંબાબેન એન. ચૌધરી, ધરમપુર તાલુકાની માધ્યમિક શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સાંવેગિક બુદ્ધિ અને શૈક્ષણિક સિધ્ધિ વચ્ચેનો સંબંધનો અભ્યાસ અપ્રકાશિત લઘુ શોધ નિબંધ, એસ. એન. ડી. ટી. યુનિવર્સિટી, મુંબઈ : 2009
- પંકજ સુવેરા, વૃધ્ધાશ્રમમાં રહેતા વૃધ્ધવ્યક્તિઓના માનસિક સ્વાસ્થ્યનો અભ્યાસ. અપ્રકાશિત મહાશોધ નિબંધ, એસ.પી. યુનિવર્સિટી, વલ્લભ વિદ્યાનગર, 2008
- અલ્પા આર. પટેલ, અમદાવાદ શહેરની માધ્યમિક શાળાઓમાં અભ્યાસ કરતા વિદ્યાર્થીઓના માનસિક સ્વાસ્થ્યનો અભ્યાસ. અપ્રકાશિત લઘુ શોધ નિબંધ, ગુજરાત યુનિવર્સિટી, અમદાવાદ : 2008





विद्या परमं बलम्



**IRed**

संशोधन \* शिक्षण \* विकास



**AYUDH PUBLICATION**

**Publication of Books with ISBN**

**AYUDH JOURNAL (2321 : 2160)**

**SURABHI JOURNAL (2349 : 4557)**

**Contacts: 9428343635, 9106942482**

**Email: ayudh2020@gmail.com**

